रिसते-रिश्ते

कहानीकार
प्रेमचन्द अग्रवाल

सोनाली पब्लीकेशन्स, जयपुर-6

मेरे माता-पिता
स्व श्री विष्णुदत्त व स्व श्रीमती सत्यवती

श्रीमद्भगवद्गीता से

ज्ञेय स नित्यसन्यासी यो न द्वेष्टि न काङक्षति।
निर्द्वन्द्वो हि महाबाहो सुख बन्धात्प्रमुच्यते। अध्याय 5 (3)॥

हे अर्जुन। जो पुरुष न किसी से द्वेष करता है और न किसी की आकाक्षा करता है, वह कर्मयोगी सदा सन्यासी ही समझने योग्य है, क्योकि राग द्वेषादि द्वन्द्वा से रहित पुरुष ससार बन्धन से मुक्त हो जाता है।

न प्रहृष्येत्प्रिय प्राप्य नोद्विजेत्प्राप्य चाप्रियम्।
स्थिर बुद्धिरसमूढो ब्रह्मविद् ब्रह्मनि स्थित ॥ अध्याय 5 (20)॥

जो पुरुष प्रिय को प्राप्त होकर हर्षित न हो और अप्रिय को प्राप्त होकर उद्विग्न न हो, वह स्थिर बुद्धि, सशय रहित, ब्रह्मवेत्ता पुरुष सच्चिदानन्दन परब्रह्म परमात्मा में एकीभाव से नित्य स्थित है।

दो शब्द

मैं न तो कोई कहानीकार हूँ, न लेखक। मैंने कभी काई कहानी नहीं लिखी। जनवरी, 2000 मे एक तीये की बैठक म एक मित्र के साथ में गया था। वहाँ पर हम दोना की आपस म कुछ वाते हुई। वापिस घर लौटा तो मन मे भारीपन था। मेरे अन्दर से कुछ आवाजे आई और में झट लिखने बैठ गया और मेरी प्रथम कहानी 'तीये की बैठक' लिखी गई। उसी मित्र ने मुझे एक अन्य मित्र की रामकहानी कुछ दिन पहले सुनाई थी। अपनी कल्पना म उसे भी पिरो लिखने बैठ गया और कहानी 'रिसते रिश्ते' भी क्रमबद्ध प्रवाह मे तभी लिखी गई जैसे सरिता बहती हुई अपना रास्ता बना लेती है।

पिछले 6 वर्षे मे कुछ और कहानियाँ इस प्रकार लिखी गई। अन्दर से आवाज आने पर जैसे मैं कविता लिपीबद्ध करने बैठ जाता हूँ वैसे ही कहानी का प्लॉट भी जब बार-बार मेरे मन पटल पर आता है तो मैं कहानी लिखने बैठ जाता हूँ। परन्तु जब भी मैं अपने आप प्रयत्न करता हूँ कि और कहानी लिखूँ तब प्रयत्न के बावजूद कहानी नहीं लिख पाया। मेरा मन पटल जब भी उद्वेलित हुआ और उसने मुझे लिखने के लिए झकझोरा तभी कहानी लिखी जा सकी।

अधिकतर कहानियाँ रिश्तो पर आधारित हैं—रिसते उलझते सुलझते रिश्तो पर। रिश्ते तो सासारिक होते हैं उन्हीं मे कड़ुवाहट भी कभी-कभी भर जाती है। पर असली रिश्ते तो मन के होते हैं जो गंगाजल की तरह पवित्र रहते हैं और कभी मटमले या खराब नहीं होते। मन से मन मिलाकर मोत्ता के मनियो की तरह पिरोकर ही असली रिश्ते बनते हैं और यदि गाँठ पर गाँठ बाँध ले तो क्या हाल होगा, यह सभी जानते हैं। मेरे अन्दर से आवाज उठी और जैसे विभिन्न रिश्तों की कल्पना की उसने इन कहानियो म वह आपके समक्ष प्रस्तुत है। ये कहानियाँ कैसी बन पाई या समाज को रिश्ते बनाने या सुधारने मे क्या योगदान दे सकती है यह ता पाठक जाने। मैं होता हूँ कौन, यह सब उस असीम का है जो सबको हिला रहा अपनी डोर से और मुझको भी।

मेरी पत्नी डॉ० सुषमा अग्रवाल, जो सत्य साईं महिला महाविद्यालय जयपुर मे हिन्दी विभाग की विभागाध्यक्ष रही है व मेरे परम मित्र डा० हरिचरण शर्मा, भू पू रीडर,

हिन्दी विभाग राजस्थान विश्वविद्यालय ने कुछ कहानियाँ पढकर मुझे प्रोत्साहित किया और मैं अपने अन्दर स निकली आवाज का कहानी का रूप दे सका। वे दानो मरे अपने हैं, उनक लिये मैं क्या कहूँ।

आज दिनाक 13 जनवरी को मरे पूज्य पिता की पुण्य तिथि है जो 34 वर्ष पूर्व ब्रह्मलीन हुये थे। उनकी याद आते ही मेरे नयन नम हा गय उन्हे शत-शत प्रणाम। वे बडे भले व दयालु इन्सान थे और रिश्तेदारा का ही नहीं बल्कि सभी जरूरतमन्दा की सहायता करने क लिये सदैव तत्पर रहते थे।

अन्त म मैं प्रकाशक महादय का आभारी हूँ जिनके सहयोग से ये कहानियाँ आपके समक्ष आ सकी।

13 जनवरी 2007 — प्रेमचन्द अग्रवाल

अनुक्रम

1. रिसते-रिश्ते

'पापाजी आपके लिए चाय वना लाऊँ,' मधु ने बडे ही विनम्र भाव से कहा। कैलाश यह वाक्य सुनकर धरा सा धरा ही रह गया। इतने वर्षों के वाद पहली बार बहू ने उसे चाय का आग्रह किया था, वरना तो उसे स्वय अपने कमरे से बाहर आकर चाय के लिए कहना पडता था। उसका मन भर आया। परन्तु तत्काल वह पुन अपनी स्वाभाविक मुद्रा म आ गया। उसने सोचा जरूर कोई बात है। पर फिर मन मे आया कि अपनी ही तो बहू है, खुद चाय पी रही है मेज पर बैठकर सो आग्रह कर दिया।

कैलाश अपने कमरे से ही डाइनिग रूम म निकल कर आया था। उस आज रात को नींद काफी कम आई थी। उसकी पत्नी भी तो यहाँ नहीं है। दूसरे लडके विलास के यहाँ पर कई महीने से है और वह अकेला यहाँ शहर मे बडे लडके परमेश के पास रह रहा है। यहीं से तो वह दो वर्ष पूर्व सरकारी सेवा से सेवा निवृत्त हुआ था।

वह सोच में डूबा था। मधु चाय बनाकर ले आई और चाय मेज पर रखती हुई बोली 'पापाजी क्या आप आज घूमने नहीं गए आपकी तबियत तो ठीक है ?' कैलाश ने कहा 'हाँ, ठीक है, पर नींद नहीं आई सो अटपटा लग रहा था और मैं घूमने नहीं जा सका।' मधु ने कहा 'तो पापाजी आप चलो कमरे म ही बैठकर चाय पी लो।' वह बिस्कुट भी साथ मे लाई थी। चाय और बिस्कुट उठाकर वह कैलाश को अपने साथ कमरे मे ले गई। कैलाश आराम से बिस्तर में वैठ चाय पीने लगा। बिस्कुट भी हाथ म ले खा रहा था। तभी बहू ने कहा पापाजी बच्चे लोग शोर करते रहते हैं देर रात तक फिर आपको नींद कसे आती। कैलाश ने कहा 'नहीं, कोई ऐसी बात नहीं, पर हाँ कभी तो ऐसा हो जाता है।'

परमेश-मधु के तीन बच्चे हैं। हरीश नवमी मे आ गया उसका जुडवाँ भाई गिरीश भी नवमी मे है और बहन सन्तोष सातवीं कक्षा मे है। तीनो शार करते हें। हरीश व गिरीश तो पढते-पढते आपस मे झगडा भी कर बैठते हें। परमेश की इच्छा उन्हे इजीनियरिंग व मेडीकल में भेजने की है। पर उनकी माँ मधु उनमे से कम से कम एक को डिप्टी कलेक्टर बनाना चाहती है। वह खुद तो गरीब घर से है पर उसने परमेश के पिता कैलाश के तहसीलदार होते 'ठाट-बाट' देखे हैं।

कैलाश चाय पी ही रहा था कि उसका लडका परमेश भी उसके कमरे मे आ गया। यह भी पूछने लगा कि 'पापा आपकी तबियत कैसी है ?' कैलाश ने अपना वही जवाब

दिया कि 'बेटे ठीक हे पर एस ही नींद नहीं आई।' परमश न कहा 'पापा किसी डॉक्टर का दिखाना हा तो बुला लाऊँ।' कैलाश बोला 'नहीं मन ठीक है।' परमश और मधु वहाँ से चले गए। जात समय मधु न कहा 'पापाजी नाश्ता भी मज पर ही कर लेना सबके बाच मे आपको अच्छा लगगा आप नहा धाकर यहीं आ जाइएगा।' कैलाश न स्वीकारोक्ति म 'ठीक हे' कहकर अपना सिर हिला दिया। वह मन हा मन फिर सोचने लगा कि आज क्या बात है। राज ता नाश्ता मुझे कमरे म ही भिजवा दिया जाता था आर आज मुझे सबके साथ नाश्ते के लिए बुलाया जा रहा है। वह फिर नहाने धोने म राज का तरह लग गया।

नहा धोकर कैलाश डाइनिग टेबल पर पहुँचा। सब उसका इन्तजार कर रह थे। बच्चे जोर से चिल्लाने लगे 'आज तो दादाजी भी आ गए, आज ता दादाजा भी आ गए सबके साथ नाश्ता करने।' सब नाश्ता करने लगे। हलवा बना था गर्म जलेबी भी थी आलू की टिकिया और टोस्ट व मक्खन एव गरम दूध। सबन नाश्ता बड शौक से किया। पर कैलाश मन ही मन फिर सोचने लगा। उसे रोज तो टोस्ट व दूध और कभी-कभी मक्खन भी मिल जाता था आज क्या बात है। पर फिर साचा आज डाइनिग टेबल पर नाश्ता कर रहा हूँ सो बहू ने सोचकर जलेबी मँगाई होगी व हलवा बना दिया होगा। बच्चे भी कहने लग 'दादाजी अब आप नाश्ता यहीं किया कर।' दादाजी ने कहा 'ठाक है, तुम्हार साथ करूँगा पर अगर घूमने म देर हुई तब फिर कमरे म ही कर लूँगा क्याकि मुझे ही तो तब नाश्ता करना होगा।' नाश्ता करते समय मेज पर बात होती रही इधर-उधर की।

नाश्ते के बाद भी कैलाश, परमेश व मधु मेज पर बैठे ही बात करते रहे। बच्चे स्कूल चले गए। तभी मधु बोली, 'पापाजी, आजकल बच्चो का कितनी पढाई करनी पडती है, बडा कम्पीटीशन है। ये तीनो बच्चे आपस मे झगडते हैं, हमारे बैडरूम मे या ड्राईंग रूम मे बैठकर हरीश व गिरीश को पढाई करनी पडती है उन्हे अगले साल बोर्ड की परीक्षा जो देनी है। सन्तोष अपनी सहेली के साथ अपने कमरे मे पढती है और वहीं गुड्डे-गुडियाँ से खेलती रहती हे।' 'बच्चों के लिए और ता कमरा हे नहीं, पीछे के गैरेज मे सडक मे चलते लोगो की, वाहनो की आवाज आती रहती है सो वहाँ पढाई हो नहीं सकती।' मधु ने आगे कहा 'पापाजी अगर आप पीछे वाले गैरिज वाले कमरे मे शिफ्ट कर लेवे तो बच्चा को आप वाला कमरा मिल जाएगा और फिर इनकी पढाई अच्छी प्रकार हो सकेगी ओर ये कम्पीटाशन म आ सकेगे।' कैलाश कुछ जवाब देता इससे पहले ही परमश बोला 'यह तो बडा अच्छा सुझाव है, इससे पापा को भी बच्चो की चिल-पिल से निजाद मिल जावेगी और नींद डिस्टर्ब नहीं होगी, कल रात भी तो बच्चा ने तग किया सो इन्हे नींद नहीं आई।' कैलाश बोला 'बेटे परमेश ऐसी बात नही हे, नींद तो ऐसे ही नहीं आई बच्च तो मुझ खुशी ही देते हैं, पर यदि इनकी पढाई के लिए कमरे की जरूरत

है तो ठीक है, वैसे पीछे गैरेज ही है न कि ऐसा कमरा और उसमे भी सडक की चलने वालो की आवाजे तो आती हैं।' तभी मधु बोली 'पर पापाजी रात को तो सडक सूनी रहती है और आप अकेले ही तो कमरे मे सोते हैं सो गैरेज तो बडा है, उसमे दो चारपाईयाँ आ सकती हैं।' बेचारा कैलाश क्या बोलता, मन मारकर रह गया। बोला 'ठीक है, बच्चा की पढाई तो मैं भी चाहता हूँ जिससे वे आगे बढे और अपना नाम कमाएँ।' कैलाश का इतना कहना था कि झटपट उनका सामान गैरेज मे पहुँचा दिया गया और उसके कमरे मे बच्चो ने शिफ्ट कर लिया।

× × ×

आठ महीने पहले की ही तो बात है उससे पहले कैलाश अपने दोस्तो के साथ ड्राईंग रूम मे ही बातचीत किया करता था। कभी-कभी घूमकर लौटते समय कुछ मित्र उसके साथ आ जाते थे और वे कुछ देर ड्राईंगरूम मे बैठ जाते थे। कैलाश ने ही तो कितने शौक से यह मकान रिटायरमैण्ट से पहले बना लिया था। रिटायरमेण्ट के समय मिला पैसा काफी सारा परमेश के बिजनेस मे लगा दिया था। उसी से तो परमेश का बिजनेस बढा। उससे कई क्लाइन्ट्स घर पर मिलने आने लगे तो परमेश ने कहा 'पापा आपके दोस्तो को आप अपने कमर मे ही बैठा लिया कर तो मुझे बिजनस वालो से ड्राईग रूप मे मिलने म सुविधा हो जाए और बिजनस आगे बढ सके।' भला अपने लडके की प्रोग्रेस म कौन रुकावट डालना चाहता हे। कैलाश क्या करता, उसने झट हाँ कर दी थी और कैलाश का ड्राईंगरूम मे बैठना समाप्त हो गया। परमेश ने यह जरूर किया कि कैलाश के लिए एक अलग छोटा टी वी लाकर दे दिया जिससे वह अपने कमरे मे टी वी देख सके और उस ड्राईंगरूम म रखे बडे टी वी को देखने न आना पडे। पर इससे तो कैलाश का सम्पर्क घर से कटता गया था।

× × ×

और आज कैलाश को अपने कमरे से भी निकालकर पीछे गैरेज म ढकेल दिया था। वह रात भर गैरेज-जिसे उसके बेटे-बहू कमरा कह रहे थे--मे करवटे बदल रहा था। उसे अपनी पत्नी लीला की याद बहुत सता रही थी। वह यह भी सोच रहा था कि पता नहीं वह किस हाल मे होगी।

कैलाश को यह भाव बार-बार सता रहा था कि उसने ऐसा क्या किया जो उसके बच्च ऐसा व्यवहार कर रहे हैं। उसने तो तहसीलदार होत हुए भी ऊपरी कमाई कर अपने दोना बच्चो को लिखाया पढाया। बस परमेश तो बी ए तक ही पढ पाया, डॉक्टरी या इजीनियरिंग के कम्पीटीशन में तो आने का उसका प्रश्न ही नहीं था। कई साला मे ता उसने बी ए पास किया था। उसे कैलाश ने दुपहियो की डीलरशीप दिला बिजनस में लगा दिया था। छोटा बेटा विलास भी पढाई मे अच्छा नहीं था पर इन्टर साइन्स पास कर ली थी। कम्पीटीशन मे तो नहीं आया पर डोनेशन देकर प्राइवेट कॉलेज मे डॉक्टरी म

दाखिला करा दिया था। वहाँ उसे पास करने म 2-3 वप ज्यादा लगे पर एम बी बी एस की डिग्री तो मिल गई थी। उसे सरकारी या प्राइवेट अम्पताल म नौकरी नहीं मिली तो कैलाश ने पास के जिले के गाँव में क्लिनिक खुलवा दी थी और गाँव वाला स वह ठीक ही कमाई कर लता था। विलास ही एक साल पहल अपनी माँ को अपने साथ ले गया था। कैलाश मना करता रहा था पर उसकी माँ उसके साथ चली गई थी। करती भी क्या ? लीला को पता था कि कोई भी लडका (व बहू) उन्हे अपने साथ नहीं रखना चाहत थे। परमेश व विलास दोना न आपस म तय कर लिया था कि माता-पिता म से एक का एक बेटा व दूसरे को दूसरा बटा रखगा। दाना का यह भी डर सताता था कि कहीं माता-पिता एक साथ रहेगे तो जिसके साथ रह रहे हागे उस बेटे व परिवार पर कहीं हावा न हो जावे। केलाश को इस बात का पता नहीं था। वह तो केवल यही सोचता रहा कि पता नहीं लीला किस हाल मे होगी। सोचते-सोचते ही उसकी आँख लग गई और नींद आ गई। सुवह उठ घूमने गया और यह क्रम चलता रहा।

× × ×

दो वर्ष पूर्व जब कैलाश रिटायर हुआ तब उसे रिटायरमेण्ट पर अच्छी खासी रकम मिली थी। सारी रकम को उसने अपने दोना बटा को जमाने म लगा दी और खाली हाथ रह गया। मकान जो पहिले बना लिया था उसे भी परमेश ने बिजनस के बहाने अपने नाम करा लिया था। अब तो केवल पेशन ही कैलाश के जीने का सहारा था। पर वह थोडी सी ही अपने खर्चे के लिए निकालता था। बाकी खर्चा तो परमेश ही उठाता था और उसकी पत्नी लीला तो दूसरे बेटे के सहारे रह ही रही थी।

× × ×

कुछ दिनो मे कैलाश गम मे डूबा हुआ बहुत बीमार हो गया। उसे साँस रुक-रुककर आने लगा। उसके दोस्त डॉक्टर ने आकर उसे देख दवाई दी। शाम को परमश बिजनस से घर लोटा तो बोला 'पापा आप यह क्या करते हैं, मुझे फोन कर देते मैं डॉक्टर को बुला लाता।' कैलाश क्या कहता, बहू मधु को ता उसकी बीमारी का पता था। परमेश तो उस दिन सुबह 9 बजे ही अपने काम से चला गया था। बच्चो ने स्कूल जाते समय जब देखा कि दादा खाँस रहे हैं तो उधर घुस गेरेज मे पूछा आर आकर मम्मी से कहा कि दादा तो बहुत बीमार हैं सीने म खूब दर्द बता रहे हैं व साँस मुश्किल से आ रही है। मधु ने उन्हे कहा 'ठीक है तुम स्कूल जाओ।' तभी कैलाश का दोस्त डॉक्टर वहीं आ गया था। कैलाश आज घूमने नहीं गया था सो डॉक्टर उधर होकर अपने घर जा रहा था। वह फिर बाद म अपना बैग ल आया और कैलाश को देख दवाई दे गया।

शाम को कैलाश ने कुछ नहीं खाया। गैराज-जो उसका कमरा था-मे अकेला लेटा शून्य मे ताक रहा था। परमेश सोने से पहले उसके पास आकर पूछने गया कि कुछ उसे चाहिए तो नहीं। कैलाश ने बताया कि उसे नींद नहीं आ रही तो परमेश ने उसे नींद की

गोली लाकर दे दी और वह अपने कमरे म चला गया। उसने मधु को यह बात बताई तो उसने कहा अच्छा है पापाजी को नींद आ जायेगी, नहीं तो रात को तग करते रहते। कैलाश भला उसे क्या तग करता। वह तो किस्मत का तगी है। ऊपर का पैसा तो यही रग लाता। तभी तो उसकी सन्तान ऐसी निकली। जेसी करनी वैसी भरनी।

रात को सोते-सोते ही केलाश खुदा का प्यारा हो गया। सुबह जाते समय परमेश जब उधर से गुजर रहा था तो गैरेज मे घुसते ही अवाक् रह गया। देखा उसके पापा निढाल पडे हुए हैं। झट फोन कर डॉक्टर को बुलाया। वह भी क्या करता। कैलाश के तो प्राण पखेरू उड चुके थे। घर मे हाहाकार मच गया। दोपहर होते-होते कैलाश की पत्नी लीला व विलास और उसका पूरा परिवार भी आ गया। नजदीकी रिश्तेदार भी आ गए। कैलाश का शाम तक दाह सस्कार कर दिया गया। सब कह रहे थे कि उसने कितनी अच्छी तरह घर को सभाला ओर बच्चा ने खूब तरक्की की। वे यह भी कह रहे थे कि बच्चे कितने भले हैं, बहुएँ भी कितनी अच्छी हैं कि कैलाश ओर लीला को कैसे अच्छी तरह रखा।

श्मशान का वैराग्य कुछ दिनो मे समाप्त हो गया। तीये की बैठक, दसवाँ व तेरहवीं हो गई। रिश्तेदार अपने-अपने घर चले गए। कैलाश की विधवा पत्नी लीला अपने को सभाल नहीं सकी। वह वहीं रहना चाहती थी परमेश के पास पर विलास ने कहा 'माँ अभी मेरे साथ चलो, फिर एक माह बाद यहाँ आ जाना।' सा वह विलास के साथ चली गई और एक माह बाद फिर परमेश के पास आ गई। परमेश के साथ रहते एक माह ही हुआ था कि विलास उसे फिर लेने आ गया। लीला अब नहीं जाना चाहती थी। पर उसे जाना पडा। दोनो बेटो ने फैसला जो कर रखा था कि वे एक-एक माह उसे अपने साथ रखगे, पता नहीं वह भी पिता (कैलाश) की तरह कब ईश्वर को प्यारी हो जावे। लीला ने भी सब्र किया कि बच्चे रख तो रहे हें। यही नियति है।

2. तीये की बैठक

कल ही की तो बात है। मैं अपने मित्र श्री कल्ला के साथ एक बैठक मे गया था—तीये की बैठक मे। तीये की बैठक का निश्चित समय होता है—साधारणतया एक घण्टे का शाम को 4 से 5 या 5 से 6 या जैसी भी बैठक करने वाला की सुविधा हो। नहीं, कैसे ज्यादा से ज्यादा लोग इसमे इकट्ठे हो सकें इसको ध्यान मे रखते हुए बैठक का समय रखा जाता है। (सेवानिवृत्त) अधिकारी या कर्मचारी हो तो शाम के 5 बजे दफ्तर समाप्ति का समय। बैठक मे ज्यादा लोगो को क्यो इकट्ठा करना चाहते हैं ? कोई राजनीतिक सभा तो ह नहीं। तीय की बैठक ता किसा के मर जाने पर मृत्यु से तीसरे दिन होती है। यह मृतक के प्रति दु ख प्रकट करने के लिए रखी जाती है। वैसे यह सामाजिक महत्त्व की बन गई है। अधिक लोग आते हैं तो यह समझा जाता है कि समाज मे इनका रुतबा है। पर इनका किसका ? मृतक का या मृतक के सक्सैसर का जिसके घर बैठक हो रही है। मरने वाला तो मर गया। बैठक मे आने वाले तो अधिकतर बैठक समाप्ति के चन्द मिनट पहले ही आते हैं। केवल समाजिक निर्वाह के लिए। चाहे वे मृतक से मिले ही नहीं हों या बहुत सालो पहिले मिले हों। पर मृतक का बेटा तो जिन्दा है उसे तो जानते हैं चाहे उससे भी काफी अर्से से नहीं मिले हों।

हम जिस बैठक म गए वह सक्सेना की माँ प्रेमी के मरने पर उसकी तीये की बैठक थी। हम प्रेमीजी से कभी नहीं मिले थे। हम तो केवल सक्सेना जी को जानते थे और बैठक समाप्ति से दस मिनट पहले पहुँच गए थे। उसके बाद तो बहुत लोग आए थे और विशेष रूप से लगाया गया शामियाना खचाखच भर गया था। करीब पाँच सो लोग होगे पुरुप-स्त्री मिलाकर। बाहर तो शामियाने मे पुरुप ही बैठे थे स्त्रियाँ तो अन्दर पास ही चौक म बैठी थीं। बैठक समाप्ति पर हम सब खडे हो गए। उसमे कुछ मिनटो पूर्व तुलसा जी की पत्तियाँ सबको बाँट दी गई थी और पत्ती के टुकडे को अपने मुँह में चबा चुके थे। मृतका के तीना बेटे और नजदीकी रिश्तेदार बाहर सडक के पास आकर खडे हो गए थे। सब लाग कतार से बारा-बारी से उन्हे नमस्ते करते हुए विदा ले रहे थे। अपना चेहरा जरूर मृतका के लडकों को दिखा रहे थे ताकि सनद रहे कि वे तीये की बैठक में शामिल हुए थे।

× × ×

बैठक मे बैठ हुए श्री कल्ला ने मुझसे पूछा था कि मृतका का क्या नाम था व कितने वर्ष की थी। मैंने अन्दाजन बता दिया था कि सक्सेना जी की उम्र को देखते हुए वे सत्तर वर्ष की हागी ओर उन्हीं की माँ थी (नाम का ता मुझे भी पता नहीं था)। उन्हाने फिर पूछा कि क्या बीमार थी, कैसे मरीं ? मैंने कहा कि कई वर्षों से बीमार थी ओर वे मरीं क्या, जी गई—मरने पर तो उनका जीवन सुधर गया। वे हक्का-बक्का होकर बोले कि यह क्या मरने पर भी जीवन सुधरता हे। मैं शान्त रहा मेरा मन मुझे तीन वर्ष पीछे ले गया जब में अपनी पत्नी सहित इनके घर गया था।

× × ×

मृतका क पति नामी डॉक्टर थे। खूब अच्छी कमाई थी। उनके तीन लडके व एक लडकी थी। लडकी की दूर शहर मे बडे भले परिवार म शादी हुई थी, पति बडा अफसर हे। तीना लडके इसी शहर म रहते हें, एक इजीनियर, एक सरकारी अफसर व एक डॉक्टर है। डॉक्टर मझला है ओर उसे ही हम जानते थे। श्री कल्ला भी उसे ही जानते थे। वह मिडिल ईस्ट म कई वर्ष रह कर तीन वर्ष पहले लौटा था। श्री कल्ला तो अभी एक वर्ष पूर्व ही उन्हे जानने लगे थे जब वह उनके पडौस म किराय के मकान मे आकर कुछ दिन रहा और वह एक-दो बार उससे मिले। हम तो उनको मिडिल ईस्ट जाने से पूर्व से जानते थे जब वे हमारे एरिया म पास मे रहते थे। बस इतना सा हमारा सम्बन्ध था।

वे मिडिल ईस्ट से लौटे थे। उनका फोन भी आया था कि हम वापिस आ गए हैं और अभी पैतृक मकान सेठी कॉलोनी मे रह रहे हैं तो मैं पत्नी सहित उनसे मिलने चला गया था। सक्सेना जी उनकी डॉक्टर पत्नी व दाना बच्चे वहीं थे। सक्सेना जी के पिता का कई वर्षो पहले जब वे मिडिल ईस्ट मे थे देहान्त हो गया था। उस समय व अकेले चन्द दिनो क लिए आए थे। सक्सेना जी के पिता ने बडा मकान बनाया था ओर अपने मरने से पहले अपने तीनो लडको के नाम बँटवारा कर गए थे। सरकारी अफसर बेटे न तो हिस्सा आने पर उसे बेच दिया था। वह सरकारी आवास म रह रहा था। इजीनियर मकानो का ठेके लेता है। वह इसी मकान म शुरू स सपरिवार रहता है ओर वहीं अपनी माँ को रख रहा था या यो कहिए कि माँ अपने पति का निवास छोडकर नहीं जाना चाहती थी। सक्सेना जी के पिता ने अपनी पत्नी के नाम भी थोडा सा हिस्सा रख दिया था ओर वही सक्सेना जी की माँ के पास बचा था। समाज मे कहने को तो वह अपने बेटे के पास रह रही थी पर जब तक हाथ पाँव चले उसे खुद ही अपना खाना बनाकर खाना पडता था। कैसी विडम्बना है ? बच्चा को बडा करते हुए स्वप्न ५खत हुए उसने कभी यह नहीं सोचा होगा।

हम सक्सेना जी ने कहा कि मिडिल ईस्ट से वापिस आए तो एक बार यहीं पैतृक मकान पर रुक गए, अब हम किराये के लिए और अच्छा मकान बताइए। हमने मकान के

साइज लोकेलिटी आदि क लिए पूछा ता बीच में ही झट उनकी पत्नी बाल पडी कि बस केवल हम चार ही रहगे इनकी माँ तो बीमार हैं और यहीं पैतृक मकान म अपने हिस्से मे रहेगी। हम फिर और बात करत रह। मरी पत्नी इसी बीच सक्सेना जी की माँ से मिलने अन्दर चली गई। वह पहले एक-आध बार मिल चुकी थी। फिर हम घर लौटे आए।

× × ×

घर लौटते समय पत्नी से मैंने सक्सेना जी की माँ क बारे म पूछा था ता हक्का-बक्का रह गया। मुझे पता लगा कि वह तो करीब एक वर्ष मे बीमार है और अपने कमरे म ही पडी रहती है कुछ ठीक हाने पर बरामदे म आकर बैठ जाती है। कभी-कभी तो मलमूत्र भी बिस्तर पर निकल जाता है। नर्स दिन म एक बार आती हैं और वही उनको नहलाती है। बाकी दिन तो कमरा सडता रहता है। लडके की बहू खाना रख जाती है। सक्सेना जी के पिता के मरने के बाद से ही उनकी दुगति होन लगी थी, वे अकेली जो रह गई थी। लडको ने पूछना बन्द कर दिया था। समाज के डर से लडकी के साथ जाना नहीं चाहती थी हालाकि लडकी कई बार आकर आग्रह कर चुकी थी। लडकी जब आती तो उस समय बेटे बहू भी माँ को पूछते थे पर उसके जाने के बाद फिर वही हाल। लडकी का पति अफसर जो ठहरा।

× × ×

उन्हीं की तीय की बैठक थी। तीन साल क सडने क बाद और मरने के तीन दिन बाद। हम ऐसी बैठक मे गए लोकलाज के लिए जिसमे मृतका के बच्चो ने तो उसके मरने से तीन साल पहले ही तीया कर दिया था। जो अपनी माँ को नहीं रख सके, उसकी रत्ती भर भी सेवा नहीं कर सके वह समाज म अपनी प्रतिष्ठा बनाए रखने या बनाने के लिए बैठक कर रहा है ओर हम उसमे चन्द मिनटा के लिए शामिल हो रहे हैं। यह दिखावा नहीं तो क्या है ? हमारा मन तो मृतका के साथ था कि उसने कैसे यह तीन वर्ष का नरक भोगा। उसके मरने पर हमे दु ख क्या मन को सन्तोष हुआ कि उसे इस नरकसे छुटकारा मिला। हम बैठक म जरूर गए ओर आते हुए सक्सना जी से भा मिल पर मन म अभी भी टीस है कि देखो मनुष्य के अन्दर और बाहर मे कितना अन्तर है। उसके ऊपर केसा मास्क चढा है जो सामाजिक दिखावे के लिए सभी से क्या-क्या करवाता है। जो अपनी माँ के जीवन को नरक बना दे तो माँ की मोत पर क्या तीये की बैठक और फिर हम क्यो उसम शरीक होगे। पर अब क्या ? हम तो इस बैठक मे शामिल हो चुके थे।

□□□

३. धधकते आँसू

'मुझे मत मारो, मे मर जाऊँगी', अस्सी वर्ष की कल्पना रोती हुई अपने छोटे भाई सूर्य और दूसरे पुत्र चन्द्रमा से कह रही थी। कोई कल्पना को मार ही नहीं रहा था। तो फिर क्या यह कल्पना की कल्पना ही थी। सूर्य और चन्द्रमा समझ ही नहीं पाये। कल्पना अपनी बेटी सुन्दरी के घर नहीं जाना चाहती थी। वह इतनी वृद्धा ह। चलने-फिरने मे भी उसे कठिनाई होती है। अब पता नहीं कब उसे बुलावा आ जावे और वह इस ससार को अलविदा कह दे। वह भाई के घर रहती है तो भी समाज भला क्या-क्या नहीं कहता। रिश्तेदार तो कहते ही हैं, पति के मित्र और पडौसी भी जीने नहीं देते। अगर वह बेटी के घर मर गई तो पता नहीं क्या हो जावेगा। वह बेटी के घर इस डर के कारण नहीं जाना चाहती। वह अपने लडके के घर ही मरना चाहती है। पर करे क्या ?

कल्पना का भरा पूरा परिवार है। पति जिन्दा थे तो सब उसे पूछा करते थे। पति मुम्बई मे अच्छे सरकारी ओहदे से 25 वर्ष पहले रिटायर हुए थे। पहले सरकारी मकान था, फिर किराये के मकान मे रहने लगे थे। विकास प्राधिकरण मे भी मकान बुक कराया था पर समय पर नहीं आया तो रिटायरमैण्ट पर अच्छी कॉलोनी म किराय पर ले लिया।

कल्पना के चार लडके व एक लडकी है। सबकी अच्छे घराने में शादी हो गई और अपने-अपने में मस्त हैं। जमाना ही ऐसा है। कल्पना ने तो पुराना जमाना देखा है। मध्यप्रदेश के गाँव के रहने वाले हैं। कल्पना के पति अपन पिता की अकेली सन्तान थ। पर उनके चाचा के बच्चे ही उनके भाई-बहिन थे और सगा से भी अधिक सगे। कल्पना के बच्चो को वर्षों तक पता ही नहीं चला कि उनके चाचा व भुआएँ सगी नहीं हैं बल्कि उनके पिता की प्रथम 'कजिन' हैं। आज के जमाने मे तो सगे भी सगे नहीं होते हैं।

कल्पना के तीन लडके विदेश म हैं और सबसे बडा लडका राम मुम्बई म ही बडी फर्म म नौकरी करता हे। दूसरा लडका चन्द्रमा अमरीका म बडा डॉक्टर है, खूब कमाता है। दूसरे दानो लडके भी यूरोप म बडा बिजनस करते हैं। सबकी भारतीय बहुएँ हैं। कल्पना के पति ने ही विज्ञापन दे तलाश कर बच्चा की शादी की थी। कल्पना की लडकी सुन्दरी भी एम ए पढी है उसकी शादी भी एक इजीनियर से की थी जो दिल्ली में बडा अफसर है। सुन्दरी भी अच्छी फर्म मे जौब करती है।

जब कल्पना के पति जिन्दा थे आर नौकरी मे थे तभी राम दूसरी जगह से मुम्बइ आ गया था। राम और उसकी पत्नी सीता कल्पना के साथ रहते थे। पति के रिटायरमैण्ट पर भी राम ओर सीता कल्पना व उसके पति के साथ किराये के मकान मे रहने लगे। राम के दो लडकियाँ हैं। वे दादा-दादी को प्यारी लगती थी ओर वे भी साथ-साथ बडी हा गई। कल्पना के पति का विकास प्राधिकरण मे छोटा सा फ्लैट भी आ गया पर सब वहाँ जा नहीं सकते थे सो उन्होने उसे किराये पर दे दिया ओर खुद किराये के मकान म ही सब साथ-साथ रहत रह।

कल्पना के पति की बीस वर्ष पहले अचानक मोत हो गई। उससे पहले कल्पना व उसका पति कई बार अमरीका अपने बच्चा के पास जा आए थे। लडकी सुन्दरी के घर भी जा आए थे। सबको अपने-अपने घर मे देखकर कल्पना बडी खुश होती थी व उसके पति मुस्करा भर दिया करते थे। वे बडे अनुभवी थे। जमाना देखा था। कल्पना बडा सीधी थी। वह बडी किफायत से घर चलाती थी। पुराने जमाने की दसवीं पास थी और अग्रेजी भी अच्छी तरह जानती थी। कल्पना ने अपनी ससुराल म सबको खूब निभाया। 'कजिन' भाई-बहिनो को सगे से भी अधिक स्नेह दिया। आज भी वे सब कल्पना को भाभी-भाभी कहकर सिर पर चढाए रहते हैं। उनके बच्चे भी कल्पना को बडा आदर देते हैं। मुम्बई आते हैं तो जरूर मिलकर जाते हैं। 'कजन' भाई-बहिन भी कल्पना को अपने घर पर ले जाना चाहते हैं।

कल्पना का तो उसके पति के मरने पर ससार ही उजड गया। दस वर्ष तक तो सब ठीक रहा। उसका बडा बेटा राम व उसका परिवार साथ मुम्बई मे रहते थे। शुरू मे तो राम को आराम ही था। बच्चो की देखभाल हो जाती थी। कल्पना की पुरानी नौकरानी कमला पूरे घर की देखभाल करती थी खाना भी बनाती थी। कल्पना का स्वास्थ्य अच्छा था सो वह अपन लडका क पास अमरीका व यूरोप भी कई वर्ष रह गई। लडकी क घर पर भी दिल्ली म कइ बार गई। उन सबसे पहले भा और आज भी उसे बडा स्नह मिलता है। अमरीका म रहता हुआ भी दूसरा लडका चन्द्रमा पूरा हिन्दुस्तानी है ओर उसकी पत्नी तो अम्मा का सबसे अधिक ख्याल रखती है। कल्पना उससे बहुत खुश है। चन्द्रमा कल्पना को अमरीका ले जाने क लिये भी आया है पर वह वहाँ नहीं जाना चाहती। वह विदेश म नहीं मरना चाहती।

राम के बच्चे बड हो गए ओर उसकी दोना लडकिया की अच्छे घराने म शादी हो गई। राम की पत्नी सीता को इसके बाद कल्पना फूटी आँखो भी नहीं सुहाती थी। वह राज उठते ही उससे लडाई करने लग जाती थी। राम भी धीरे-धारे उसके साथ हो गया और अपनी माँ को खरी-खोटी सुनाने म नहीं हिचका। फिर भा कल्पना सहती रही। राम को पेशाब की बीमारी हो गई। इस बहाने राम ने कल्पना को उसके भाई सूय क यहाँ भिजवा दिया। सूय का छोटा सा परिवार है। एक बेटा है वह अपन परिवार क साथ अपने

पिता के साथ ही रहता है। सब हँसी मजाक के साथ-साथ रहते हैं। बहू-सास को साथ-साथ काम करते देखते ही बनता है। निम्न मध्यम-वर्गीय परिवार है सो नौकर तो कहाँ से रख सकते हैं। सब अपना-अपना काम करते हैं।

कल्पना को एक बार सूर्य के पास क्या भेजा सीता उसे अपने पास रखना ही नहीं चाहती। उसने तो साफ-साफ कह दिया कि हम कल्पना को नहीं रखेगे, वह ओर कहीं रहे, हम तो उसे थोडा खाने-पीने का खर्चा दे देगे। कल्पना करे तो क्या। चन्द्रमा भी क्या करे। वह बडा उदार है। उसने अपने रिश्तेदारो को टिकट भेज भेजकर पूरा अमरीका घुमा दिया। कल्पना को भी अपने साथ ले जाना चाहता है। पर वह इस उम्र म जाना नहीं चाहती। चन्द्रमा ने इसलिए उसे अपने भाई के घर गाँव म ही रहने दिया। जनरेटर भी लगा दिया ताकि आराम मिल सके क्याकि बिजली की कटोती होती रहती है। कल्पना के लिए अलग कमरा भी सूर्य के घर मे ही बनवा दिया। मकान तो सूर्य का ही है और घर भी उसी का। कल्पना भी तो उसी घर का अश हो गई। पर कल्पना तो यह नहीं समझती तभी तो उखडी-उखडी रहती है। अब और कोई चारा तो है नहीं। रहना तो उसे वहीं है। पहिले एक आश्रम मे भी रहकर उसने देख लिया। वह जिस आराम से रही है उतना तो क्या कुछ भी आराम उसे वहाँ नहीं मिला था बल्कि वहाँ मच्छरों की भरमार थी और करने को भी कुछ भी नहीं था। बस दिन-रात सतबाणी सुनते रहो या भजन कीर्तन करते रहो। कल्पना थोडा बहुत उसम रुचि ले सकती है पर दिनभर तो अपने को उसमे नहीं लगा सकती। उसे तो बतियाने को लोग चाहिए जिन्हे वह अपनी बीती पुरानी सुना सके और उनसे उनकी सुन सके।

कल्पना के भाई सूर्य के यहाँ फन्कशन था। चन्द्रमा भी उसी मे आया था और सुन्दरी व उसका पति भी। दोना कल्पना को ले जाना चाहते थे पर कल्पना नहीं जाना चाहती थी। बडा बेटा राम व उसकी पत्नी सीता भी आए थे पर केवल उसी दिन थोडे घण्टो के लिए। कल्पना से तो केवल आमना-सामना व आपचारिकता की नमस्ते मात्र हुई। पर कल्पना उन्ह देख मन म धधक उठी। एकान्त म उसके धधकते आँसू बाहर निकल आए। वे उफन पडे। वह कमरे मे जोर-जोर से अपनी बेटी सुन्दरी से बोली कि मैंने सीता का क्या बिगाडा जो मुझे वह नहीं रखना चाहती। में तो हमेशा सुनती रही हूँ उसके ताने पर फिर भी कुछ नहीं बोली। मे यहाँ नहीं मरना चाहती। राम के घर ही मरना चाहती हूँ। अपने बेटे के घर पर नहीं मरूँगी तो मेरी मुक्ति कहाँ, वही तो मुझे दाग देगा। पर कौन उसकी सुने। राम तो आज का कलयुगी राम और सीता तो सूर्पणखाँ है। उन्होने मिलकर तो बुढिया का मकान भी मुम्बई का बेच दिया और कुछ पैसे मिलाकर अपना मकान खरीद लिया। उसे कल्पना से क्या लेना दना। समाज के नाते मिलने ता कभी आ ही जाता है।

कल्पना रोती रही और उसके आँसू धधकते उफान बन बाहर निकलते रहे। कहीं यह लावा उसके बडे लडके राम व उसके परिवार को ही न डस ले। चन्द्रमा ने कल्पना

से कह ही दिया कि माँ तू क्या चाहती है, मेरे साथ चले तो चल, सीता तो तुझे अपने पास नहीं रखेगी, क्या तू उसे या राम को मरा देखना चाहती है। कल्पना करे भी तो क्या। उसने अपने को रोका। पर वह कैसे रुके। अपनी लडकी से लिपट गई। तभी लडकी सुन्दरी ने कहा माँ तू कुछ दिन मेरे साथ चल मैं तुझे फिर वापिस यहीं ले आऊँगी। कल्पना के धधकते आँसू फिर भी बहते रहे और वह निढाल हो गिर गई। उसका प्राणात वहीं हो गया, अपने भाई के घर जहाँ वह रह रही थी। थोडी देर मे माहौल बदल गया। कल्पना की डोली उठ गई पुन अपने पति से मिलने के लिए। शमशान मे उसकी लाश धूँ-धूँ कर जल उठी। राम ओर चन्द्रमा दोनो ने उसको अग्नि दी। पर वह तो पहले से ही धधक रही थी ओर उसका धुँआ उडता राम को आँखो से अन्धा कर गया। उसकी आँखे तो पहले मे ही कमजोर थी। अग्नि की चिन्गारी और चीखते घने धुँए ने कमी पूरी कर दी। कल्पना के मन की चिन्गारी राम के प्रकाश को ले डूबी। राम जिन्दा भी रह गया पर अन्धा हो गया। अन्धा तो वह पहले से था पर आँख से नहीं। कल्पना के धधकते आँसू ही उसे ले डूबे। जैसी करनी वैसी भरनी।

× × ×

समय बीतता गया। कल्पना की मृत्यु की बरसी हो गई। राम और सीता के घर पर ही उसकी बरसी की गई। सब परिवार वाले आये और वापिस चले गये। सब कह रहे थे कि देखो बेचारा राम अन्धा हो गया। राम कुछ बोला नहीं। आँखें खराब होने के थोडे दिन बाद ही राम ने डॉक्टरो को अपनी आँखें दिखाई थी पर डॉक्टरा ने कहा था कि अभी तो कोई गुजाइश रोशनी आने की नहीं लगती पर एक वर्ष बाद पक्का पता चलेगा कि क्या थोडी रोशनी आ सकती है।

राम आँखो को रोशनी जाने के कुछ माह बाद ही गमगीन रहने लग गया था। वह सोच मे डूबा रहता था। उसके मन म भी पश्चाताप के बीज के अकुर फूट रहे थे। माँ की बरसी के बाद उसने अपनी पत्नी सीता से कहा कि मेरा मन बडा पछतावा कर रहा है कि हम क्यो नहीं माँ को अपने पास रख पाये जबकि वह तो मरे पास ही रहना चाहती थी और यहीं मरना चाहती थी। आग बोला कि आज उसकी बरसी कर मुझे थोडा सकून मिला और इसलिये अब जब श्राद्धपक्ष आयेगा तब उसका श्राद्ध भी करेगे।

कुछ समय बाद जब श्राद्ध पक्ष आया तो राम को रात को सपने मे उसकी माँ कल्पना दिखी और वह बोली कि बेटे तू क्यो गमगीन रहता है, क्या अपने को कोसता है, जो होना था हो गया यह तो क्या पता किसके कर्मों का फल था कि मैं तेरे पास नहीं रह सकी और भाई के घर ही रही व वहीं ही मरी पर उस दिन तू तो वहाँ था ही। राम सपने म बोला कि माँ मुझे बडा अफसोस है, तू मुझे माफ कर दे। कल्पना बोली कि बेटे, माँ कभी बेटे का बुरा नहीं चाहती, तू तो ईश्वर को याद कर वह तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हें रोशनी देगा। फिर राम जब सुबह उठा तो उसका मन प्रफुल्लित था। उसने पत्नी को

पूरा सपना सुनाया, उसे भी बडा अचम्भा हुआ। दोनो ने मिलकर मन से फिर कल्पना का नियत तिथि पर श्राद्ध किया। उसके बाद राम अपनी आँखें दिखाने डॉक्टर के पास गया तो उसने बताया कि एक आँख मे शायद रोशनी आ सकती है और उसने ऑपरेशन के लिये कहा। राम का आँखा का ऑपरेशन हुआ और उसकी एक आँख मे रोशनी आ गई। उसे फिर दिखाई देने लगा। उसका जीवन वापिस हँसी खुशी में रहने लगा। फिर उसने अपनी माँ कल्पना के नाम से एक चैरिटेवल सस्था बनाई जो गरीब बच्चो को पढाई के लिये सहायता करती है और आज उस सस्था का चारो तरफ मुम्बई मे नाम है। राम और सीता उस सस्था के काम मे लगे रहते हैं। वे मन मे मानने लगे कि माँ कल्पना के आशीर्वाद से ही राम की आँखें ठीक हुई और हम हँसी खुशी रह रहे हैं। वे प्रतिवर्ष कल्पना का श्राद्ध करते हैं व दान देते हैं। उस समय राम का मन अन्दर से रो पडता है और माँ को याद करते हुए उसके धधकते आँसू पश्चाताप के टपक पडते हैं।

❑❑❑

4. पिंघलते नयन

परसा की बात है। दोपहर का समय था। बाहर दरवाजे की घण्टी बजी। हमारा मकान एक मजिला है। आग लॉन है, छोटा बरामदा हे। मेन सडक पर है। मैंने दरवाजा खोला। आगन्तुक ने घर के अन्दर आकर बरामदे मे से घण्टी बजाई थी। वहीं घण्टी का बटन है। मैं आगन्तुक को देखकर हक्का-बक्का रह गया। उसके आधे बाल सफद हा चुके थे। मैं उसकी शक्ल को गोर से देख रहा था। जाना पहचाना चेहरा लग रहा था पर नाम ध्यान नहीं आ रहा था। मैं उससे कुछ कहता इतने म ही वह मेरे पैरा पडकर बोला कि साहब आपने मुझे पहचाना नहीं, मैं घनश्याम माथुर हूँ। उसने बताया कि वह अमरीका से भारत करीब दस वर्ष बाद आया है। उसकी मुलाकात अमरीका म मेरे बेटे से हुई और वह उसका दोस्त बन गया था ओर उसने निश्चय कर लिया था कि अब की बार भारत आने पर मरे से जरूर मिलेगा।

× × ×

मैं माथुर से बात करते-करते अपने को बीस वर्ष पीछे ले गया। एक बडे वित्तीय सस्थान म मैं मुखिया नहीं, उप मुखिया था ओर माथुर भी हमारे मातहत काम करता था। हम प्रशासन को पारदर्शी व ईमानदार बनाना चाहते थे। सब पर कडी नजर रखते थे। आज के जमान म ईमानदार होना वडा मुश्किल है और ढूँढने पर ही ईमानदार अधिकारी मिलेगा। इन्हीं अधिकारिया की बदौलत तो शासन चल रहा है। नहीं तो कब के हम गर्त म गिर जाते। अच्छा ही होता। लोगा के शोटे लगत तो वे सुधर जाते। खैर वैसा नहीं हुआ। वित्तीय सस्थान म प्राप्त होने वाली 'लॉन एप्लीकेशनस्' को शीघ्र स्वीकृत करा कर उद्योग लगवाते थे। उद्यमी ऋण का वितरण सही समय पर चाहता है जिससे वह उद्याग स्थापित कर कमाकर ब्याज व ऋण का चुकारा समय पर कर सके। ऋण वितरण करने वाले अधिकारिया में श्री माथुर भी थे। अच्छे इजीनियर थे। वडा कुशल और सादगी से रहने याल थे। हमन एक-दो अधिकारियो को पुख्ता सबूत होने पर और स्वय सन्तुष्ट होने पर नौकरी स निकलवा दिया था। मुखिया और हमारी रेपुटशन वडी अच्छी थी। शिकायतकर्ता भी हमारे पास आत थे पर हम पूर्णत सन्तुष्ट होने पर ही किसी अधिकारा क विरुद्ध कायवाही करते थे। एक उद्यमी ने हमारे पास आकर शिकायत की कि माथुर ने

उसे थोडी सी – कुछ हजार रुपये राशि वितरण करते समय दो सौ रुपये रिश्वत के लिए। उसने कहा कि वह तो अब हर बार अधिक रुपये लेगा और उसे फिर उद्योग का काम पूरा कर कमाने मे और समय लग जावेगा। मैंने कहा कि उसे पैसे नहीं देन चाहिए थे पर फिर भी अगर माथुर ने पैसे लिए हैं तो देखूँगा कि उसे वह वापिस मिल जावे और उसके खिलाफ भा कार्यवाही करगे ओर नहीं तो तुम्हारे खिलाफ कठोर कदम उठाऊँगा। उद्यमी ने कहा कि वह सच बोल रहा है और आप जाँच कर लेवे।

मैंने कुछ देर बाद माथुर को अपने कमरे मे बुलाया। कुछ इधर-उधर की बात कर फिर मैंने कहा कि माथुर तुम तो सच बोलते हो, मुझे सच्ची बात बताओगे उसने हाँ मे जवाब दिया तो मैंने उद्यमी से दो सौ रुपये लेने की बात पूछी तो उसने स्वीकार कर लिया और कहा कि वह उद्यमी को पेसे वापिस लौटा देगा। मने उससे अपने कमरे मे बैठने के लिए ही कहा और मैं मुखिया के कमरे मे गया। मुखिया ने मुझे कहा कि माथुर इस्तीफा द देवे तो ठीक हे नहीं तो उसे फिर अन्य अधिकारी की भाँति सेवा से हटा दिया जावे। मैंने मुखिया को बहुत समझाया कि माथुर सीधा अफसर है तभी तो उसने तत्काल स्वीकार कर लिया आर पैसे भी उद्यमी को वापिस दे देगा। मैंने यह भी कहा कि आगे वह ऐसा नहीं करगा ऐसी हामी उससे भरवा लेते हैं। पर मुखिया नहीं माना। मैंने वापिस अपने कमरे में आकर माथुर को सब किस्सा सुना दिया। माथुर इस्तीफे पर राजी हो गया और मैंने झट उससे इस्तीफा ले मुखिया के हस्ताक्षर करा उससे स्वीकार करा दिया।

मुझे इस बात का मलाल रहा कि माथुर को नौकरी से हटना पडा। करीब छह माह बाद मुझे पता चला कि माथुर अमरीका चला गया है तो मुझे तसल्ली हुई। माथुर ने इस्तीफा भी यही सोचकर मुझसे बात कर दिया था कि इस्तीफे से उस पर आँच नहीं आवेगी जबकि नौकरी से हटाने पर उसका सेवा रिकार्ड खराब हो जाता और उसे दूसरी जगह नोकरी मिलना कठिन होता, बाहर जाने की तो बात ही क्या।

× × ×

माथुर कहने लगा कि साहब आपके कारण ही मैं आज इतना सम्पन्न हो गया। यहाँ नौकरी पर रहता तो क्या मिलता। नौकरी से निकाल दिया जाता तो कहीं का नहीं रहता। वह बोला आपने मुझे सलाह दी तो मेरा भविष्य ही बदल गया ओर आज वह इतना सम्पन्न है। उसने मुझे याद दिलाया कि किस प्रकार दरी को व भ्रष्टाचार को कम करने के लिए हमने कई कदम उठाए थे।

बात करते हुए मैं भी पुन वित्तीय सस्थान म लौट गया। ऋण की वापसी डॉक्यूमैण्ट एक्जीक्यूशन के दिनाक से एक वर्ष पश्चात् शुरू होती थी। ऋण स्वीकृत होने पर भी ऋणी डॉक्यूमैण्ट एक्जीक्यूशन तभी कराता था जब उसे वास्तव में राशि की जरूरत होती थी और फिर वह इसके लिए जल्दी करता था। अधिकारी 'इस जल्दी के

ही' पसे माँगते थे। सोच-विचार कर हमने ऋण वापिसी को भुगतान दिनाक स 'लिक' कर दिया न कि 'डॉक्यूमैण्ट एक्जीक्यूशन' की दिनाक से। इससे ऋणी ऋण स्वीकृति के फौरन बाद 'डॉक्यूमैण्ट एक्जीक्यूशन' के लिए आवेदन कर देता और उसको इसकी जल्दी नहीं रहती। उस विभाग म तो भ्रष्टाचार प्राय समाप्त ही हो गया।

माथुर आगे बताने लगा कि वह किस प्रकार अमरीका मे रह रहा है और उसकी दोस्ती मेरे लडके से कैसे हुई। उसने कहा कि वह तो मुझे मेरे पुत्र से दोस्ती होने से पहले ही याद करता था और मिलना चाहता था। उसे ओर मुझे दोनो को ही मिलने म बडी खुशी हुई। हम दोना गले मिले। दोनो की आँखा से आँसू टपक पडे। मेरा मन भर आया, नयन पिघल जो गए थे, मन के कोने के पश्चाताप् का बीज बिना अकुरित हुए ही मिट जो रहा था।

❑❑❑

5. भटकती रूह

पाँच वर्ष बाद अचानक गोपीचन्द को मेरे घर मे देखकर मैं अचम्भित हो गया। गोपीचन्द मेरा अच्छा मित्र था और है भी परन्तु पिछले पाँच वर्षों म उसका पता ही नहीं था मेरे पास तो फिर कैसे मिलता उससे और वह शायद शर्म के मारे या और किसी कारणवश मेरे से मिलना नहीं चाहता था। खैर यह तो वह जाने। आज सुबह जब मैं घूमने गया तभी वो पीछे से घर पर आ गया और मेरी पत्नी से बतराने लगा।

घर मे घुसते ही देखा कि पत्नी और गोपीचन्द जोर-जोर से ठहाका लगा रहे हैं। गोपीचन्द काफी खुश नजर आ रहा था। इतना खुश तो मैंने उसे पुरान जमाने म भी नहीं देखा था। सोचा जरूर कोई बात होगी।

× × ×

मे अनायास पाँच साल पीछे चला गया। उस समय गापीचन्द भी मेरे पास के मकान म रहता था। उसकी पत्नी सुन्दरी व उसके दो बच्चे थे। गोपीचन्द भी मेरी तरह प्रशासनिक सेवा मे था। हम दोनो मध्यप्रदेश कैडर मे थे। गोपीचन्द मरे से करीब दस वर्ष छोटा था और सेवा मे काफी जूनियर था। मैं रिटायरमेण्ट से काफी पहले भोपाल आ गया था और यहाँ अपने स्वय के मकान मे ही रहता था। यहीं से चार वर्ष पहले रिटायर हुआ। अपने मकान म ही रहता था तो रिटायरमैण्ट भी नहीं खला। वही वातावरण रहा। केवल सरकारी गाडी की जगह खुद की कार इस्तेमाल करनी शुरू कर दी, सरकारी नौकर की जगह प्राइवेट नौकर ने ले ली, टेलीफोन भी प्राइवेट हो गया और दफ्तर जान की छुट्टी हो गई। बिल्कुल स्वतन्त्र हो गया, मन-मौजी हो गया, अपने समय का खुद रखवाला। जब चाहो उठो, सोओ, नहाओ या नहीं नहाओ, घर पर चाहो तो कुर्ता पायजामा पहने रहो।

गोपीचन्द उस समय बडा दु खी था। छह माह पूर्व ही उसकी पत्नी लम्बी बीमारी से मर गई थी। वह स्वय भी तभी सरकारी नौकरी मे निलम्बित हो गया था और उसके विरुद्ध विभागीय जाँच प्रारम्भ कर दी गई थी। वह तो जाँच के कारण अपना हैडक्वार्टर भोपाल करा वहाँ आया था। मेरा मित्र था सो मैंने भी उसकी इसम मदद की। इससे पहिले-आज से करीब सात वर्ष पूर्व वह मेरे डिवीजन मे ही कार्यरत था एक छोटे जिले में जिलाधिकारी के अधीन। वह जब भी भोपाल आता मेरे साथ ही खाना खाता। उसकी

पत्नी सुन्दरी भी बडी हँसमुख व सुन्दर थी। उसके छाटे-छोटे दोनो बच्चे भी बडे प्यारे लगते थे। सब हँसमुख थे, ठहाके चलते रहते थे।

गोपीचन्द तब मुझे अपने मकान, जहाँ वह रहता था, का किस्सा सुनाता था। सरकारी मकान पहले वाले अधिकारी ने खाली नहीं किया था सो उसने किराये का मकान ले लिया था। गोपीचन्द बडा भला आदमी है। उसने अपने साथी की बात मान उसके परिवार को ही सरकारी मकान मे रहने दिया, खाली करने पर जोर नहीं दिया और खुद किराय क बड घर म रहने लगा। गोपीचन्द का पूरा परिवार—माँ बाप आदि भी—बडे सज्जन व धर्म परायण थे। भक्ति मे लीन रहते थे। परिवार वाले तो पैतृक गाँव मे ही रहते थे। गोपीचन्द अपनी पत्नी व बच्चे क साथ नाकरी क कारण यहाँ था। किराये का मकान तो बडा अच्छा था। करीने से बना हुआ था। लगता था कि अच्छे व्यक्ति ने बनाया है और इसमे उसकी पत्नी या अन्य स्त्री ने भी योगदान दिया है। लोग कहते थे कि जवान ओरत की इस घर म मौत हो गई थी ओर उसके पति ने फिर यह मकान वर्तमान मालिक को बेच दिया था। लोग इसमे रहते डरते थे। यह 'भूतिया घर' कहलाता था। मकान तो मकान होता है। उसमे कोई रहता हो तो उसे घर कहते हैं। लोग कहते थ कि इसमें उस स्त्री को आत्मा भटकती है। गोपीचन्द व उसकी पत्नी भूत-प्रत को नहीं मानते थे और उन्हाने मकान किराये पर ले लिया था। सामान शिफ्ट करन क दा-तीन दिन बाद सब सामान्य हो गया था। गोपीचन्द रात म सो रहा था तो अचानक छम-छम करती एक सुन्दर जवान औरत उसके पैरा की तरफ आकर चारपाई पर बैठ गई। छम-छम की आवाज सुन गोपाचन्द का आँख खुल गई थी। वह यह देखकर अवाक् रह गया। उसने उससे उसके बारे मे पूछा तो उसने बस यह कहा कि तुम मुझे देख सकते हो छू नहीं सकते। तुम भले आदमी हो, इस मकान को खाली कर यहाँ से दूर चले जाओ, मैं तुम्हे फिर मालामाल कर दूँगी। तुम मेरी बात मान जाओ। तुम्हारा परिवार बहुत भला व धर्म परायण है और यह कहकर वह छम-छम करती दरवाजे से बाहर चोक मे चली गई। चौक मे बाथरूम था। थाडी दर बाद नल से पानी गिरने की जोर-जोर से आवाजें आई। काफी देर तक आवाजें आती रही। फिर गोपीचन्द बाहर निकल कर बाथरूम में गया तो सार नल खुले हुए थे। गोपीचन्द भूत-प्रेत को न मानते हुए भी सहम जरूर गया था। कुछ दिना बाद फिर यही क्रम हुआ। तीसरी बार जब औरत रात का उसे नजर आई तो वह गुस्से मे दिखाई दी। वह जोर से कह रही थी कि अगर तुमने दो सप्ताह म मकान खाली नहीं किया तो मैं तेरा व तेरे परिवार का बहुत बुरा हाल कर दूँगी हालाकि मैं ऐसा करना नहीं चाहती। दो सप्ताह भी बीत गए। गोपीचन्द व उसकी पत्नी ने इस पर कुछ ध्यान नहीं दिया। वे इसे ढकोसला मात्र समझते थे।

समय बीतता गया। दो सप्ताह भी बीत गय। गोपीचन्द ने मकान खाली नहीं किया। वह तो अपने प्रोमोशन के चक्कर में भोपाल का चक्कर लगा रहा था। मैं भी

उसकी इसम मदद कर रहा था। मैंने गोपीचन्द को फिर भी कहा कि उसने जो किस्सा सुनाया उस पर ध्यान दे। जवान औरत की मौत होने पर उसकी रूह कई बार भटकती रहती है। मैंने उसे अपने पिता की कही बात वताई। मैंने उससे कहा कि मेरे पिता बताया करते थे कि जब वे एल एल बी म पढते थे तो किराये के कमरे मे अकेले रहते थे। उस कमरे में रात को रूह आती थी और उन्हे कहती कि तुम धर्मात्मा हा, तुम्हारा परिवार धर्म परायण है तुम मुझे मुक्ति दिला दो। मैं तुम्हारा भला करूँगी। फिर मेरे पिता ने विधि पूवक तर्पण किया, हवन व यज्ञ भी किया और उस आत्मा की मुक्ति हो गई। वह फिर उन्ह कभी नहीं दिखाई दी और मेरे पिता कानून पास कर बडे एडवोकेट हो गए। मैंने गापीचन्द से कहा कि वह रूह से पूछे और उसका तर्पण कर दे। मैंने यह भी कहा कि रूह चाहती है तो मकान भी खाली कर दे। पर उसने मरी कुछ नहीं सुनी। दो सप्ताह बाद औरत वापिस रात को आई और बोली कि गोपीचन्द तूने मकान खाली नहीं किया और अत्र तू जाने, मैं तो मकान खाली ही चाहती थी, मेरी मुक्ति तो तू करे या नहीं यह ता तू जाने। पर गोपीचन्द ने कुछ नहीं सुना। तभी से गोपीचन्द क दिन फिर गए। उसका प्रोमोशन क वजाय सस्पेन्शन हो गया और उसकी पत्नी बहुत वीमार हो गई।

गोपीचन्द अपनी पत्नी को लेकर शहर म आ गया। वडे अस्पताल म कॉटेज वार्ड ले लिया और बच्चा को पढने के लिए अपने गाँव भेज दिया। जमा पूँजी तिल-तिलकर सब खत्म हो गई और पत्नी भी स्वर्ग सिधार गई। उसकी जाँच चलती रही। उसने पास ही किराये का मकान लिया था वह खाली कर अज्ञातवास मे चला गया था।

× × ×

आज मुझ गोपीचन्द बडा खुश नजर आया। वह कह रहा था कि अगर उसने मेरी बात मान ली होती ता वह अपनी पत्नी सहित आनन्द से उससे मिलता होता। वह मेरे गले मिल रो पडा। बोला कि मुझे फिर बडा पछतावा हुआ था और मैंने पुराने मकान मे जा यज्ञ हवन करवाया और मकान कुछ समय पूर्व खाली कर दिया। पूजा पाठ भी करवाया। गोपीचन्द स्वय भी अब पूजा करने लगा है। उसने जब से पुराना मकान खाली किया उसके दिन फिर गये। चन्द महीना मे ही वह जाँच मे बहाल हो गया, उसका प्रोमोशन हो गया और आज वह उसी कुर्सी पर है जहाँ से मैं रिटायर हुआ। वह अब आत्मा में विश्वास करने लगा है। यह सहायता तो पहले भी दूसरो की करता था। मैंने उससे कहा कि अब तो तुम नहीं भटकते। गोपीचन्द बोला कि मैं क्या अब भटकूँगा, वह भटकती रूह भी अब भटक गई और उसका पता नहीं वह अब कहाँ है। हम दोनो ठहाका मार कर हँसने लगे।

❑❑❑

6. समन्वय

कल ही की बात तो है। मैं बाहर जाने के लिए अपने मकान के मेन गेट पर पहुँचा तो हक्का-बक्का रह गया। देखा सडक को मजदूर खोद रहे थे। सभी मकानो के आगे दो फीट चौडी खाई खुद चुकी थी। मेरे मकान के बाहर भी खाई आधे से अधिक खुद गई थी। मैंने मजदूर से कहा कि भाई हमे बाहर जाना है, कार निकालनी है, खोदने से पहले बता तो देते। वह कहने लगा कि हमें क्या पता आप आज ही बाहर जावेगे, अब तो शाम होने वाली है। मैंने कहा कि थोडी सडक मिट्टी से भर दो तो गाडी बाहर निकाल कर रख देवे, हम तो अब थोडी दर बाद जावेगे, मैंने कार सडक के दूसरे किनारे पर खडी कर दी।

इतने मे ठेकेदार आ गया। मुझे बडा अफसोस हो रहा था। दो माह पहले तो सडक बनी थी और अब फिर खुद गई। प्रति वर्ष यह होता है। सडक खुदती है, फिर बनती है, फिर खुदती है। कभी टेलीफोन के तारो के लिए, कभी चौडी करने के लिए कभी बिजली की लाइन 'अण्डर ग्राउण्ड' करने के लिए। मैंने ठेकेदार से कहा कि भाई ऐसा क्यो करते हो, हर साल सडक खोद जाते हो और फिर कई महीने ऐसी ही पडी रहती है। वह बोला कि हम क्या करें, हमे तो ठेका मिलता है सो अपना काम करते हैं और कमाकर खाते हैं। इजीनियरो को भी देना पडता है तो फिर काम तो ऐसा ही होगा।

पास मे रहने वाले शर्मा जी भी इसी बीच आ गये। बोले सब सरकारे ऐसी ही हैं, कोई नीचे तक की नहीं देखता। हर साल सडक खोदते बनाते हैं विभागो मे आपस मे कोई समन्वय नहीं है। जनता का गाढी कमाई का पैसा करो मे वसूल कर ऐसे ही फिजूल खर्च कर देते हैं। मैंने कहा कि शर्मा जी आप का कहना कुछ तो सही है। विकास के नाम पर वही सडके खोदकर फिर बनाकर काफी पैसा खर्च करती है सरकार और फिर आँकडे आ जाते हैं कि इतने करोड रुपये सडकों पर खर्च किए व क्षेत्र का विकास किया। पर आपका यह कहना सही नहीं कि विभागो मे आपस मे समन्वय नहीं है। विभागो म खूब 'को-ऑर्डीनेशन' है तालमेल है। उन्हे पता रहता है कि कब सडक बन गई तभी तो वह खुद सकती है। नहीं तो उन्ह क्या मिलेगा। सडक खोदने, बनाने और फिर खोदने व बनाने मे ही तो पैसे खर्च कर उसमे से अपना हिस्सा निकाल सकते हैं। नहीं तो पता चल जावेगा कि सडक बनी या नहीं बनी और कैसी बनी। बिना सडक बने भी तो राशि उठ

सकती है पर थोडी कच्ची-पक्की सडक बना फिर खोद राशि खर्च कर उसमे अपना हिस्सा ले तो कोई आँख नहीं उठा सकता। काम का काम और गुठली के दाम। कैसा अच्छा समन्वय है। क्यो श्री परमेश चन्द जी शर्मा। शर्मा जी एक बार तो चुप हो गये। फिर बोले हाँ श्री हरिकिशन जी सक्सेना, आपका कहना कुछ सही लग रहा है और फिर अपने मकान की ओर चले गये। मैं भी वापिस अपने घर आ गया।

× × ×

एक सप्ताह बाद मैं परमेश चन्द्र जी शर्मा के घर उनसे मिलने गया। मुझे पता चला था कि उनकी तबियत कुछ ढीली है। मैंने घण्टी बजाई तो उनकी पत्नी ने दरवाजा खोला। मैंने कहा कि क्या शर्मा जी नहीं है। उसने कहा हैं, आप बैठो तो सही। फिर थोडी देर मे शर्मा जी आकर बैठ गये। कहने लगे कि तबियत कुछ ठीक नहीं थी सो मैं नाश्ता कर आराम करने लगा था। मैंने कहा कि ऐसा था तो मुझे बैडरूम मे बुला लेते। बोले कि नहीं ऐसी खराब नहीं थी, बल्कि उठने बैठने से तो चुस्ती ही आती है।

फिर हम दोना घर गृहस्थी की बात करने लगे। परमेश चन्द्र जी के दो लडके हैं, दोनो की शादी हो गई। दोनो लडके अध्यापक हैं। बडा लडका तो अब दूर मानसरोवर मे चला गया। हाऊसिग बोर्ड में मकान के लिये पजीकरण कराया था, मकान मिल गया तो वह वहाँ अपने मकान मे चला गया। उसका स्कूल मानसरोवर मे ही है। पहले उसे इतनी दूर रोज आना जाना पडता था। छोटा लडका कमलेश का स्कूल बापू नगर मे है और उसकी पत्नी सूरजमुखी भी गाँधी नगर गर्ल्स स्कूल मे अध्यापिका है। घर गृहस्थी मे तो सभी को काम करना पडता है पर जो औरत बाहर काम करती है तो उसे घर का ज्यादा काम करने मे कठिनाई होती है।

उस दिन इतवार था। मैं आराम से बाते करने के मूड मे आया था। थोडी देर मे मिसेज शर्मा खुद ही चाय बनाकर ले आई। मैंने पूछा कि क्या बहू नहीं है तो वह चुप हो गई और चली गई। मैं और शर्मा जी दोनो चाय पीने लग गये। मैंने शर्मा जी से पूछा कि परमेश चद्र जी क्या बात है, न तो लडका कमलेश और न ही बहू सूरजमुखी दिखाई दे रहे हैं, कहीं गये हैं क्या। मैंने आगे कहा कि मैं तो जब भी आता हूँ बहू ही चाय बनाकर लाती थी और कमलेश भी मुझे आदर देता है और बहुत सी बाते हम कर लेते थे। शर्मा जी बोले देखो मैं आपको सच बताता हूँ। बहू तो अपने पीहर गई है, वह स्कूल से आकर कई बार थक जाती थी और खाना बनाना उसके लिये कठिन हो जाता था। पर मेरी पत्नी कहती कि बहू को ही शाम का खाना व सुबह का नाश्ता बनाना चाहिये और वह स्वय तो केवल दोपहर का खाना जरूरत होने पर ही बनायेगी। बडे लडके की पत्नी तो बाहर जॉब करती नहीं थी तो वह पूरा खाना बनाती थी पर अब तो बडा लडका दूर मानसरोवर मे चला गया और कमलेश की बहू के लिये यह सम्भव नहीं हो पा रहा। बहू कहती है कि खाना बनाने वाली रख लो पर इसके लिये उसकी सास तैयार नहीं। अब दोपहर का

खाना मेरी पत्नी हम दोनो का बनाती है, लडका व बहू तो नाश्ता कर, अपना टिफिन ले स्कूल चले जाते हैं पर शाम का खाना बहू को ही बनाना पडता है। सुबह का नाश्ता भी सबका बहू ही बनाती है।

शर्मा जी आगे बोले कि बहू अपने पीहर से ही स्कूल भी जा रही है। महीना भर हो चुका था सो मैं (शर्माजी) उसके घर बुलाने गया। उसकी एक बहन ने तलाक ले रखा है वह भी वहीं रहती है। बहू की माँ से बात हुई, उसके पिता तो हैं नहीं। उसने मुझे बहुत बुरा-भला कहा, कहने लगी आप बहू से इतना काम लेते हो और व्यवहार भी अच्छा नहीं रखते, वह तो अब वापिस नहीं जायेगी आपके घर। मुझे जाने के लिये कहा और बहू से बात भी नहीं करने दी। फिर मैं तो वापिस आ गया।

मैं फिर शर्मा जी से कहने लगा कि शर्मा जी रिश्तो मे भी समन्वय, सामजस्य जरूरी है। नई पीढी मे ऊर्जा, तेजी अधिक होती है, पीढियो मे दृष्टिकोण मे भी फर्क होता है। हम अपने बच्चा की सहूलियत भी देखनी चाहिये। समन्वय, सामजस्य रखना तो बडा का दायित्व अधिक है। मैंने शर्मा जी से पूछा कि आप तो यह बताओ कमलेश क्या चाहता है। वे कहने लगे कि कमलेश तो सूरजमुखी को बहुत चाहता है और वह उसके चले जाने से दु खी है। वह रहता तो यहीं है पर मुझे उसके एक साथी ने बताया कि वह स्कूल जाता है तो सूरजमुखी उससे मिलने वहाँ आ जाती है या वह सूरजमुखी से मिलने उसक स्कूल चला जाता है। शर्मा जी आगे बोले कि उनका छोटा बच्चा भी सूरजमुखी के साथ चला गया। वह तो हमारे से हिला हुआ था। शर्मा जी मुझसे कहने लगे कि कमलेश आपका आदर करता है, आप कुछ करो तो बात बने नहीं तो इनका तलाक ही होगा क्याकि सूरजमुखी की माँ भी ऐसा ही कह रही थी, सूरजमुखी की बहन भी तलाकशुदा है और मेरी पत्नी भी यही चाहती है। शर्माजी कहने लगे कि मैं तो उसके यहाँ अब नहीं जाऊँगा। मैंने कहा शर्माजी आप कह रहे हो तो कमलेश घूमकर वापिस लौटे तो मेरे पास भेजना, मैं उससे बात कर दखूँगा कि वास्तव में क्या बात है। मैं फिर वापिस अपने घर आ गया।

शाम को कमलेश मेरे घर आया। मैंने उससे बात की। उसने मुझे बताया कि वह सूरजमुखी को बहुत प्यार करता है, वे आजकल भी रोज मिलते हैं पर अपनी माँ के डर के कारण यह कुछ भी घर पर नहीं बताता। यह कहने लगा कि सूरजमुखी ता तभी खुश होगी जब हम अलग मकान मे रहने लगें। सूरजमुखी के पिता का एक फ्लैट बापूनगर में खाली पडा है, सूरजमुखी कहती है कि वे यहाँ पर रहें पर मैं डरता हूँ अपने माँ-बाप से कुछ कह नहीं पाता। मुझ सब समझ म आ गया। पर मैंने कहा कि तुम सूरजमुखी व अपने बच्चे को मेरे पास एक-दो दिन में लेकर आओ, मैं उनसे बात कर लूँ। साथ ही यह भी कहा कि जैसे यह तुम्हारा छोटा बच्चा है वैसे ही तुम भी तो अपने बाप के बेटे हो। इसलिये मैं तुम्हारे पिता से भी तुम्हारी व सूरजमुखी की एक साथ मेरे यहाँ बात कराऊँगा। यह मान गया।

दो-तीन दिन बाद कमलेश, सूरजमुखी और उनका छोटा बच्चा बिट्टू शाम को मेरे घर आये। मैंने उनको बैठाकर तसल्ली से बात की। सूरजमुखी कहने लगी कि वह घर पर इतना काम कभी थकी होने के कारण नहीं कर सकती और फिर कभी बाहर जाने की इच्छा होती है तो बाहर भी जाने नहीं देती उसकी सास। मैंने उससे कहा कि बडों का आदर तो करना ही चाहिये और यदि वह उनको आराम देगी स्वय काम करके तो ऐसा नहीं कि उसकी सास उसे बाहर जाने से रोकेगी या ज्यादा काम करायेगी। तुम दोनो को तो मिलकर काम करना चाहिय व नौकर भी रख लेना चाहिये जो सहायता कर दे। वह झट बोली कि उसकी सास तो नौकर रखना नहीं चाहती और वह तो अब अलग ही रहना चाहती है। कहने लगी कि यही तो मौज मस्ती के दिन हें। पर वह यह तो मान गई कि वह सास-ससुर से आदर से बोलेगी और वे गलत कह तो भी वापिस जवाब नहीं देगी।

मैंने फिर परमेश चन्द्र जी शर्मा को बुलाया। उन्हे अलग से बात कर पहले समझाया कि उनकी पत्नी तो नौकर रखना नहीं चाहती और इसलिये विकल्प यही है कि कमलेश अलग रहे अपने ससुर क फ्लैट मे जो बापूनगर मे खाली पडा है और कमलेश व सूरजमुखी दोना के स्कूल के पास है। मैंने कहा कि बाप के नाते आपका फर्ज बनता है कि आपका बेटा व बहू अच्छी तरह आपस मे सामजस्य के साथ रहे ओर तभी आपको खुशी मिलेगी।

मैंने फिर शर्मा जी को उनके बेटे कमलेश व बहू सूरजमुखी से बात कराई। पोता बिट्टू उनसे लिपट गया। बहू ने उनके चरण छुए, कहने लगी पापा जी माफ करना मेरी माँ ने आपको कुछ कह दिया हो तो, वे परेशान जो रहती हैं, दोनो लडकियाँ उनके घर ही वापिस जो आ गई थीं। आगे बोली-पापा जी आप जैसा चाहोगे करेंगे, पर हम अपने स्कूल के पास ही मेरे पापा के फ्लैट मे रह तो क्या है, आप जब भी चाहो वहाँ आ जाओ, हमे बडी खुशी होगी। शर्मा जी का मन पसीज गया, कहने लगे कि हम तो तुम बच्चो को खुश देखना चाहत हैं, तुम लोग जैसा ठीक समझो करो, पर तुम अपनी सास को तो जानते ही हो, उसको समझाओ तभी यह सम्भव होगा। शर्मा जी कहने लगे कि मैं भी बात करूँगा। मैंने शर्मा जी को कहा कि शर्मा जी आप अपनी पत्नी को समझा इन बच्चो को बापूनगर के फ्लैट म जाने दो, ये तो आपके भविष्य के, बुढापे के, सहारे हैं, इन्ह अभी तो मौज-मस्ती करने दो। शर्मा जी ने स्वीकृति मे सिर हिलाया। फिर वे सब शर्मा जी के घर चले गये।

मुझे बाद म पता चला कि बहू सूरजमुखी व बिट्टू उस दिन वहीं रह गये और एक सप्ताह मे बापूनगर के फ्लैट मे चले गये। शर्मा जी और उनकी पत्नी वहाँ दो चार दिन गये घर जमाने के लिये और फिर वापिस अपने घर पर आ गये और अब कमलेश व सूरजमुखी अपने बच्चे बिट्टू को लेकर दो-चार दिन मे ही यहाँ चले आते हैं शर्मा जी के घर पर। शर्मा जी बडे खुश हैं। उन्होंने आपसी समन्वय सामजस्य, तालमेल बैठाकर अपनी पत्नी को समझाया जिससे कमलेश-सूरजमुखी अलग मकान मे रह सके।

एव वर्ष मे ही कमलेश ने कार खरीद ली और अब अपनी माँ व पिता को घुमाने ले जाता हे। बहू भी कार चलाती है और वह बिट्टू को लेकर कभी भी आ जाती है। बिट्टू को छोड भी जाती है जबकि उस्की छुट्टी होती है। अब तो सास भी उससे खुश है। कैसे जमाना बदल जाता है। रिश्तो मे भी समन्वय, तालमेल चाहिये और यह फर्ज बडों का ही अधिक बनता हे कि वह बच्चो की खुशहाली चाहते हुए उनके सही विचारो से कैसे अपने विचारा म सामजस्य स्थापित करे। सास यदि खाना बनाने या सहायता के लिये नौकर रख लेती तो शायद कमलेश के अलग रहने की नौवत नहीं आती। पर अलग रहकर तो अब सभी खुश हैं, स्वतन्त्रता जो सबको मिल गई, बच्चो को ही नहीं, बडे बुजुर्गों को भी। मेरा भी इसमे योगदान रहा आपस मे तालमेल बैठान का पर असली काम शर्मा जी ने किया अपनी पत्नी को समझाने का अौर समन्वय स्थापित करने का तभी तो आज वे दोनो भी खुश हैं और उनके बच्चे भी।

❑❑❑

7. चुभन

हम घर काफी देर रात लौटे थे। खाना खाकर लेटे ही थे कि अचानक टेलीफोन की घण्टी बज गई। देखा तो रात के दस बज चुके थे। मैंने पत्नी सुन्दरी से कहा तुम ही टेलीफोन देख लो। टेलीफोन करने वाले को बात भी उसी से करनी थी। कमला श्रीवास्तव का फोन था। पत्नी ने फिर मुझे बताया कि मिसेज श्रीवास्तव जयपुर वापिस लौट आई है। वह चाहती है कि हम उससे इसी सप्ताह मिल आवे। मैंने पत्नी से कहा परसो ब्रिज खेलने चलेगे तब थोडा पहले चलेगे और मिल लेगे। आज भी हम ब्रिज खेलकर लौटे थे। सप्ताह म तीन दिन चले जाते हैं। ब्रिज ताश का अच्छा खेल है, खेलने मे एकाग्र चित्त रहते हैं और बुद्धि भी तेज होती है। सेवानिवृत्ति के बाद आना जाना तो कम हो ही जाता है। ब्रिज म और बहुत से अच्छे लोगा से मुलाकात हो जाती है। वैसे मेरी मुलाकात मिसेज श्रीवास्तव के पति ईश्वरचन्द्र श्रीवास्तव से ब्रिज खेलने से ही हुई थी। मैं *जब सेवा मे था तो निगम के अध्यक्ष, जो बाहर से आते थे, ब्रिज के शौकीन थे।* वे मि० श्रीवास्तव के अच्छे मित्र थे। श्रीवास्तव जी अच्छे ओहदे से कई वर्ष पहले रिटायर हो चुके थे। बिजली क मुख्य अभियता रह चुके थे। हमारे अध्यक्ष के साथ मैं भी शाम को ब्रिज खेलने चला जाता था और फिर तो श्रीवास्तव जी से मेरी अच्छी खासी दोस्ती हो गई या यो कहिए कि हम सब अच्छे दोस्त हो गए। बाद मे मेरी पत्नी भी मेरे साथ उनके घर ब्रिज खेलने जाया करती थी। मिसेज श्रीवास्तव ब्रिज नहीं खेलती थी सी चाय पानी का भी बडा अच्छा प्रबन्ध हो जाता था। मिसेज श्रीवास्तव अन्य पडौसी महिलाओ के साथ ताश के दूसरे खेल जैसे रम्मी आदि खेलती हैं।

श्रीवास्तव जी की मौत करीब पाँच वर्ष पहले एक ऑपरेशन के दौरान हो गई थी। मुझे याद है उस दिन की जब श्रीवास्तव जी आपरेशन के लिए दिल्ली गए थे। वे ऑपरेशन नहीं कराना चाहते थे। उनको पेशाब की बीमारी थी। पेशाब करते तकलीफ होती थी। प्रोस्टेट का ऑपरेशन होना था। उनके दो लडके व एक लडकी है। तीना की शादी हो चुकी। अच्छे पदा पर हे। मुम्बई, मद्रास व दिल्ली म रहते हैं। वे सब चाहते थे कि पापा ऑपरेशन करा लेवे। पर श्रीवास्तव जी जो पिचहत्तर वर्ष के हो चुके थे ऐसा नहीं

चाहते थे। मुझे कहते कि काम चल रहा है। बहुत ज्यादा तकलीफ नहीं है और उम्र भी काफी है फिर अभी क्या करना है दवाई ले ही रहा हूँ। पर बच्चों की जिद पर व सहमत हो गए और ऑपरेशन के दौरान ही बेहोश हो गए और दिल्ली में ही एक-दो दिन बाद स्वर्ग सिधार गए। मिसेज श्रीवास्तव को बड़ा धक्का लगा पर मौत के आगे तो कोई कुछ नहीं कर सकता। बच्चे सब बड़े अच्छे हैं पर मिसेज श्रीवास्तव अधिकतर यहीं जयपुर में रहना चाहती हैं।

मिसेज श्रीवास्तव का टेलीफोन आने पर हम तीसरे दिन उनके घर चले गए। 'सी' स्कीम में बड़ा मकान है। श्रीवास्तव जी ने सेवा में रहते हुए ही करीब दो हजार गज का प्लॉट ले मकान बना लिया था। ऊपर भी मकान किराये के लिए बनाया था व पीछे नौकर के लिए। नौकर तो अब भी पीछे रहता है। सरकारी सेवा में है। उसकी पत्नी पीछे काम कर देती है व खुद नौकर शाम-सुबह और काम कर देता है। ऊपर मकान में अब मिसेज श्रीवास्तव का भाई बाहर से आ गया है। उसका पूरा परिवार है। मिसेज श्रीवास्तव को भी अच्छा लगता है क्योंकि सहारा तो है ही उनका। अकेलापन भी नहीं रहता है।

मिसेज श्रीवास्तव हमें देखकर मेरी पत्नी से एकदम लिपट गईं। उनकी आँखों से आँसू टपक आए। बड़ी स्नेही महिला हैं। उनके पति भी बड़े स्नेही थे। मिसेज श्रीवास्तव की छोटी बहन भी आई हुई थी। वह भी विधवा है सो कभी-कभी आ जाती है बाहर से कुछ दिनों के लिए यहाँ रहने के लिए। सब बैठे बातें कर रहे थे। मैं एकदम शान्त हो गया। मुझे ईश्वर चन्द श्रीवास्तव की अचानक याद आ गई। मेरा मन भर आया।

× × ×

मैं सोचते-सोचते पिछली दुनिया में चला गया जब श्रीवास्तव जी जिन्दा थे। हम अक्सर ब्रिज खेला करते थे। ऊपर का मकान तब बैंक वालों को किराये पर दिया हुआ था। बैंक अधिकारी रहते थे। एक बार हम कुछ दिन नहीं गए तो उनके फोन आए। फिर हम अगले दिन ही उनके यहाँ चले गए। ब्रिज भी खेले। श्रीवास्तव जी मुझे कहने लगे कि महेश्वरी जी फोन करा करो और ब्रिज का प्रोग्राम बना आ जाया करो। मैंने कहा कि आप जब भी चाहो आ जावेंगे, पर आप ही फोन कर दिया करो। वे एकदम चुप हो गए। फिर बोले कि भई देखो बात यह है कि मैं तो रिटायर हो चुका और ऊपर वाला मकान भी अब खाली है सो किराया भी नहीं आता। मैंने कहा कि ठीक है पर मकान तो किराये पर दे दो। वे सोच में डूब गए। मैंने कहा क्या बात है। बोले देखो घर की बात है, मेरे बच्चे नहीं चाहते कि मैं अब यह मकान किराये पर दे दूँ। मकान कुछ समय पहले खाली हुआ। तब बड़ा लड़का महेश आया हुआ था। उसने साफ मना कर दिया था। दोनों लड़के अच्छा कमाते हैं और मुझसे पैसों के लिए भी पूछते हैं पर मैं रुपये उनसे नहीं लेना चाहता। वैसे कोई कमी नहीं है पर खर्च का ध्यान तो रखना ही होता है।

मेरा मन तव भी भर आया था। सोचा था कि देखो बच्चे क्या सोचते ह। जरूर यह सोचते हैं कि जब उनके पापा श्रीवास्तव का स्वर्गवास हो जावेगा तो किरायेदार मकान खाली नहीं करेग और फिर मकान बिक नहीं सकेगा। पर उनका इस मकान से क्या लेनदेन। मि० श्रीवास्तव मकान किराये पर देना चाहते हें तो देवे। बुढापे म आदमी की निर्णय लेने की शक्ति भी कमजोर हो जाती है और वह बच्चा के कहने मे बह जाता है। सच है वह सोचता भी है कि उसके मरने पर उसकी पत्नी का बच्चा के साथ ही तो रहना सो बच्चों को खुश रखो। तभी तो श्रीवास्तव ने अपना मकान फिर बच्चो के कहने पर किराये पर नहीं दिया। पर मन मे तो टीस पनपती रही। यह चुभन ही क्या उनकी मृत्यु का कारण भी नहीं बनी ?

× × ×

थोडी ही देर मे मिसेज श्रीवास्तव चाय बनाने रसोई मे चली गई। मेरी पत्नी भी उसी के साथ चली गई। पिचहत्तर-अस्सी वर्ष की महिला अब भी अपना काम व खाना-पकाना कर लेती है। वह अपने तीनो बच्चो के पास कुछ-कुछ महीने साल-दो साल मे चली जाती है। पर अपना ठिकाना उन्होने जयपुर ही बना रखा है जहाँ उनका यह पति का घर है और अब तो उनका भाई भी ऊपर रहता है सो घबराती नहीं है। पति के मरने पर तो वे घबरा गई थी कि अकेली कैसे रहूँगी। वैस उनके आसपास अच्छी कम्पनी है। ताश खेलने, टी वी देखने मे समय बीत जाता है। पूजा पाठ भी करती हैं।

में चाय का इन्तजार कर रहा था कि मैं वापिस पिछली दुनिया मे चला गया।

× × ×

श्रीवास्तव जी की मौत हुए दो माह ही हुए थे। उनका बडा लडका व उसकी पत्नी जानकी आए हुए थे। लडका कहीं काम से गया हुआ था। अपनी माँ को अपने साथ लेने ही आया हुआ था। मैं ओर मेरी पत्नी मिलने गए थे। जानकी व उसकी सास मिसेज श्रीवास्तव अन्दर कमरे मे बैठी थी। हम भी वहीं चले गए। कुछ देर बात हुईं व फिर मिसेज श्रीवास्तव ने हमसे चाय के लिए पूछा और चाय बनाने चली गई। हम उनकी बहू जानकी को थोडा जानते थे। हम पहिले जब वहाँ गए थे तब कई बार वह जयपुर आई हुई होती थी सो मिलना हो जाता था। मिसेज श्रीवास्तव थोडी देर मे पहले पकौडी बनाकर दे गई। हम दोनो व जानकी वहीं बैठे हुए बात करते रहे व पकौडी खाते रहे। अधिक बाते मेरी पत्नी व जानकी की हो रही थी। मेरी पत्नी ने जानकी से कहा कि देखो तुम्हारी सास कितनी अच्छी है पकौडे बनाकर खिला रही है। आगे कहने लगी कि देखो तुम्हे तो बेटी के समान रखती है। सास बहू के रिश्ते अच्छे हा तो क्या कहना। बहू तो बेटी ही होती है। जानकी झट बोल पडी कि बहू कभी बेटी नहीं हो सकती हद से हद बेटी के

समान कह सकते हो। वह आगे बोली कि सास बहू के रिश्ते तो औपचारिक ही होने चाहिए।

मैं तब भी सोच रहा था कि देखो ऐसी बहू के साथ मिसेज श्रीवास्तव कैसे रह पावगी चाहे लडका भला हो। हम तो मिसेज श्रीवास्तव के पति के ही मित्र थे न कि उनकी बहू जानकी के और मिसेज श्रीवास्तव से ही मिलने आए थे। फिर भी उनकी बहू जानकी चाय बनाने के लिए नहीं उठी और वहीं बैठी रहीं। यही नहीं वह तो हमारे साथ बैठकर पकौडी भी खा रही थी जो कि मिसेज श्रीवास्तव बना रही थी।

उस दिन जब वापिस घर पर लौट रहे थे तो मैंने इस बार म अपनी पत्नी से कहा। तो वह बोली कि जानकी तो अपनी सास के मित्रा के साथ बात ही तो कर रही थी। आज की बहु तो इतना कर ले इसी मे अपने कर्त्तव्य की इति श्री मान लेती है। यह भी बडी बात है, नहीं तो वह अलग कमरे म जाकर बैठ जाती। मैं सोचता रहा कि देखो जमाना कहाँ से कहाँ जा रहा है।

× × ×

थोडी देर मे मिसेज श्रीवास्तव चाय व कुछ नमकीन लेकर आ गई। हम चाय पीते रहे और बातें करते रहे। थोडी देर मे मिसेज श्रीवास्तव के देवर, जो जयपुर मे रहते हैं, की पुत्र वधु माधुरी आ गई उनसे मिलने। माधुरी बडी हँसमुख थी। उसके चेहरे से माधुर्य टपक रहा था। वह उनसे मिलने आई थी। बडे आदर से बाते कर रही थी। मिसेज श्रीवास्तव ने उससे पूछा तुम भी चाय पी लो। कहने लगी ताईजी अभी पी लेगे, क्या आप भी लगी। मिसेज श्रीवास्तव चुप हो गई। हम चाय खत्म कर चुके थे। उठने लगे। माधुरी बाली कि अकिल, आन्टी आप जरा सी देर ठहर जाओ मैं अभी और चाय बना के लाती हूँ, अकेली थोडी पीऊँगी। हम कुछ कहते इससे पहले वह चाय के जूँठे बर्तन उठाकर रसोई मे ले गई और थोडी देर मे चाय बनाकर ले आई। हम फिर चाय पीकर धन्यवाद दे घर लौट आए।

रास्ते में पत्नी से कहने लगा कि देखो माधुरी कितनी अच्छी बहू है और एक जानकी है मिसेज श्रीवास्तव की बहू। पत्नी बोली कि मिसेज श्रीवास्तव के देवर—ये लोग-जयपुर ही रहते हैं और अच्छे लोग है तो इनकी आपस मे अच्छी पटती है। यह बात जानकी को ही नहीं, मिसेज श्रीवास्तव की दूसरी बहू अनुराध को भी अच्छी नहीं लगती। कहने लगी कि मिसेज श्रीवास्तव ने एक फन्कशन मे माधुरी को कुछ काम का नियन्त्रण दे दिया था तो अनुराधा को बडा बुरा लगा था और वह चुभन अब भी अपने मन मे सजोये बैठी है। मिसेज श्रीवास्तव रसोई में ऐसी ही बाते कर रही थी। मैं सोच रहा था देखो मिसेज श्रीवास्तव का देवर भी कितना भला है। श्रीवास्तव जी के स्वर्गवास के कुछ

दिनो बाद जब बच्चे वापिस जाने लगे और मिसेज श्रीवास्तव उनक साथ नहीं जाना चाहती थी तो उनके देवर न ही बच्चो से कहा था कि ये नहीं जाना चाहती तो क्या जबरदस्ती करते हो, हम दोना पति-पत्नी यहाँ आकर कुछ दिन रह जावेगे और फिर आकर रह भी गए थे और अब भी वे आते रहते हैं। माधुरी भी तो उनकी बहू ही है जो मिसेज श्रीवास्तव से मिलने आई थी। मिसेज श्रीवास्तव आज भी अधिक जयपुर मे रहती है। हम भी उनसे मिलते रहते हैं। उनके देवर उनको पूरा सम्मान दे उनकी देखभाल करते रहते हैं। पुरानी पीढी व नई पीढी का दृष्टिकोण कितना भिन्न है। पर सबका नहीं। आधुनिकता की चपेट मे जो आ गए वे अवश्य अपने सस्कारो को भूल गये। तभी तो श्री ईश्वरचन्द्र श्रीवास्तव को उनके बच्चो की बात चुभ गई कि मकान किराये पर मत देना और यह चुभन, यह टीस उन्हे अन्दर खोखला करती रही और शायद उनकी मृत्यु का कारण भी बनी।

❑❑❑

8. समझ का फेर

कमलेश से मिलन कल गया तो मैं उसे देखकर हैरान रह गया। मैं अमरीका से 6 माह बाद कल सुबह ही लौटा था। लडकी वहाँ है सो जाना पडा। सुख व आनन्द तो अपने देश मे ही मिलता है। मित्रा से मिलने म तो और ही मजा है। सब आप बीती सुना देते हैं। सबका मन हल्का हो जाता है। जार-जोर ठहाके लगाकर हँसते हैं। कमलेश तो कभी-कभी दु खी हो जाता था। घर गृहस्थी का चक्कर कभी आदमी मित्र से भी नहीं कह पाता। पर वह मेरा अतरग मित्र है सो सब बता देता था।

पर कल मैंने जाकर घण्टी बजाई। दरवाजा खुला था सो अन्दर चला गया। बच्चे की तुतलाती आवाज सुनाई दे रही थी। 'चल मेरे घोले चल चल तिक तिक चल'। दखा था तो कमलेश की पीठ पर उसका पोता बैठा था और वह घोडा बना घुटना के बल वहाँ ड्राईंग रूम मे चक्कर काट रहा था। पाते के हाथ मे रस्सी का चाबुक सा था जिसे वह उसके मार रहा था। मुझे उसे देख हँसी आ गई। वह भी हँस पडा। बोला बैठ मैं अभी आया और वह फिर घोडे की तरह हिनहिनाता सा कमरे में चक्कर काटने लगा। उसका पाता उसकी पीठ पर बैठा चाबुक मारता रहा और जोर से कहता रहा 'औल तेज चल, औल तेज चल'। थोडी देर म कमलेश पोते से छुट्टी पा आ गया। पोते की आया आ गई थी और वह उसे दूध पिलाने ल गई। पोता तीन साल का हो गया था। बडा प्यारा बच्चा था। मैंने उसके साथ कमलेश को खेलते और इतना आनन्दित होते पहली बार देखा था। वह मेरे पास आकर बेठकर बोला, देखा मेरा पोता कितना शेर है, कैसे मुझे भगाता है। कहने लगा, अरे यार बडा मजा आता है। अब तो मेरे जीवन का नक्शा ही बदल गया। रोज सवेरे व शाम तो पोता आ ही जाता है। बीच मे भी दिन मे कभी आ जाता है। मैं थका होता हूँ तो मैं ही उसे बुला लेता हूँ। बडा मजा आता है। सब थकान दूर हो जाती है। मैं मन म साच रहा था कि देखो कैसे परिवर्तन होता है, समय कितना गतिशील है। कमलेश के पिछले 5 साल मेरे मस्तिष्क पटल पर उतर आए।

× × ×

दो साल पहिले की बात है जब मैं कमलेश के घर ऐसी शाम को गया था। कमलेश का पोता उस समय एक साल का होगा। कमलेश ने पोते को गोदी में ले रखा था। मैंने

पहली बार उसे अपने पोते का गोदी मे लेता देखा था। कमलेश का लडका अम्बरीष उसके घर से करीब 7-8 किलोमीटर दूर रहता था। वह तो आता रहता था उसकी पत्नी वीणा कम ही आती थी ता फिर उसका पोता कैसे आता।

कमलेश ने बताया कि उसका लडका अम्बरीष मध्य पूर्व मे काम से गया है और वीणा उसे लेने हवाई अड्डे जा रही थी सो नन्हे मुन्ने को यहाँ छोड गई। अब वे हवाई अड्डे से आने वाले ही होगे। उस दिन भी कमलेश थोडा खुश था। किसी बहाने सही पाता तो पहली बार कुछ घण्टा के लिए उसके पास उसके साथ खेल रहा था। कमलेश की पत्नी राधा भी आ गई। उसने बच्चे से बात करनी चाही पर उसे गोदी म नहीं लिया। फिर रसोई की ओर चली गई। थोडी ही देर मे अम्बरीष व वीणा आ पहुँचे। अम्बरीष ने माता-पिता के चरण छुए। उसके पीछे-पीछे वीणा ने भी थोडा झुककर दोनों के चरण छुए। कमलेश ने तो पूरी तरह दानो को आशीर्वाद दिया पर राधा का हाथ वीणा के ऊपर केवल हल्का सा उठा। लगा दोना सास बहू की आपस मे बनती नहीं। तभी तो व अलग-अलग दूर-दूर रह रहे थे।

कमलेश न अम्बरीष से अपनी यात्रा के हालचाल पूछे व काम क बारे म पूछा। उसने बताया कि जिस काम से गया था सब अच्छी तरह हो गया। इसके तत्काल बाद वीणा ने अम्बरीष से कहा, क्यो चले। अम्बरीष ने हाँ कर दी। उन्ह आए पाँच मिनट ही हुए थे। इतने मे राधा बोली कि बहू खाना तैयार हो रहा है खाकर चले जाना। वीणा बोली, नहीं मम्मीजी, ये इतने दिना बाद लौट हैं, फिर देर हो जाएगी और मैं ता घर पर खाना बनाकर आई हूँ। राधा ने फिर दुबारा नहीं कहा। कमलेश न जरूर कहा। लगता था राधा ने भी बस औपचारिकता मात्र ही कहा था। दो मिनट बाद ही अम्वरीष व वीणा अपने बेटे को लेकर चले गए।

मुझे लगा कि राधा वीणा के तारो की लय को नहीं समझती। पुरानी और नई पीढी के विचारा में, तौर-तरीकों मे, समझ म तो फर्क होगा ही। फिर कोई लडकी दूसरे घर में जाती है तो अपने पुराने सस्कारो को एकदम कैसे छोड सकती है। समय अन्तराल के साथ ही वह उसमे ढल सकती है और फिर वीणा के तारा से नई लय के स्वर निकलने लगते हैं।

पाँच वर्ष पहले जब अम्बरीष की शादी वीणा से हुई। तव कमलेश व राधा बडे खुश थे। कहते थे कि हमें तो बडी सुन्दर, सस्कारो वाली, अच्छे व्यवहार की लडकी मिल गई। पर कुछ महीनो मे ही सब कुछ बदल गया। वही सुशील लडकी अब ना गँवारा हो गई और अम्बरीष वीणा ने अलग घर ले लिया। घर भी दूर जिससे रोज मिलना हो न हा। कवल कभी-कभी ही आना जाना हो। अम्बरीष ने एम ए ही पास की थी। कोई अच्छी नौकरी नहीं लगी तो कमलेश न उसे एक फैक्ट्री लगा दी थी। कमलेश चीफ इजीनियर के पद से रिटायर हुआ था। उसने सेवा मे रहते ही अम्बरीष को सैट कर दिया था।

अम्बरीष के अलग होने के एक साल बाद ही उद्योग में मंदी आ गई था। फैक्ट्री चल तो रही थी पर आमदनी बहुत कम होती थी। अम्बरीष अलग रहता था सो खर्चा भी अधिक होता था। अम्बरीष की अपने पिता से अच्छी पटती थी। बाप-बेटे का रिश्ता था। एक ही लडका था। उसके बहिनों की शादी हो चुकी थी। कमलेश को भी अम्बरीष की चिन्ता थी कि वह क्या नया काम कर सकता है। कमलेश के दिमाग में आया कि खाली जमीन खरीद फ्लैट्स ही क्यों नहीं बनाए जाव। वह चीफ इंजीनियर रह चुका था। सो उसकी काबलियत व 'कान्टैक्टस' इसमें काम आ सकते थे। अम्बरीष योजना सुनकर बडा खुश हुआ। जमीन की तलाश करने लगे। जमीन महँगी थी। कमलेश का खुद का मकान भी करीब 1500 वर्गगज जमीन के थोडे से हिस्से में बना हुआ था। बडा कराने से घर बनाया था कमलेश ने। अपने आराम की भी पूरी व्यवस्था की थी। बाथरूम तक बडे सजावटी थे चाहो तो उनमें सो भी जाओ। अम्बरीष ने वीणा को भी योजना के बारे मे बताया। दोनो की आपसी बातचीत में यह विचार आया कि क्या नहीं अपनी जमीन पर ही फ्लैट्स बनाये जावें। जमीन-मकान तो कमलेश का था। पर अम्बरीष भी तो उसी का बेटा है तो उसकी भी तो यह जमीन अपनी हुई। जब कमलेश को यह विचार बताया तो वह एक बार चौंका। पर जब उसने इस पर गम्भीरता से सोचा तो उसने भी हाँ कर दी पर राधा सकपका गई। वह रूठ गई। कहने लगी कि एक-एक ईंट मकान में अपनी मर्जी से लगाई थी। क्या कोई अपने ही बनाए मकान को तोडता है ? पर कमलेश टस-से-मस नहीं हुआ। उसने कहा कि अगर अपने पैसे के लिए मकान बेचेगे तो इतने रुपये नहीं मिलगे। उसने यह भी कहा कि इन फ्लैट्स मे दो फ्लैट्स हम बाप-बेटे अपनी मर्जी के बना लेगे और पास-पास रह सकेंगे। उसने कहा कि बेटे को भी तो अच्छी तरह सैट करना है तो वह सैट हो जाएगा और यहाँ फ्लैट्स के बाद अन्य जगह फ्लैट्स बना सकेगा। बडी मुश्किल से राधा राजी हुई। थोडे दिनो मे ही वे मकान खाली कर किराए के मकान मे चले गए।

अम्बरीष ने इस जमीन पर मकान को तोड फ्लैट्स का काम शुरू कर दिया। वह अपने पिता से करीब-करीब रोजाना मिल ही लेता था। मैं तो किराये के मकान में भी कमलेश से मिलने जाता तो अक्सर अम्बरीष भी वहीं मिल जाता था। जब तक फ्लैट्स की योजना के बारे मे विचार नहीं हुआ था तब तो वह कम ही आता था। पर इसके बाद तो अम्बरीष कमलेश के यहाँ अक्सर आया करता था। पर वीणा तो यदा-कदा ही तीज-त्योहार पर आती थी और तभी उसका नन्हा-मुन्ना भी।

करीब डेढ साल में फ्लैट्स बनकर तैयार हो गये। दो साल पहिले मैं कमलेश के इसी फ्लैट मे गया था। अम्बरीष ने इन फ्लैट्स में शिफ्ट नहीं किया था और सारे फ्लैट्स बेच दिए थे। हालांकि पहले कमलेश अम्बरीष दोनो ने सोचा था कि अम्बरीष भी इन्हीं फ्लैट्स मे आ जाएगा। तभी तो कमलेश ने अपना मकान तुडवा फ्लैट्स बनाने की सोची

। पर ऐसा नहीं हुआ। वीणा व राधा की आपस म नहीं बनती। पर कमलेश इसम क्या । वह अपना मन मसल कर रह गया। अम्बरीष ने भी उसे कहा कि पापा ये दोना दूर ो तो शान्ति बनी रहेगी नहीं तो कॉलोनी वाले झगडे देखेगे। कमलेश भी समझ गया।

अम्बरीष को बाहर मध्य पूर्व भी कई दिनो के लिए बिजनैस के काम से जाना पडता उस समय उसे राधा व अपने नन्हे-मुन्ने की चिन्ता सताती थी। फिर छोटे बच्चे को ड कहीं जा भी तो नहीं सकती थी। अम्बरीष वीणा को बहुत समझाता था पर वीणा नी सास के पुराने व्यवहार को देख काँप जाती थी। उसका डर ही उसे अपने सास ्र के पास आने से रोकता था।

कुछ माह और बीत गए। अम्बरीष ने वीणा को कहा कि उसे तो रोज पापा से तने जाना ही होता है क्याकि नए फ्लैट्स भी उनके मकान के आसपास ही बन रहे उसने यह भी कहा कि देखो पापा ने अपना मकान तुडवाया था इस विचार से कि हम पास-पास रह सके, एक ही मकान मे न सही। वीणा चुप रहती, कुछ बोलती नहीं। बरीष महसूस कर रहा था कि वीणा पर उसके कहने का असर हो रहा है। वह कभी भी कह दता कि दूर रहने से व्यर्थ का खर्चा बढ रहा है क्याकि उसे साइट पर तो रोज ा ही पडता है। पर जब वीणा से यह कहता कि पापा ने ही तो उसको फ्लैट्स बनवाने लिए काफी पैसे दिए हैं सो उन्ह उनकी बात माननी चाहिए तो वह झल्ला पडती। लिए अम्बरीष ने यह कहना बन्द कर दिया। नहीं तो वीणा कहती कि पैसे की बात है उसके पापा दे देगे। कुछ भी हो। धीरे-धीरे वीणा पर असर होने लगा। उसके भी तो ा है। वह भी बडा होकर ऐसे करने लगा तो क्या उसे बुरा नहीं लगेगा। उसकी समझ आने लगा कि यदि अलग रहते हैं तो सास-ससुर के पास ही दूसरे फ्लैट्स म रहे तो ई बात नहीं। बल्कि उसका नन्हा-मुन्ना कभी अपने दादा-दादी के पास भी जा सकता और वह फ्री हो अपने काम निबटा सकती है, कहीं जाना हो आसपास तो जा भी ती है। अम्बरीष का रोज आने-जाने का समय और खर्चा भी बचेगा। पर जब तक ा राजी हुई सब फ्लैट्स बिक चुके थे। एक व्यक्ति रहने नहीं आया था। कमलेश को इस बात का पता लगा कि उसकी बहू उनके पास अलग फ्लैट म रहने के लिए राजी गई तो उन्होने उस व्यक्ति से सम्पर्क साध फ्लैट अम्बरीष को खरीदवा दिया। बरीष-वीणा फिर आकर इसी मे रहने लगे।

× × ×

मैं अमरीका गया तब तक अम्बरीष-वीणा कमलेश से काफी दूर किराये क मकान हते थे। अमरीका से लौटकर जब कमलेश से मिलने गया तो मुझे पता भी नहीं था कि बरीष-वीणा भी उसक पास ही के फ्लैट मे शिफ्ट हो गए और इसलिए मैं नन्हे-मुन्ने देख हक्का-वक्का रह गया था। मुझे उन दिनों का ख्याल हो आया जब अम्बरीष की ी हुई थी और कमलेश बड़ा खुश था और कल तो वह अपने पोते के साथ खेलता

हुआ और भी खुश था। उसकी पत्नी राधा भी खुश नजर आ रही थी। पर मुझे पता था कि वह तो शराब की आदी है और उसका व्यवहार अपनी बहू के प्रति अच्छा नहीं था तभी तो वह अलग रहने लगी। पर कमलेश कह रहा था कि बहू क्या पास के फ्लैट में आई राधा ने शराब पीना छोड दिया है। उसने यह भी बताया कि वीणा भी अक्सर आ जाती है और अपनी सास के साथ बाते करती हैं और राधा भी अब तो नरम हो गयी है। थपेडे मनुष्य को समझ दिला देते हैं। समय की मार से ही राधा को बेटे-बहू से बिछुडने का अहसास हुआ और अब तो पोता हो गया जिसे खिलाना उसे व कमलेश दोनो को बडा अच्छा लगता है। उनकी तमन्ना पूरी होते देख वे बडे खुश हैं। वीणा भी समय के साथ बदल गई, नम्र तो वह पहले ही थी। पर पहले तत्काल सास को जवाब दे देती थी जैसा उसे सही लगता। पर अब उस समय नहीं, बाद म बता देती है बुरा लगने पर। सास को भी समझ आ गई। बहू अलग रहती है। उसे बुरा भला कहेगी तो उसका पोता भी उससे दूर होगा। सब समझ का फेर है। समझ आने पर सब सही हो जाता है और सब ओर सुख व आनन्द ही नजर आता है। ऐसा ही कमलेश के घर मे मैंने कल देखा।

□□□

9. उसने सुना था

सन् 1978 की बात ह। मैं जयपुर म एक वित्तीय सस्था म ऊँचे पद पर था। कुछ माह पूर्व ही लगा था। मैं सुधारवादी रहा हूँ व पूर्णत ईमानदार। सस्था म कार्य तत्परता से व सही ढग से हो इसके लिये उन सबस मिलता था जो समय लेकर या अन्यथा मिलने आते थे। एक दिन एयरफोर्स के एक रिटायर्ड अफसर मिलन आये। स्लिप पर उनका नाम एस पी बाडिया लिखा हुआ था। वे अन्दर मरे कक्ष म आये तो देखा कि एक सूटेड-बूटेड हैंडसम व्यक्ति हे जो कडक भी नजर आए। बैठते ही उन्होने अपनी गाथा शुरू की और अपने बर्फ-फैक्ट्री के लिए ऋण नहीं मिलन की समस्याएँ बताने लगे। यह व्यक्ति भी मेरी उम्र का करीब 40-42 वर्ष का था। मैं उस व्यक्ति को देखते ही 25-30 वर्ष पीछे चला गया, मुझे ऐसा रिफ्लैक्स हुआ अचानक। सन् 1948-52 मे मरे साथ स्कूल म मेरी कक्षा मे सूर्यप्रकाश पढता था वह मेरा अच्छा मित्र था। मुझे लगा कि यह वही सूर्यप्रकाश है। चेहरा तो बिल्कुल बदला हुआ था पर उसक चेहरे के मूल ढाँचे से मुझे यही आभास हुआ। मैंने उससे पूछा कि क्या तुम सूर्यप्रकाश हो और बीकानेर के हो। वह कहने लगा कि 'यस आई एम एस पी बाडिया एण्ड कम फ्रोम बीकानेर दैन व्हाट, यू सोल्व माई प्रोब्लम'। मैंने उससे कहा कि तुम्हारी समस्या का ता मैं निदान निकालूँगा पर तुम पहले यह बताओ कि क्या तुम बीकानेर मे हनुमानजी के मन्दिर के पास रहते थे क्या तुम्हारे पिता का नाम ब्रह्मप्रकाश है जिनकी वहाँ कारो का शॉप थी। उसने कहा 'यस यस पर इससे क्या'। मैंने उससे फिर कहा कि सूर्य क्या तुमने मुझे पहचाना। फिर तो वह हक्का-बक्का हुआ और कुछ समय मेरी तरफ गौर से दखता रहा पर मुझे पहचान नहीं पाया। उसके इस प्रकार मेरी तरफ देखने पर मैंने उससे कहा कि में तो प्रेमप्रकाश हूँ तुम्हारा बचपन का साथी, क्लास फैलो। फिर तो वह बडा सकपकाया। बोला यार 25-26 वर्ष बाद मिले हैं कैसे पहचानता, मैं सोच भी नहीं पाया तुम्हारी बाबत। मैंने उससे कहा कि देख मैंने तुम्हे देखते ही भाँप लिया और तुम्हारा तो काम था न कि मेरा, फिर तुम मुझे क्यों नहीं पहचान पाये ? बोला यार माफ कर पता नहीं क्यों मुझे ध्यान नहीं आया।

बात करते-करते मैं और सूर्य बचपन के दिनो मे चले गए और वर्तमान को भूल उन गलिया म, उन गलियारो मे उन रगीनियो म, उन शरारतो म डूब गए जो दिन हमने एक

आकाश म चाँद पृथ्वी पर आकर अपनी चाँदनी बिखेर रहा हो। मैं उसका हाथ देखने के बहाने उससे सटा बैटा हुआ उसका हाथ अपने हाथ में लिए हुए धीरे-धीरे सटा सहला रहा था। उसे भी अच्छा लग रहा था। तभी तो वह मेरे समीप बैठती थी और मेरे आने का इन्तजार करती थी जब मैं बीकानेर मे होता। मैं भी अब सूर्य से मिलने के बजाय चाँदनी से मिलने म ही दिलचस्पी ज्यादा रखता था। हम दोनो हाथ मे हाथ लिये हुए थे कि अचानक सूर्य घर मे आ गया। उसे शायद कुछ अच्छा नहीं लगा पर वह कुछ कह नहीं सका। फिर हमने साथ खाना खाया और मैं फिर चला गया। चाँदनी भी मुझे दरवाजे तक छोडने आई और बाई-बाई हुई।

कुछ माह बाद फिर मैं बीकानेर गया। सूर्य से बात हुई तो उसने मुझे खाने को कहा और मैंने झट स्वीकार कर लिया। मैं तो जल्दी पहुँच गया पर सूर्य नदारद था। चाँदनी रसोई मे व्यस्त थी पर झट रसोई को समेट मेरे पास आकर बैठ गई। हम दोनो बाते करने लगे। चाँदनी का असली नाम सजना था। प्यार से सूर्य उसे चाँदनी बुलाने लगा था। वास्तव म थी भी लावण्य पूर्ण। उसके कपोलों से मधुरस की मीठी-मीठी भीनी-भीनी रसधारा प्रवाहित होती थी। उसे तो देखते ही बनता था। कौन उसे देख मुग्ध नहीं होगा। मैं भी उसे चाहने लगा था पर शादीशुदा होने से दूसरी शादी तो नहीं कर सकता था। वह मेरी सजनी हो गई थी। उसे मैं सजनी ही पुकारने लगा था और वह मुझे प्रेम, पर अकेले में ही। डर रहता कि कहीं सूर्य आकर बुरा नहीं माने। उस दिन सजनी ने जीन्स और टॉप पहन रखा था, ब्लू रग की जीन्स और आसमानी रग का टॉप। बडी प्यारी लग रही थी और ऊपर से अधकटे खुले बाल चाँदनी की रोशनी में बादलों को दर्शाते थे। मैं उसे एक टक देखता रहा। वह भी मुझे देखने लगी। मैं उसके सामने चुप खडा था, फिर बोला सजनी क्या बात है, आज किसको घायल करने वाली हो। वह शर्मा गई और बोली प्रेम तुम जो आ रहे थे। झट हम दोनो एक-दूसरे के गले मिल गए और मैंने उसे और उसने मुझे बॉहपाश में बाँध लिया। हम दोनो अकेले जो थे पर अपनी सीमा भी जानते थे। हमारा प्रेम यहीं तक सीमित था। हम इसी मे आनन्द लेते थे। फिर सन्तुष्ट हो आपस में बाते करते रहते, अपनी गाथा गाते रहते या एक-दूसरे को निहारते, सहलाते रहते और डूब जाते उस रस-रग में। कहने लगी प्रेम सचमुच तुम बडे अच्छे हो, अपनी मर्यादा नहीं खोते। वह आगे बोली देखो सूर्य तो समझता ही नहीं, शक्की मिजाज का है, तुम्हारे से मेरा मिलना भी उसे गँवारा नहीं। वह नहीं चाहता कि मैं किसी मर्द से मिलूँ। वह कहने लगी कि यह तो बिल्कुल ठीक नहीं, मर्दों से बात तो करनी ही पडती है और भिन्न सैक्स वाले से बात करते हो तो उसका मजा अलग से ही है। मैंने उससे कहा कि सूर्य मेरा अच्छा दोस्त है, मैं उसे समझाऊँगा पर उसकी इच्छा का भी तुम ध्यान रखो, नहीं तो कहीं अनबन नहीं हो जाये। तुमने तो उससे प्रेम किया है और परिवार वालो के विरुद्ध शादी भी फिर इसका ध्यान तो रखना ही होगा। वह कहने लगी कि देखो तुम मेरी सुनते

हो और मैं तुम्हारी भी चाहे हम थोडे वर्षों से जानते हैं पर वह तो मेरा पति है फिर भी मेरी नहीं सुनता, बस शक करता रहता है। मैंने उसे समझाया। फिर थोडी देर में ही सूर्य आ गया और हम तीनो ने साथ ही खाना खाया, चाँदनी ने बाद मे जरूर जोइन किया। फिर मैं और सूर्य बैठे बाते करते रहे। मैंने उसे थोडा कहा जरूर पर वह समझना नहीं चाहता था, या समझा नहीं। उसे मैंने कहा कि तुम दोना बडे अच्छे प्रेमी हो सँभल-सँभल कर साथ रहो, चाँदनी बडी समझदार है और तुम भी, दोना समझदारी से काम लेओ। तुम तो मेरे पुराने मित्र हो इसलिये तुम्हे कह रहा हूँ, चाँदनी तो कम उम्र की है, तुम्हीं मैच्योर हो इसलिये तुम्हे ही ज्यादा समझदारी से काम लेना होगा।

अगले वर्ष फिर मुझे बीकानेर जाना पडा। मैं उसी प्रकार फिर सूर्य के खाने गया पर इस बार शाम को गया, दोपहर मे मेरी मीटिंग थी और वह भी शाम को ही चाह रहा था। चाँदनी खाना बनाने म लगी थी। मैंने और सूर्य ने साथ-साथ खाया, बडा अच्छा खाना था हमेशा जैसा। मेंने चाँदनी को बुलाया भी पर उसने कहा कि पहले आप दोनों को खिला दूँ। खाना खाकर फिर मैं और सूर्य बाते करने लगे। जब जाने लगा और देखा चाँदनी बाहर नही आई तो मैंने सूर्य से कहा कि उसे बुला दे उसने अटपटे मन से बुलाया और मैंने उसे धन्यवाद दिया और चल पडा। कई वर्षों तक फिर मेरा बीकानेर जाना नहीं हुआ। सूर्य और चाँदनी एक बार जरूर आये मेरे घर पर भुजिया देने के बहाने पर ज्यादा नहीं रूक। बस नमस्ते हुई। मैंने चाँदनी को और चाँदनी ने मुझे देखा जरूर निगाहो से पर ज्यादा बात नहीं कर सके। लगता था कि वह किसी झमेले मे है पर कह कुछ नहीं सकी।

समय बीतता गया। सन् 1988 मे मेरा कुछ माह के लिये बीकानेर पदस्थापन हुआ। मैं अकेला ही गया था और सर्कट हाउस मे ठहरा था। मैंने सूर्य का पता किया, फोन नहीं बोला पर मैं कुछ दिन बाद उसके उसी मकान मे पहुँच गया। सूर्य ने ही दरवाजा खोला। उसका लडका मन्नू भी साढे चार वर्ष का हो गया था। वह भी झट बाहर आ गया। सूर्य ने उससे मेरी जान पहचान कराई। पर मुझे चाँदनी कहीं नजर नहीं आई। मैं हक्का-बक्का रहा। खाना भी नौकर बनाकर ला रहा था। उसने मुझे खाने के लिये कहा, डिनर का समय था और मैं उसके साथ बैठ गया। मैंने उससे पूछा तो उसने बडे अटपटे मन से कहा कि चाँदनी तो अपने भाई के यहाँ जयपुर चली गई और बडी लडकी को भी साथ में ले गई। मन्नू की बडी बहन उससे 2-3 वर्ष बडी थी।

मैं जितने सप्ताह बीकानेर रहा शाम को कई बार उसके घर खाना खाने पहुँच जाता था। अधिकतर हम पराठे आलू के, गोभी के, मूली के, बथुए के मैथी के ऐसे बनवाते थे। बडे मजे से खाते और बचपन की बाते करते नहीं अघाते। एक दिन पास मे से बडी बदबू आई तो उसने सूर सागर तालाब की दुर्दशा की गाथा सुनाई। कहने लगा कि यह बरसाती साफ पानी का तालाब होता था और आज घरों के सीवरेज लाइन के गन्दे नालों का तालाब है जो चारों तरफ बदबू व मच्छरों को फैलाता है। हम जमाने को कोसने लगे और इस दुर्दशा के लिए जिम्मेदार अधिकारियों को।

सूर्य कहने लगा कि समाज भी तो ऐसा हो गया है, कहाँ 'ईमानदारी' बची है, सब ाह गन्दगी है बिना रिश्वत के काम ही नहीं चलता। कहने लगा कि मैं तो एयरफोर्स यहाँ बिजनेस करने आया था पर मुझे क्या पता था कि इतनी मुश्किल होगी। मैंने कहा : सूर्य देखो कुँए म ही भाँग पडी है, केवल कुछ ईमानदार हैं और उसी ढाँचे के कारण : समाज टिका हुआ है। अधिकारी ईमानदार हो तो वह भ्रष्टाचार को न्यूनतम जरूर कर कता है, इसका मिटना तो बडा मुश्किल है। राजनेता भी भ्रष्ट हो गए हैं और धिकारियो को दबाते रहते हैं। पर उन्हे पता रहता है कि कौन ईमानदार है और उससे तत काम नहीं करवा सकते। परन्तु सरकार को सोचना होगा कि जहाँ आज आदमी से ट्रासपोर्ट, उद्योग वालो से सरकार का काम पडता है वहाँ कैसे भ्रष्टाचार को मिटाया जा कता है। देखो छोटी सी बात है। मैं बसो के परमिट देने के बारे मे फैसला करता था। येक डिविजन मे हर माह खुली अदालत मे निर्णय लेता था जहाँ सैकडो प्रार्थी होते। : फैसला सुनाने के बाद असली परमिट तो ट्रासपोर्ट का बाबू बनाकर छोटे अधिकारी से री कराता था और उसे देर रात बेठकर काम करना पडता था जिसके वह पैसे लेता था। दे कार्यालय समय के बाद काम करने पर प्रत्येक परमिट जारी करने की सरकार फीस गा दे तो उसमें से कुछ हिस्सा उस कर्मचारी, छोटे अधिकारी को दिया जा सकता है। सपोर्टर को उस दिन परमिट नहीं मिले तो उसका एक दिन खराब हो जाता। जैसे अब सी को पासपोर्ट जल्दी जारी करवाना है तो उसके लिए अधिक राशि जमा करानी डती है। यानी 'स्पीड' के पैसे देने होते हैं। मैं कहने लगा कि देख हमने वित्तीय सस्था यह तय कर रखा था कि एक माह मे प्रार्थना पत्र को तय कर दिया जायेगा और ऋण वीकृत होने पर एक सप्ताह मे आनुपातिक वितरण कर दिया जायेगा। पर फिर भी लोग हले चाहते है तो नीचे वाले 'स्पीड' के लिए रिश्वत लेते ही हैं। सिस्टम बनाने से ष्टाचार कम जरूर होता है। जैसे वित्तीय सस्था मे पहले प्रावधान था कि ऋण डॉक्यूमैण्ट्स को एक्जिक्यूट कराने की दिनाक से वार्षिक ऋण भुगतान की किश्त ली ायेगी। इसलिये ऋणी अपनी फैक्ट्री लगा फिर मैनेजर कानून के चक्कर लगाते रहते ौर वह उनसे पैसे लेता। इसका सुधार हमने किया और तय किया कि ऋण के प्रथम कश्त के वितरण से भुगतान तय हागा और यह वार्षिक के बजाय त्रैमासिक किश्तो मे तया जायेगा। इससे ऋणी को आराम हो गया। वह ऋण स्वीकृत होने पर तत्काल डॉक्यूमैण्ट्स एक्जिक्यूशन के लिए दे देता और कानून शाखा के पास समय भी लगे तो से परेशानी नहीं होती। उसे इसी प्रकार आमदनी के साथ-साथ त्रैमासिक ऋण देने से ासानी हो गई। इस प्रकार अधिकारी सजग हो तो सिस्टम में सुधार कर सकता है। सूर्य कहने लगा कि प्रेम देख तुम्हारे जैसे कितने अधिकारी हागे। मैंन कहा कि यही तो वेडम्बना है। इसके लिए जन आन्दोलन की आवश्यकता है तभी सुधार हो सकता है। ाजनेता भी भ्रष्ट हैं। भ्रष्टाचारी, चाहे वह राजनेता हो अधिकारी या कर्मचारी हो, जेल

की हवा खानी पडे और कोडे की सजा भी हो तो सुधार हो सकता है। भ्रष्ट राजनेता को जनता हटा दे या नए चुनाव मे न आने द तो इसका असर भी व्यापक होगा। सूर्य कहने लगा कि यार तेरी बात तो अच्छी व सही लगती है पर अधिकतर तो अपने धन्धे में परिवार मे फँसे रहते हैं इसलिए जन आन्दोलन कैसे कर। फिर हम और बातें करने लगे।

बाते करते-करते चाँदनी की बात भी आ गई। सूर्य कहने लगा कि वह स्वतन्त्र होना चाहती थी आर्थिक रूप से। सूर्य की बर्फ की फैक्ट्री तो ठीक-ठीक ही चलती थी पर आमदनी कम ही थी और चाँदनी इसमे इजाफा करने के लिए धन्धा करना चाहती थी। उसके घर वालो ने, खासकर भाई ने, जो उसकी शादी के खिलाफ थे, जयपुर मे ही ड्रेसों के बनाने व बचने का काम चाँदनी का करने के लिये कहा और इससे उसको थाडा आमदनी होने लगी। वे उसे और भडकाने लगे और चाँदनी को सूर्य से मन-मुटाव होने लगा और अपनी कमाई, हालाकि थोडी ही थी, उसे अच्छी लगने लगी। वह जयपुर छोडकर आना नहीं चाहती थी नहीं तो जो कमाई हो रही थी खत्म हो जाती। सूर्य बीकानेर छोडकर नहीं जा सकता था। वह जब भी अपने बच्चे मन्नू को लेकर जयपुर जाता तो मन्नू तो चाँदनी के पास, जो अपने भाई के साथ रहती थी और वहीं उसकी माँ रहती थी, चला जाता पर सूर्य को वहाँ ठहरने नहीं दिया जाता। सूर्य और कहीं ठहरता और केवल मन्नू को छोडने व वापिस लने के लिये जाता। चाँदनी से तो उसकी बात थोडे ही होती। सूर्य ने मुझे अपनी व्यथा सुनाई तो म अवाक रह गया। मुझे झट समझ में आ गया कि यह सब करतुत चाँदनी के घर वाला की हे जिन्हाने इस प्रकार उसे लुभाया। मैंने मन मे यह जरूर सोचा कि चाँदनी मेरी बात सुन लेगी। मैंने सूर्य से कहा कि तुम अब जब जयपुर आओ तो चाँदनी को लेकर मेरे घर आओ, मैं उसे समझाने की कोशिश करूँगा। मैं कुछ सप्ताह मे ही वापिस पदस्थापन पर जयपुर आ गया।

मुझे जयपुर वापिस आए एक-डेढ माह ही हुआ था कि अचानक सूर्य व चाँदनी मरे घर आ गये एक शाम को। मैं हक्का-बक्का जरूर हुआ पर अन्दर से बडा खुश कि चाँदनी से मिल सकूँगा और शायद मैं दोना का मिलान करा दूँ। पाँच-दस मिनट के बाद चाँदनी झट आग-बबूला हुई और मुझे कहने लगी कि आपने सूर्य को क्या कहा जो इन्हाने मुझे इतना भला-बुरा कहा और ऐसा पत्र लिखा। मैंने उससे कहा कि मैंने तो ऐसा कुछ नहीं कहा और जो भी कहा तुम दानो के अच्छे के लिये कहा। फिर मैंने सूर्य से कहा कि मित्र मैं चाँदनी को अन्दर ले जाकर बात करता हूँ। उसके हाँ कहने पर मैं चाँदनी को मरे बैडरूम मे ले गया। मेरी पत्नी बाहर सूर्य से बाते करती रही और मैंने चाँदनी को शान्त करते हुए अन्दर कमरे म उससे बात शुरू की। उसका चेहरा जो बाहर तमतमा रहा था वह अन्दर एकान्त मे मेरे सामने शान्त हो गया। उसने कहा यार असल में ता मैं तुम्हारे से मिलने ही आई थी। उसने सूर्य की चिट्ठी मुझे दिखाई। मैंने उसे पढी। सूर्य ने चाँदनी को बड़ी अनर्गल बातें लिखी थी। यहाँ तक कि डाइवोर्स की बात भी लिख दी थी। मेरे

दृष्टिकोण क बारे म तो यही लिखा था कि मैं भी इस बात से नाराज हूँ कि चाँदनी अपनी लडकी को लेकर जयपुर म अलग धन्धा कर रही हूँ आर यह उसके लिए शोभा नहीं देता और मैंने कभी नहीं सोचा था कि वह ऐसी निकलेगी। चाँदनी मरे पास बेठने से ही अपने स्वाभाविक रूप मे आ गई थी। उसके चेहरे पर उदासी जरूर छाई हुई थी। मैंने उसे सहलाते हुए उसके आँसूआ को जैसे ही पाछा वह झट मुझसे लिपट गई। अपने को रोक नहीं पाई। हम इतने समय बाद जा मिले थे। वह मेरी सजनी जो बन गई थी और मुझे चाहती भी बहुत थी। उसे मुझसे मिलना अच्छा लगता था और मुझे भी उससे मिलना। थाडी देर मे वह शान्त हो गई। मैंने उसे समझाया कि मैंने कोई ऐसी बात नहीं कही, केवल यथार्थ ही बताया था जो उसकी जयपुर मे कमाई होती थी उसका भी ब्योरा बताया कि अभी तो तुम भाई क साथ रहती हो क्योकि तुम्हारी माँ जिन्दा है पर बाद मे उसके मरने पर कौन तुम्हे पूछेगा फिर तो तुम उस थोडी सा कमाई पर कैसे जिन्दा रहोगे अपनी लडकी क साथ और फिर क्या तुम अपने लडके से प्रेम नहीं करती ? तुम्हे पति न कुछ कह दिया तो इतना बुरा मत मानो, वहभी अब तैयार है कि तुम बीकानेर नें ही कुछ काम कर लो। वह मेरा अच्छा मित्र है, पुराना मित्र और तुम मरी सजनी, तुम मेरी बात सुन लो, अपने पति व बच्चो के साथ बीकानेर ही अपने घर म रहो। तुम समझदार हो, मेरी जरूर सुनोगी, मैं तुम्हारा सखा जो ठहरा तुम्हारा अच्छा ही चाहूँगा। क्या सजनी सुन रही हो ना ? और वह मुस्करा दी और फिर हम दोनो गले मिल गये। एक-दूसरे से फिर लिपट गये, भावों से ओतप्रात जो हो गये थे। मैं चाँदनी से शिकायत करने लगा कि वह जयपुर रहते हुए मुझसे मिलने क्या नहीं आई, वह फोन ही कर देती तो में उसके यहाँ चला जाता। वह ठिठक गई, कहने लगी यार चाहती तो बहुत थी पर मन म झिझक थी कि कहीं तुम्हारी पत्नी बुरा नहीं मान ले और कहीं अनबन न हो जाये। पेम, देखो मेरा तुम्हारे मिलने से मरा पति भी तो रूठ गया था, जभी तो में बीकानेर मे पिछली बार तुम्हारे से ज्यादा नहीं मिल सकी, मन मसोस कर रह गई। मैं बाला तो फिर क्या अपना मिलना बन्द हो जायेगा। वह बोली कि नहीं तुम आओगे तो जरूर मिलूँगी, चाहती भी हूँ तुम्हे पर मैं तो नहीं आ सकती, अबला जो ठहरी। में थोडा हक्का-बक्का हुआ, मन न कहा कि अब तो अपनी सजनी से मिलना भूल जा। में रूँआसा सा हो गया। मैंने कहा तो फिर मैं जिन्दा कैस रहूँगा। वह बोली कि धत् एसा क्या कहते हो ? मैं नहीं आ सकी तो तुम जब बुलाओगे आ जाऊँगी ओर तुम जब भी याद करोगे मैं तुम्हारे सामने खडी नजर आऊँगी ओर फिर हम हँसी-खुशी कमरे से बाहर निकले। बाहर सूर्य ने पूछा तो मैंने बस इतना ही कहा कि अच्छी तरह घर जाओ, तुम दोना तो प्रेमी हो।

समय बीतता गया। सूर्य ने मुझे कुछ नहीं बताया पर मेरे एक-दूसरे मित्र, जो बीकानेर रहता था और सूर्य को भी जानता था, ने बताया कि सूर्य और चाँदनी बीकानेर में ही हैं और उन्हाने मकान व फैक्ट्री बेच दी है और नया घर ले लिया है। मैं करीब 6-8

माह बाद बीकानेर गया तो मेंने नये घर पर टेलीफान कर सूर्य के घर शाम को खाना खाने गया। चाँदनी शुरू मे आई पर फिर खाना बनान म व्यस्त हो गई। मैंने और सूर्य ने खाना खाया बडा स्वादिष्ट था। मन्नू और उसकी बहन भी वहाँ थे। उनसे मुलाकात हुई मन्नू बडा प्रसन्न था उसकी माँ जो उसके साथ है। सूर्य कहने लगा कि यह सब तर कारण हुआ जिससे चाँदनी वापिस आ गई। मेंने कहा कि ईश्वर को धन्यवाद द कि चाँदनी ने मेरी सुन ली। में वापिस आने लगा तो मैंने कहा कि चाँदनी को बुलाओ तो यार, मैं एक बार और मिल तो लूँ उससे फिर पता नहीं कब मिलना होगा। उसने बुलाया पर चाँदनी झट आकर चली गई। में तो उसे बस धन्यवाद दे सका। शायद वह मरे सामने अधिक देर रहने की हिम्मत नहीं कर सकी। या कौन जाने सूर्य को भी यह पसन्द न हो कि वह मुझसे ज्यादा मिले। खैर कुछ भी हो मैंने अपने मन मे सन्तोप किया कि वे दोनो साथ-साथ रहे हें।

मुझे अब सूर्य व चाँदनी से मिले 10 वर्ष से अधिक हो गये। पर मिलने की इच्छा जरूर रहती है। जयपुर म उसके एक रिश्तेदार से सूर्य का मोबाइल टेलीफोन न० लिया था। वह दिल्ली मे रहता है। पिछले वर्ष दिल्ली गया तो उसके मोबाइल पर फोन किया, काफी देर बात हुई, घर का पता भी लिया पर जा नहीं सका आर अपनी सजनी चाँदनी से भी न मुलाकात हुई ओर न बात हो। पर चाँदनी ने मेरी सुन ली और अपने पति के साथ रहने लगी इससे बडा सन्तोप है। उसे जब भी मैं याद करता हूँ वह झट मेरे, आँखो के सामने आ जाती है और मैं उससे ढेरों बात करता हूँ। चाहे इसे दिवास्वप्न ही कहे।

अभी हाल ही की बात है। मेरी पत्नी जयपुर से बाहर गई हुई थी। मैं अकेला लेटा हुआ था। रात के 10 बजे थ। सोने जा रहा था पर नींद नहीं आई पर मैंने आँखें बन्द कर ली और लेटा रहा। मेरी चाँदनी मेरे सामने आई। कहने लगी, प्रेम तुम तो मरे हो, मेरे चन्दा हो गमगीन क्यो होते हो, तुम अकेले थे तो में झट आ गई देखो तुम्हारी चाँदनी चारा ओर चाँदनी फेला रही है, उठो मिलो गले मुझसे। वह आगे कहने लगी, प्रेम तुम चन्दा हो पर चन्द्रमा की रोशनी तो सूय से ही आती है और में भी तुम्हारे से सूर्य के कारण मिली पर में हूँ तुम्हारी चाँदनी, तुम मेरे चन्दा जो ठहरे। मैं जेसे ही उससे गले मिलने के लिये अनायास उठा, देखा कि मैं तो अकेला हूँ और मेरे पास कोई नहीं है। फिर भी मुझे अच्छा लगा कि देखो चाँदनी मरे पास आई, स्वप्न म ही सही और वह हमेशा मेरे अकेलेपन को दूर करती है मेरी जो ठहरी। वह बहुत सी बार रात मे भी फिर मेरे सपनो मे आती है और हम तरह-तरह की अठखेलियाँ करते हैं जो वास्तव मे अपनी मर्यादा मे रहते हुए नहीं कर सके थे और पता भी नहीं कि असल मे अब हम दोनो इस जीवन मे मिल भी सकगे या नहीं। सूर्य के साथ वह हँसी खुशी रहे यही मेरी कामना है।

❑❑❑

10. सबसे बड़ा रुपया

प्रभुदयाल अपने पिता रामदयाल के सबसे बडे बेटे थे। लाला रामदयाल ने ही अपन परिवार मे सबसे पहले पढाई की थी उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त म, अन्यथा उनका पैतृक धन्धा तो किराने का था। लाला रामदयाल ने अर्जीनवीसी भी की और फिर उत्तरप्रदेश से राजस्थान म आकर एक कस्बे म वकालत शुरू कर दी। पैतृक गाँव मे कोई खास कमाई नहीं थी और परिवार निचला मध्यम वर्ग का था। फिर भी लालाजी बडे सज्जन और दयावान पुरुष थे। झट ही किसी की सहायता करने को तत्पर हो जाते। यहाँ तक कि वकालत से जो कमाई होती किसी दिन तो वह घर भी नहीं पहुँचती क्योकि रास्ते में यदि कोई गरीब मिल जाता और माँगता तो उसे अपने घर के खर्चे—खास तौर पर बच्चा की पढाई के लिए—दे देते। इसलिये घर का खर्चा बडा मुश्किल से चलता था फिर भी उन्हाने अपने सबसे बडे बेटे प्रभुदयाल की पढाई पर खूब जोर दिया और उसे राजस्थान से कलकत्ता भेजकर वहाँ की वकालत की डिग्री बी एल करवाई। बी ए तक तो राजस्थान मे ही उसने पढाई की।

वकालत की डिग्री लकर प्रभुदयाल ने जोधपुर जाकर वकालत शुरू कर दी हालाकि उन्ह बडी अच्छी नोकरी कलकत्ता मे ही बडी फैक्ट्री म मिल गई थी। लाला रामदयाल ने प्रभुदयाल से कहा कि देखो तुम्हारे और भी भाई हैं वे अभी पढ रहे हैं, वे तुम्हारे से काफी छोटे हैं और उन्ह आगे भी पढना है इसलिये यहीं राजस्थान मे रहो जिससे तुम्हारे पास रहकर पढ सके। शुरू म नो प्रभुदयाल को शायद कुछ बुरा लगा पर फिर उन्ह स्वय अहसास हुआ कि बात सही है और उन्होने पक्का इरादा जोधपुर म वकालत करने का बना लिया। शुरू मे तो उन्होने फौजदारी मुकदमे भी लिये पर थोडे दिनो म एक घटना के बाद उन्होंने फौजदारी मुकदमे लेना बन्द कर केवल दीवानी मामले ही लिये। असल मे वे भी अपने पिता की तरह सत्य क पुजारी थे और झूँठ नहीं बोल सकते थे और न झूँठी गवाही दिला सकते थे। एक चोर के मामले म उन्होने गवाह व अपनी दलीलो से बचा तो लिया पर मजिस्ट्रेट के यह पूछने पर कि वकील साहब मैं उसे बरी कर रहा हूँ पर आप सच बोलते हैं मुझे क्या नहीं बताओगे कि उसने वास्तव मे चोरी की या नहीं तो बाद मे उन्होने मजिस्ट्रेट के कक्ष म जाकर कहा कि क्लाइन्ट ने चोरी तो

की थी ओर उसके बाद उन्हाने फौजदारी मुकदमे लेने बन्द कर दिये। ऐसा था यह परिवार जो *सत्य का पुजारी था और परिवार वालो की ही नहीं गरीबा की भी सहायता करता था।*

प्रभुदयाल के चार भाई ओर एक बहिन थी। वे सब उन्हीं के पास रहकर जोधपुर में पढे। प्रभुदयाल के चाचा के लडके व लडकियॉं भी वहीं आकर पढे क्याकि उनके चाचा एक गॉंव मे रहते थे। ईश्वर कृपा से प्रभुदयाल के परिवार या यो कहे कि लाल रामदयाल के परिवार पर सरस्वती की अद्‌भुत कृपा थी पर लक्ष्मी की नहीं। सभी प्रभुदयाल के भाई व खुद के बच्चे पढने म वहुत तेज थे। प्रथम श्रेणी तो सामान्य थी और अधिकतर अपनी कक्षा म व बोर्ड की परीक्षा म भी प्रथम स्थान प्राप्त करते थे। प्रभुदयाल का सबसे छोटा भाई मुरारीलाल तो अमरीका भी चला गया था और फिर उसकी अच्छे घराने म शादी हो गई ओर अमरीका ही बस गया। हाँ भारत आता जाता था पर तभी तक जब तक उसके माता-पिता—लाला रामदयाल और उसकी पत्नी—जिन्दा थे। पर रुपया आते ही व्यक्ति का दिमाग फिर जाता है। जब तक लाल रामदयाल जिन्दा थे तो मुरारीलाल थोडी बहुत सहायता कर देता था पर उसके वाद तो उसने बिल्कुल कन्नी काट ली हालाकि वडे भाई प्रभुदयाल क ही पास रहकर पढा था और उन्हाने ही अफसरा को बार-बार निवेदन कर वजीफे पर मुरारीलाल को अमरीका भिजवाया था।

प्रभुदयाल के दो लडके व दो लडकियाँ थी। प्रभुदयाल के भाई बहना व चाचा के बच्चो के रहने के कारण घर का खर्च बहुत हो जाता था। वे अच्छी वकालत कर अच्छा पैसा कमाते थे पर बडी मुश्किल से घर का खर्च चलता था। प्रभुदयाल की पत्नी सीता वास्तव मे बडी भली थी तभी तो अपने देवर व ननदो को बडे लाडचाव से रखती और खाना भी स्वय ही बनाकर दती थी। प्रभुदयाल के चाचा क बच्चो को भी वह अच्छे तरीके से रखती थी। सबको उसने अपने बच्चा की तरह रखा। जैसे ही सबसे छोटा भाइ मुरारीलाल अमरीका गया तो प्रभुदयाल ने शाति की साँस ली और सोचा कि अब वह अपने दोनो लडका पर ध्यान दे सकेगा। बडा लडका मोहन लाल इन्टर मे आ गया था और उस वह इजीनियरिंग म भेजना चाहता था। पढाई मे तो सब अच्छे थे ही। पैसे की तो कमी रहती ही थी। कइ बार तो दीवाली पर भी किराने वाले का उधार नहीं उतार पाते *तो प्रभुदयाल वड दु खी होते और सोचते कि दखो इतना कमाता हूँ पर कुछ भी नहीं* बचता और किराने वाला का कर्ज रह गया। फिर अपनी पत्नी सीता की सोने की चूडियाँ गिरवी रख पैसा ल किराने वाले का उधार चुकाते और तब उन्हे साँस आता। किसी के कर्ज या उधार का बोझ तो वही समझ सकता है जिसने उसे भुगता और जो सही काम करता हो।

प्रभुदयाल न अपने बड लडके मोहनलाल को फिर इजीनियरिंग में रुडकी में प्रवेश दिलवा दिया। वह जानता था कि पैस का कमी के कारण तो वह दानों में से एक को ही इजीनियर या डॉक्टर बना सकता है पर साचता था कि परिवार के हित को देखते हुए

बडे को इजीनियर बना देवे तो वह भी उसके स्वय (प्रभुदयाल) की भाँति परिवार को आगे बढायेगा और अपने छोटे भाई-बहिनो को पूरी सहायता करेगा।

मोहनलाल पढ लिखकर सिविल इजीनियर बन गया। उसे केन्द्रीय पी डल्ब्यू डी में सहायक इजीनियर की नौकरी मिल गई। उस समय उसका छोटा भाई शातिलाल इन्टर पास कर बी ए में आ गया था। प्रभुदयाल को अफसोस था कि वह शातिलाल को इजीनियर, डॉक्टर नहीं बना सका। शातिलाल भी पढने मे बहुत होशियार था और उसने एम ए कर प्राध्यापक की नौकरी फिर ले ली। तब प्रभुदयाल को कुछ सकून मिला कि वह भी ठीक पद पर लग गया। तब तक प्रभुदयाल ने अपनी बडी लडकी की शादी कर दी थी। बडी मुश्किल से कर पाया था, पैसे की कमी जो ठहरी। उससे पहले उसने बडे बेटे मोहनलाल इजीनियर की शादी एक बडे घराने मे कर दी थी। मोहनलाल की पत्नी शान्ति शुरू म तो अच्छी थी पर धीरे-धीरे इजीनियर की कमाई देख उसमे पेसे का घमण्ड होने लगा था। प्रभुदयाल को लगता था कि पता नहीं उनके मरने पर परिवार किस ओर चला जायेगा। पर उसे विश्वास था कि उसका बडा लडका मोहनलाल बडा सुशील व परिवार को बनाये रखने वाला है और उसके बाद भी सब मजे मे रह सकेगे।

छाटे लडके शातिलाल के प्राध्यापक बनने के बाद प्रभुदयाल को पता लगा कि उसे एक साथी लडकी से प्यार हो गया। फिर क्या था प्रभुदयाल ने झट शातिलाल की शादी उस लडकी से कर दी। शातिलाल भी वहीं जोधपुर मे प्राध्यापक था और वह प्रभुदयाल के साथ ही रहता था। शादी के बाद भी वे वहीं रहे। प्रभुदयाल को बडा अच्छा लगा। उसने सोचा कि अब तो सब अच्छी तरह होगा। उस समय प्रभुदयाल थोडा बीमार रहने लगा था और इससे वकालत भी कम हो गई थी। सबसे छोटी लडकी उमा की प्रभुदयाल को चिता सताने लगी थी कि वह मर जायेगा तो उसका क्या होगा। पर शातिलाल को अपने साथ देख उसे तसल्ली होती थी।

शातिलाल की शादी के थोडे समय बाद अचानक प्रभुदयाल की तबियत बिगडी और जब तक डॉक्टर को बुलाया उनके प्राण पखेरू उड गये। घर म हाहाकार मच गया। बडा लडका मोहनलाल व उसकी पत्नी व बच्चा भी आ गये, लडकी-दामाद व अन्य परिवार वाले भी। भाई मुरारीलाल तो अमरीका मे था, वह तो नहीं आ पाया या नहीं आया पैसे जो खर्च होते (व्यर्थ मे)। थोडे दिना बाद सब अपनी अपनी जगह चले गये और वहाँ जोधपुर में, प्रभुदयाल के उस किराये के मकान मे, रह गये केवल प्रभुदयाल की पत्नी सीता, छोटा बेटा शातिलाल और उसकी पत्नी और प्रभुदयाल की छोटी लडकी उमा। उमा अपने सबसे बडे भाई मोहनलाल के पन्द्रह वर्ष बाद पैदा हुई थी। वह उस समय बी ए मे पढ रही थी। शातिलाल ने ही सबको सँभाला।

मोहनलाल तो वापिस दिल्ली चला गया था। उसने अपनी माँ को अपने साथ चलने के लिये भी कहा पर वह कैसे जा सकती थी। समय गुजरता गया। मोहनलाल दो साल

बाद ही विदेश मे डपूटेशन पर चला गया। अपनी पत्नी शाति को साथ ले गया पर अपने लडके सूर्यप्रकाश को यहीं भारत म एक अच्छे स्कूल मे, जिसके साथ छात्रावास था, दाखिल करा गया।

उमा के एम ए करने के बाद उसके भाई शातिलाल को उसकी शादी की चिता होने लगी और उसने तलाश कर एक इजीनियर प्यारेलाल से उसकी शादी कर दी। मोहनलाल व उसकी पत्नी तो विदेश मे थे अत वे नहीं आ सके, केवल थोडे से पैसे भेज दिये। शादी अच्छी तरह से हो गई और प्रभुदयाल की पत्नी सीता को बडी शाति मिली। वह कहने लगी कि प्रभुदयाल की आत्मा को बडी शाति मिली होगी और उसने अपने लडके शातिलाल की भूरि-भूरि प्रशसा की। कहने लगी कि मोहनलाल भी होता तो अच्छा होता पर वह विदेश मे है इसलिये नहीं आ सका।

समय बीतता गया। मोहनलाल कुछ समय बाद वापिस भारत मे आ गया। दिल्ली म ही उसका पदस्थापन था। उसका लडका सूर्यपकाश भी बडा हो गया था और उसे भी दिल्ली मे ही इजीनियरिंग मे दाखिला मिल गया। परिवार पर सरस्वती की कृपा तो थी ही। मोहनलाल अपनी माँ सीता को अपने साथ ले गया। पर सीता थोडे समय बाद ही मोहनलाल की पत्नी शाति से दु खी रहने लगी। कोई न कोई बात पर वह कुछ कह देती थी उसे, अपने पीहर का व पति के पैसे का घमण्ड जो था। मोहनलाल बडा सयमी व समझदार था और वह समाधान ढूँढ घर मे शाति ला देता था। पर सीता के मन में शाति की बात, उसके कटाक्ष, चुभते रहते थे ओर वह वापिस अपने छोटे लडके शातिलाल के पास जोधपुर आ गई उसी किराये के मकान मे। मोहनलाल ने तो अपना मकान दिल्ली में बना लिया था। पर सीता ने अपना मन बना लिया था कि वह उनके पास दिल्ली कभी नहीं जायेगी।

थोडे समय बाद ही शातिलाल की पत्नी बीमार रहने लगी, उसे कैंसर हो गया। तब तक उसके एक लडका हो चुका था जो 7-8 वर्ष का था। शातिलाल ने अपनी पत्नी के नाम से एक फैक्ट्री लगाई थी जो उसकी पत्नी ही सँभालती थी और कुछ समय ही वह स्वय भी दे देता था। कैंसर तो मृत्यु तक ले जाती है। कुछ समय म ही वह गम्भीर बीमार हो गई और चल बसी। शातिलाल का सब पैसा बीमारी में खर्च हो गया। बड़ी मुश्किल से वह सँभल पाया उसकी माता सीता जो उसके साथ थी। मोहनलाल व अन्य, जो शतिलाल की पत्नी की मृत्यु पर आये थे धारे-धारे वापिस चले गये। मोहनलाल ने अपनी माता सीता को भी साथ चलने को कहा पर उसने मना कर दिया क्योंकि मन में यह टीस सँजाये थी मोहनलाल की पत्नी शाति के कटाक्षा की और अब तो शातिलाल को भी अपनी माँ की जरूरत थी बच्चा जो छोटा था और उसकी पत्नी का देहान्त हो गया था।

शातिलाल अपनी पत्नी के स्वर्ग सिधारने से बड़ा दु खी था पर करता क्या। उसकी पत्नी की फैक्ट्री थी उसे भी अब केवल उसी को सँभालना था। सब कुछ सोच उसने

प्राध्यापक के पद से त्यागपत्र दे दिया और फैक्ट्री को सँभालने का सोच लिया। फैक्ट्री चल निकली, अच्छी कमाई हुई तो उसने कोटा मे भी वैसी ही फैक्ट्री लगा ली। उसकी माँ भी बडी खुश थी। पाँच साल बाद माँ भी चल बसी। फिर सब इकट्ठे हुए और कुछ समय बाद वापिस चले गये। माँ कुछ खास छोड कर तो मरी नहीं थी सो पिता की भाँति माँ के धन के बँटवारे का भी कोई प्रश्न नहीं था। जो था थोडा सा वह दोनो लडकिया को दे दिया।

समय चक्र है। कुछ समय बाद मोहनलाल के लडके सूर्यप्रकाश ने भी एक कम्पनी खोली। सूर्यप्रकाश की शादी हो गई थी। फिर उसने लौटरी लगाई और उसको जैकपोट मे एक अरब रुपया मिला। एकदम इतना मालामाल होकर उसके होश उड गये। उसने अधिकतर पैसा बैंक व म्युच्युल फण्ड मे लगाया तो ब्याज की आमदनी ही कई करोड रुपये साल की होने लगी। सरस्वती के साथ लक्ष्मी का भी सगम हो गया। पर पैसा किसे घमण्ड नहीं देता। वह अपने को परिवार मे सबसे बुद्धिमान समझने लगा हालाकि किन बडा के भाग्य से उसे यह लॉटरी मिली थी यह बात उसकी समझ से परे थी। यह कोई गाढी कमाई नहीं थी अपने पिता, चाचा व दादा की भाँति। उसकी माँ शाति भी वहुत खुश थी पर वह तो पहले से ही घमण्डी थी और बोलने मे कटु भी। पर मोहनलाल बडा समझदार था और वह अपने भाई व बहनो को पूरी सहायता करना चाहता था जिससे कि वे भी अच्छी प्रकार जीवन व्यतीत कर सकें और उनके बच्चे भी कुछ अच्छे स्तर पर रह। उसे पता था कि उसका छोटा भाई भी पेसे की कमी के कारण इजीनियर नहीं हो सका नहीं तो वह भी उसकी तरह अच्छी प्रकार जीवन-यापन कर सकता था। वह यह भी सोचता था कि उसकी माँ ने कैसे कष्टो मे जीवन बिताया और वह उसके पास रहकर सुख भी नहीं भोग सकी केवल उसकी पत्नी के कटाक्ष बाणो के कारण। वह चाहता था कि लोग तो धन होने पर दान पुण्य करते हैं तो वह क्यो नहीं। कम से कम अपने भाई-बहिनो को ही अपने लडके की लौटरी की आय से कमाये पैसे मे से एक वर्ष की ब्याज राशि ही गिफ्ट मे दे दे तो वे अपने अनुसार उसका उपयोग कर जिन्दगी भर चैन से रह सकगे। पर घर मे उसकी चलनी तो लौटरी के पैसे आने के बाद कम हो गई थी। पत्नी शाति तो अशाति फैलाने म माहिर थी। मोहनलाल मन मसोस कर रह जाता था। वह अपनी पत्नी के व्यवहार को समझ ही नहीं पा रहा था। लडके सूर्यप्रकाश ने नया बडा मकान बना लिया था और वे दोनो उसी के साथ रहने लगे थे। शाति को अपने पोते से भी लगाव हो गया था। डाइनिग टेबल पर सब खाना खाते थे। एक दिन मोहनलाल के भाई शातिलाल का लडका वहाँ आया हुआ था। खाना खाने क लिए जैसे ही मोहनलाल डाइनिग टेबल पर मुखिया की सीट पर बैठने लगा शाति ने झट टोका कि तुम यह क्या कर रहे हो यह तो सूर्यप्रकाश की सीट है। माहनलाल हक्का-बक्का रह गया। सोचने लगा कि मेरे जिन्दा रहते हुए कैसे इसने यह सोच लिया कि मुखिया उसका लडका है।

पर फिर मन मसोस कर रह गया, भाई के लडके के सामने और हेठी नहीं कराना चाहता था। मोहनलाल बडे ही असमजस म रहता था, सोचता था कि उसके चले जाने के बाद तो उसकी पत्नी का उसके व्यवहार के कारण बडा बुरा हाल हागा पर यह कर क्या सकता था।

कुछ वर्षों बाद मोहनलाल के भाई शातिलाल का सितारा डूबने लगा। उसकी फैक्ट्री म घाटा हो गया। नई फैक्ट्री जो लगाई थी और जिसमें करोडों रुपये का खर्चा किया था, उसमे वह सारा पैसा उद्योग म इन्सपैक्टर राज के कारण डूब गया। परिवार में आदर्शों के कारण रिश्वत तो देता नहीं था पर उसके बगैर काम हुआ नहीं। उसने अपने दोस्तों से, कुछ जान पहचान वाला से तीस लाख रुपये और कुछ सामान्यत देने वाले महाजन से बीस लाख रुपये इस प्रकार कुल पचास लाख रुपये लिये थे। उसे ये पैसे वापिस देने थे। महाजन बार-बार तकाजा कर रहा था। उसने सोचा अपने बडे भाई से क्यों न बात करूँ, वह अवश्य सहायता करगे। भाई मोहनलाल ने कहा कि वह उसे सुखी देखना चाहते हैं, इसके लिये पैसे दे दगे वह सूची दे देवे। शातिलाल ने झट सूची माहनलाल को दे दी। पर मोहनलाल का लडका सूर्य व पत्नी शाति अड गई, कहने लगे कि ऐसे कैसे पैसे दे देवे, ऋण वालो को देने की क्या जरूरत है और पैसा ऐसे ही थोडे कमाया जाता है। मोहनलाल बडे असमजस मे आ गया, सोचता रहा कि एक तरफ तो उसके पिता किराने का उधार चुकाने के लिये भी माँ की सोने की चूडियाँ अडाने रख देते थे और एक तरफ उसके पास पैसे होते हुए भी वह अपने भाई को उधार चुकाने के लिये पैसे नहीं दे सकता। बहुत कोशिश के बाद भी जब उसकी पत्नी और बेटा नहीं माने तो मोहनलाल ने शतिलाल को कहा कि यह सम्भव नहीं हो रहा। शातिलाल ने कहा कि कम से कम बीस लाख रुपये महाजन के तो दे दे नहीं तो मुझे मारपीट कर अधमरा कर दगे। मोहनलाल ने सोचने की बात की और कहा कि वह अपनी पत्नी और लडके से बात करेगा। पर वे दोनो जिद पर अडे रहे और नहीं माने, कहने लगे कि अगर वह पैसे चाहता ही है तो शातिलाल अपनी स्व० पत्नी की फैक्ट्री हमारे अडाने रख दे या उसे हमारे नाम लिखकर दे दे। यह शातिलाल को गँवारा नहीं था। शातिलाल ने फिर कुछ दिन बाद मोहनलाल से बात की और विनम्र निवेदन किया कि भाई मुझे बीस लाख रुपये दे दो नहीं तो महाजन के आदमी मुझे मार डालेगे पर मोहनलाल ने इतना ही कहा कि मुझे तुम तग मत करो, मेरे बस का नहीं है। शातिलाल न कहा कि मैं जानता हूँ भाई तुम सहायता करना चाहते हो, हमने हमेशा तुम्हे अपने पिता के समान माना है पिता के मरने पर, बहुत कठिनाई मे हैं इसलिये फिर कह रहा हूँ, फिर सोच लेना। पर कुछ नहीं हुआ। शातिलाल की बडी बहन ने भी भाई मोहनलाल को समझाया पर कोई लाभ नहीं हुआ। वह कहने लगी कि जो परिवार एक था उसे यह लॉटरी का पैसा ले डूबेगा, पिता क्या सोचा करते थे पर औरत कैसे घर का खराब कर देती है। कहने लगी कि भाई तुम तो अब

अपनी एक फैक्ट्री को सँभालो और ईश्वर ने चाहा तो सब फिर ठीक हो जायगा, तुम्हीं कमा लोगे। शातिलाल कहने लगा कि बहन में तो मजबूरी मे माँग रहा था, पसा भी नही दिया और न देने का ठींकरा मेरे सिर पर फोड रहे ह, इससे मुझे ओर दु ख हुआ। आगे कहने लगा कि बिना पेसे के फैक्ट्री थोडे ही चल सकती हे। भाई मोहनलाल तो मुझे सहायता करना चाहते हैं, मैंने तो उन्ह यहाँ तक कह दिया कि लोन क रूप म दे दो मैं फिर वापिस कर दूँगा पर उसकी पत्नी व पुत्र जिसने इस परिवार को पहचाना ही नहीं अपनी जिद पर अडे हैं। खैर कोई बात नहीं, वास्तव मे सही कहा हे 'सबसे बडा रुपया' वह मन से बडा दु खी था सोच नहीं पा रहा था कि क्या करे। वह आत्महत्या की बात भी कभी सोच बैठता था।

इस उलझन के समय उसका एक परम मित्र कातिलाल शातिलाल के घर बहुत समय बाद मिलने आया। वह कहने लगा कि भाई मुझे तुम्हारी कठिनाईया का पता चला तो मैं चला आया। आगे बोला देख सब समय का फेर हे, मुझे देख मेरे को भी तुम्हारे जैसा घाटा हुआ था पर मेरी पत्नी और खुद के मकान ने मुझे आत्महत्या से बचा लिया और तरे तो करोडपति भाई हें वे जरूर तेरी सहायता करगे। शातिलाल कहने लगा कि भाई का सहायता करना मुश्किल हो रहा है। कातिलाल बोला कि कोई बात नहीं तुम वापिस अपना काम जमाओ, महाजन पेसा दे तो ठीक नहीं तो मैं अपना मकान बेच या गिरवी रख तुम्हारे साथ बिजनेस कर लूँगा पर तुम कोई एसा वेसा उल्टा कदम मत उठा लेना क्याकि ऐसे समय मे मैं भी कभी आत्महत्या की साच बैठता था। शातिलाल सोच मे पड गया।

शातिलाल ने फिर महाजन से बात करने की सोची शायद वह मान जाय अधिक ब्याज पर। उसने महाजन को समझाकर उससे और रुपया उधार लिया और कुछ वर्षो मे उसकी आमदनी फिर करोडा रुपयो की हो गई। तब तक मोहनलाल स्वर्ग सिधार चुका था। उसका लडका सूर्य जुए का आदि हो चुका था। सिगरेट, शराब आदि तो वह पहिल ही पीता था। उसकी करोडा की सम्पत्ति जुए मे खत्म हो गई। शाति को पछतावा हुआ। उसका उसकी बहू घर मे नहीं रखना चाहती थी जैसे वह अपनी सास का नहीं रखना चाहती थी। शातिलाल न अपनी भाभी की दशा देख उसने निवेदन किया आर अपने पास बुला लिया। शाति का लडका मूर्य व उसकी पत्नी बडे खुश हुए, उनका खर्च भी अव बडी मुश्किल से चलता था। सूर्य के व्यवहार से शातिलाल दु खी तो था पर फिर भी उसने सोचा कि धनी इन्सान तो वही जो दूसरो की समय पर सहायता कर। शातिलाल ने एक करोड रुपया सूर्य को उसके काम को वापिस जमाने के लिये दिया। उसने अपनी भाभी शाति को उसके स्तर के अनुसार अलग से कार दी ड्राइवर सहित जिससे वह जहाँ जब चाहे आ जा सके। अलग बैडरूम व नौकरानी तो उसको दे ही रखी थी। शाति का भी पछतावा हुआ और सूर्य को भी क्योकि उन्होंने शातिलाल की समय पर सहायता नहीं

की थी। शातिलाल ने इसका बुरा नहीं माना। जिस तरह शांतिलाल ने उन दोनो की सहायता की वह 'सवसे बडा रुपया' की कहावत को सच करता है या झुँठलाता है यह तो सोच का विपय है। पर धन रुपया होने पर जो उसका सही उपयोग करता है वही सच्चा इन्सान है। धनी मन हो तो धन का सदुपयोग होगा और परिवार की खुशहाली होगी। धनी होना अच्छा है पर साथ ही उसके दिल भी होना'चाहिये। धनी होने पर अपने परिवार वालो की ता सहायता करनी ही चाहिये ओर इसके अलावा दीन-दु खी ओर गरीबो की भी नहीं तो ऐसे धनी होने से क्या लाभ। दूसरो की सहायता से ही धन फैलता है व बढता है पर इसके लिये मन भी धनी हाना चाहिये।

शातिलाल ने अपनी आमदनी का पचास प्रतिशत एक वर्ष का जो दो करोड रुपये था अपनी दोना बहनो को दिया ओर उनका स्तर भी सुधर गया। दान भी तो लोग देते हैं फिर परिवार का एक लडका बहुत कमा लेता है तो जरूरत पडने पर ही नहीं बल्कि वेसे ही स्तर सुधारने के लिये या अपनत्व के लिये क्यो नहीं आमदनी का हिस्सा अपने परिवार वालो को देता हे जेसा शातिलाल ने किया।

❑❑❑

11. कर्मफल

मैं अपने दफ्तर से लौट रहा था। आज मैं ठीक पाँच बजे शाम को ही फ्री हो गया था अन्यथा मैं काफी देर से लौटता हूँ। कोई भी काम अगले दिन के लिये नहीं छोडता। सब मिलने वालो से मिलता हूँ और पत्रावलियो का निबटारा कर देता हूँ।

कई दिना से मेरी एक पुराने मित्र शेर सिह, जो मरे साथ प्राध्यापक रह चुके थे, से मिलने की इच्छा थी। मैं प्राध्यापक क बाद ही प्रशासनिक सेवा में आया था। मेरे मित्र कुछ समय से बीमार थे। मैं दफ्तर से सीधा उकने घर गया। वे अपने बिस्तर पर ही बैठे हुए थे। कहने लगे कि बडा अच्छा हुआ जो आप आ गये। मैंने उनके हालचाल पूछे। उन्हाने कहा कि मैं तो अब ठीक हूँ, ऐसे ही दोपहर बाद झपकी आ गई थी जब मैं आराम करने के लिये लेटा था और उसके बाद मेरे एक मित्र गोकुलनाथ आ गये थे और यहीं बैठा-बैठा उनसे बातें करता रहा। कहने लगे कि उनकी बात सुनकर मन बडा दु खी हुआ और सोचता रहा कि हम पर ऐसी नहीं बीते। आगे बोले कि हम तो भाग्यशाली हैं। बच्चे अच्छे हैं और हमारी पूरी देखभाल करते हैं। फिर बोले कि किस्सा तो तुम्ह सुनाऊँगा पर पहले क्या खाओगे, पीओगे बताओ। उन्होंने फिर चाय और मिठाई के लिये पत्नी से कहा।

शेरसिह जी कहन लगे कि गोकुल नाथ मेरे साथ विश्वविद्यालय म ही प्राध्यापक थे। बडे सज्जन पुरुष हैं और कभी किसी को तग नहीं किया और अपने काम को भी पूरा अन्जाम देते थे। अभी 2-3 वर्ष पूर्व ही सेवानिवृत्त हुये। उनके एक ही लडका कृष्ण है। गोकुलनाथ ठहरे जो लडके का नाम बडे शौक से कृष्ण रखा। कुछ वर्षों पहले तक तो सब कुछ ठीक था। कृष्ण पढाई में ठीक-ठाक था और कुछ वर्षो पहले उप अधीक्षक पुलिस हो गया और उसकी शादी भी कर दी। उसका पदस्थापन यहीं जयपुर मे हो गया और वे सब साथ-साथ ही रह रहे थे।

वे आगे बोले कि गोकुलनाथ आज जब मेरे (शेरसिह) घर पर आया तो उसके चेहरे पर खरोचे थी। मैंने पूछा तो झट रोने लगा, कहने लगा कि ये तो खराचे ही हैं। उसने झट अपने पैर दिखाये जो सूजे हुए थे और उन पर नील पडी हुई थी। वह कहने लगा कि बडी मुश्किल से बस स्टैण्ड से तुम्हारे घर पर आया हूँ क्योंकि बस डेढ घण्टे

लेट थी और तुम्हारा मकान बस स्टैण्ड के पास ही है। मैं तो इस शहर को छोडकर जा रहा हूँ। मेरा लडका तो नालायक निकला, कृष्ण से कस बन गया और मुझे मारता है। मकान तो मेरा है उस पर हडपना चाहता है। उसके नाम नहीं लिखा तो मुझे मारता है और बहू भी बडी मुश्किल से रोटी देती है। मेरे पास तो केवल यही मकान है और केवल यही सन्तान है तो बाद मे इसी के पास यह मकान जाता पर उसे डर है कि मैं मकान कहीं और किसी को अपनी विल मे नहीं लिख जाऊँ। आगे बोला कि तुम्हे याद होगा मेरी पत्नी की मौत हुए दो वर्ष हुए जब तुम मेरे घर आये थे। शरसिह आगे कहने लगे कि मुझे कुछ समय पहले ही पता चला था कि गोकुलनाथ की पत्नी से रुपये, जेवर माँगने पर आपस मे उसका व कृष्ण बहू का झगडा होने पर इसी लडके ने उसका गला घोंट दिया था और उस पुलिस अफसर का घमण्ड था कि कोई उसका कुछ नहीं बिगाडेगा। मैं तो बाहर गया हुआ था और बाद मे अर्थी ले जाने से पहले आया था।

शेरसिह बोले कि गोकुलनाथ ने आगे कहा कि मैं तो अब इस शहर से बाहर जा रहा हूँ और वापिस नहीं आऊँगा इसलिये भी तुम्हारे से मिलना चाहता था। शेरसिह ने गोकुलनाथ को कुछ समय घर पर ही रखा, उसकी मरहम पट्टी करवाई पास वाले कम्पाउण्डर को बुलवाकर और फिर वह वापिस चला गया पता नहीं किस दुनिया में।

मैंने शेरसिह जी से कहा कि यार यह तो उसकी पिछले जनम की करनी होगी जिसे वह अब भुगत रहा है नहीं तो जैसा तुम बता रहे हो इस जनम मे तो वह भला इन्सान है। वे कहने लगे कि जो भी हो लडका अपने माँ-बाप के साथ ऐसा करे यह तो घोर कलयुग की देन है। कृष्ण की सगत गलत साथियो के साथ होगी जिससे वह कस बन गया।

शेरसिह जी कहने लगे कि तुम्हारे से बात कर मेरा मन हल्का हो गया। फिर हमारी आपस मे पुराने समय की बहुत सी बाते हुईं और हम हँसी-मजाक भी करते रहे। फिर मैं जाने को हुआ तो कहने लगे कि ऐसी जल्दी भी क्या है। मैंने कहा कि मेरे को आज समय मिला है तो भई मैं अपने दोस्त कृष्ण कुमार, जिसकी एम आई रोड पर 'रामकुटीर' है उससे भी थोडी देर मिलना चाहता हूँ। वे बोले ठीक है जाओ मिलो उस कृष्ण से जो गोकुलनाथ के लडके कृष्ण से उल्टा है पर उसने तो बोडीगार्ड रख रखे हैं, आगे का हाल तो वहाँ जाकर तुम्हे पता चल जायेगा। मैं फिर उठ गया और नमस्ते कर चल दिया।

मैं जैसे ही 'रामकुटीर' मे घुसा तो मेरे रोंगटे खडे हो गये। मैंने वहाँ पहली बार सतरी देखा और उसने मुझे झट रोक लिया और कहने लगा कि आप अन्दर नहीं जा सकते। मैंने कहा क्यो भाई, कृष्ण तो मेरा दोस्त है और मैं तो उससे मिलने कई बार आता हूँ, आज क्या खास बात हो गई। उसने कहा कि साहब ने मना कर रखा है पर फिर भी मैं पूछ आता हूँ। वह लौट कर आया और मुझे अन्दर जाने को कहा। मैं अन्दर जा रहा था तभी देखा कि मित्र कृष्ण भी मेरा नाम सुनकर अपने कमरे से बाहर आ गया था लडखडाता। वह ड्राइग रूम की ओर आ रहा था। मैंने कहा भाई क्या हाल कर लिया।

चलो मैं तुम्हारे कमरे मे ही चलता हूँ, वहाँ लेट जाना। बोला नहीं, प्रेम हम यहीं बैठेगे, तुम्हारे आने से तो मुझे एनर्जी मिल गई ओर इस बहाने मैं उठकर ड्राइग रूम तक तो आ गया, नहीं तो मुझसे उठा ही नहीं जा रहा था। आगे कहने लगा कि सब अपन कर्मो का फल है पर इस जीवन म तो अच्छे कर्म किये ओर गाढी कमाई से ही यह 'रामकुटीर' बनाई जो 'रावण कुटीर' बन गई मेरे लडके के कारण। वह रोज मेरे से लडाई करता था और दो-तीन दिन पहले तो मुझे मारने की धमकी देकर कहीं चला गया। कहीं बैठा शराब पी रहा होगा वैश्याओ के अड्डे पर या अपने आवारा साथिया के साथ। उसे पढाया लिखाया इसलिये थोडे ही था। अच्छा इन्सान बनाने की कोशिश कर रहा था हालाकि उसकी माँ को मरे तो 12 साल हो गये। मैंने ही उसे सँभाला पर बुरी सगत मे फँस गया। आवारा साथियो के, पढ लिखने के बाद शुरू मे उसे नोकरी जो नहीं मिली। में उसे जेब खर्च के पैसे देता वह जुए मे ही उडा देता या अन्य कुकर्मो मे और अब तो रोज रात को लेट आता और सुबह उठते ही घर से बाहर जाने से पहले मुझसे गाली-गलोच करता है और पैसे एठना चाहता है। सोचता है यह मकान तो उसी का हे पर अभी तो मैं जिन्दा हूँ और इसलिये मुझे मारना चाहता हे। मेरे और कोई तो सन्तान है नहीं, में क्या करूँ। मैंने उसे समझाया पर वह नहीं समझा और मुझे पीटकर मेरे पास जो पैसे थे लेकर चम्पत हो गया। इसलिये मैंने बॉडीगार्ड रख लिये चौबीस घण्टा के जिससे मैं जिन्दा तो बच जाऊँ पैसे तो बैंक से निकाल लूँगा, धन तो आनी-जानी बात है, जीवन है तभी तो पेसे की जरूरत है।

मैं उसकी बाते सुनता रहा ओर साचता रहा कि देखो पुत्र भी उस पिता को मारना चाहता हे जिसने उसको जन्म दिया और पाला-पोशा। यही जीवन का खेल है। मनुष्य के पिछले कर्म भी इस जीवन म दु ख ला सकते हैं, पर इस जीवन के अच्छे कर्म तो आपको न केवल आगे के जीवन म लाभ देगे बल्कि इस जीवन मे भी भयकर परिणामो से बचा लेते हैं तभी तो मित्र कृष्ण ने बॉडीगार्ड रख लिए और अब सहज ढग स अपना शेष जीवन व्यतीत कर सकेगा ओर शेरसिह जी का मित्र गोकुलनाथ अपने घर से बाहर जाकर शायद कुछ हद तक सुखी रह सके या कम से कम मारपीट से तो बचेगा।

12. उलझते-सुलझते रिश्ते

लाला बद्रीनाथ एक सच्चे सरल इन्सान थे। उनकी छोटी सी किराने की दुकान शाहपुरा कस्बे में थी। उसी कमाई से उनकी घर गृहस्थी चलती थी। बद्रीनाथ के पिता का देहान्त तो तभी हो गया था जब वे युवा थे और दसवीं की परीक्षा पास की थी। फिर क्या था उन्ह यह दुकान सँभालनी पडी थी। चाचा तो छोटे पैतृक गाँव म रहते थे ओर बद्रीनाथ के पिता ने ही यहाँ कस्बे मे आकर दुकान खोली थी। पिता के मरने पर बद्रीनाथ पर ही पूरे परिवार का बोझ आ गया। उनके छोटे भाई-बहिन, यहाँ तक कि उनके चाचा के बच्चे भी उनके पास आकर पढे। इन सब मे योगदान उनकी पत्नी सावित्री का भी था जिसने बडे लगन और उत्साह से बद्रीनाथ का साथ दिया।

सावित्री ही घर का खाना बनाती थी। चौका, बरतन झाडू-पोंछे के लिये सुबह शाम एक नौकरानी कमला आती थी। आवश्यकतानुसार सावित्री का ही घर के कपडे धोने पडते थे। उसे ही छोटे बच्चा की सँभाल भी करनी पडती थी। उसकी सास सीता कडक मिजाज की थी। बद्रीनाथ के पिता हरीनाथ के समय तो सावित्री को पूरा घूँघट निकालना पडता था और सास की सुननी भी पडती थी छोटी-छोटी बातो पर लेकिन हरीनाथ के देहान्त के बाद वह अब केवल सिर पर पल्ला लेती थी और सास से बात भी कर लेती थी। हरीनाथ ने बद्रीनाथ की शादी जब वह नवीं कक्षा मे था तभी कर दी थी। एक तरह से सावित्री की बद्रीनाथ से शादी बचपन मे ही हो गई थी। तब तो वह सास से बहुत काँपती थी। पर अब तो सीता की कडक कुछ कम हो गई थी उसके पति के मरने के बाद। वैसे भी समय से रिश्तो में अन्तर आ ही जाता है जब एक-दूसरे को पहचानने लगते हैं।

बद्रीनाथ के एक भाई और एक बहिन थे जो दोना उससे छोटे थे। दोना पढ लिख गये और दोना की शादी हो गई। भाई दूसरे शहर मे अध्यापक हो गया था और बहन जोधुपर म ससुराल में चली गई थी अपने पति के पास जो ओवरसियर था। अब बद्रीनाथ अपने बच्चो को अच्छी तरह से देख सकता था।

बद्रीनाथ के तीन लडके और एक लडकी थी। उसने अपने बच्चो को पढाने की ठानी। बडा मोहन तो इजीनियर बन गया, मझला हनुमान डॉक्टर और छोटा किशन

प्रशासनिक सेवा म आ गया। लडकी सरस्वती ने भी एम ए कर लिया। बद्रीनाथ और सावित्री बडे खुश थे अपने बच्चो के आगे बढने पर। उसका अपनी पढाई पूरी नहीं करने का दु ख, जो उसे बार-बार सताया करता था, खत्म हो गया। उसने बडे लडके मोहन की शादी तो तभी कर दी थी जब उसकी माँ सीता जिन्दा थी। बहू चन्द्रकला एक उच्च मध्यम परिवार की थी जिसका परिवार भी सत्य का पुजारी था पर उन्हे थोडा अहम् जरूर था। बद्रीनाथ और उसके घर वाले सब सीधे सच्चे इन्सान थे।

सावित्री ही घर का खाना बनाती थी पर मासिक धर्म के समय उसने कभी नहीं बनाया, वच्चो से कह देती कि उस पर छिपकली गिर गई है। उस दिन बद्रीनाथ की माँ सीता व बच्ची सरस्वती दोनो मिलकर बना लेते थे। हनुमान का भी थोडा शौक था तो वह कभी-कभी रसोई मे भी सहायता कर देता था। सावित्री जब खाना बनाती तो चौके का पूरा परहेज रखती थी और कोयले से लाइन खींच देती जिससे उसका चोका अलग हो जाये। साथ ही नहाये बगैर चूल्हा नहीं चढता था। यदि सुबह बगैर नहाये चाय बनानी पडती तो काम दुगना हो जाता क्योकि फिर चूल्हे की पूरी सफाई दुबारा होती और बर्तन भी सब साफ होते जिन्ह बगैर नहाये छू लिया गया था। वह बडी सफाई पसन्द थी।

बहू से घूँघट तो नहीं निकलवाया जाता था पर बहू चन्द्रकला अपने ससुर से साधारणत बात नहीं कर सकती थी। हाँ ससुर बद्रीनाथ जब उससे कुछ पूछते तो वह उत्तर अवश्य देती थी। चन्द्रकला जब ससुर के पैरों पडती तो वे उसे आशीर्वाद देते थे। बहू सिर खुला नहीं रख सकती थी किसी भी बडे आदमी के सामने। मास के सामने भी पति के होने पर उसे सिर ढकना ही पडता था। परिवार मे पहले घूँघट प्रथा ही थी और घूँघट मे ही कभी बहू बोला करती थी। पर बद्रीनाथ के पिता के देहान्त के बाद तो सावित्री ने भी घूँघट छोड दिया था और केवल सिर पर पल्ला लेती थी तो नई बहू क आने पर तो और उदार होना ही था। सास के सामने बहू सिर खुला रख लेती थी यदि और कोई नहीं हो तो।

सावित्री बडे शौक से अपनी बहू को भी रसोई मे ही बोरी पर बैठाकर शुरू मे खाना खिलाती थी। नई नवेली बहू जो थी। पर उसके बाद तो बहू को भी साफ-सफाई से खाना बनाना पडता था। पर यह तो थोडे दिनो की ही बात होती थी क्योकि उसका पति माहन तो दिल्ली में बडा इजीनियर था और अक्सर तो वह अपने पति के पास ही रहती थी।

थोडे दिनो बाद बद्रीनाथ की माँ चल बसी। हाहाकार मचा, परिवार वाले आये व फिर सब सामान्य हो गया। मौत होने पर कोई कर भी क्या सकता है।

समय बीतता गया। बद्रीनाथ ने अपने दूसरे लडकों हनुमान व किशन की शादी भी अच्छे घरानो में कर दी। बहुएँ नम्रता व सुन्दरी सुशील थी। पर हनुमान की बहू नम्रता के पिता भी पी डब्ल्यू डी में बडे इजीनियर रह चुके थे सो वह भी थोडा कडक व जिद्दी

किस्म की थी। सुन्दरी के पिता तो साधारण अधिकारी थे और उसमे किसी प्रकार का अहम् नहीं था। बद्रीनाथ ने लडकी सरस्वती की भी शादी एक कम्पनी के इजीनियर से कर दी। वह फिर इस प्रकार अपने सासारिक कर्तव्यो से निवृत्त होने लगा।

हनुमान व किशन सरकारी नौकरी मे थे इसलिये उनके तबादले तो होते रहते थे। हनुमान तो फिर भी राजनीतिज्ञा ने साँठ-गाँठ कर अपने तबादले अच्छो जगह करा वहीं टिका रहता था। डॉक्टर की कमाई तो अच्छी होती ही है। किशन सीधा सादा था और पूर्णत ईमानदार सो घर गृहस्थी बडी मुश्किल से चला पाता था।

समय बीतता गया। मोहन के एक लडका हुआ, हनुमान के दो लडके व किशन के एक लडका व एक लडकी। बच्चे छोटे थे तभी दादा बद्रीनाथ बीमार रहने लगे और एक दिन स्वर्ग सिधार गये। सब भाई और परिवार वाले इकट्ठे हुए और सावित्री फिर सबसे छोटे लडके किशन के पास चली गई। किराने की दुकान अब कौन सँभाले सो वह अब बन्द करनी पडी और किराये का मकान भी खाली कर दिया।

सावित्री कभी अपने तीना लडको मे से कभी किसी के पास और कभी लडकी के पास रहती थी। सब उसे अच्छी प्रकार रखते थे पर उसे लगता था कि उसका कोई एक ठिकाना नहीं है। वह साफ-सफाई भी ज्यादा पसन्द करती थी और बगेर नहाये कोई कुछ बना दे तो वह खाती नहीं थी इससे सब बहुएँ दु खी थी। पर छोटी बहू सुन्दरी कुछ समझती थी और इसलिए सावित्री उसी के पास अधिक रहना पसन्द करती थी। समय अन्तराल से बद्रीनाथ के मरने के बाद सब बहुओ ने सिर खुला रखना शुरू कर दिया था सबके सामने जमाना जो बदल गया था। पर सब साडियाँ ही पहनती थी। मँझली नम्रता जरूर सलवार सूट पहन लेती थी। पर चन्द्रकला व नम्रता से सास की पटरी नहीं बैठती थी। पर लडके भले थे और अपनी माँ को चाहते थे इसलिये बहुएँ कुछ न तो अधिक कह पाती ओर न कुछ कर पाती थीं। पर सावित्री को बुरा जरूर लगता था और उसने मन में ठान ली थी कि अब बडी बहू चन्द्रकला के पास कभी नहीं जायेगी। पर मझला लडका डॉक्टर था सो वहाँ जरूर चली जाती और रहती थी हालाकि मझली बहू किसी बहाने से उस समय पीहर चली जाती थी। सावित्री मन म सोचती थी कि वह तो सास से भी डरती थी और बोल ही नहीं पाती थी पर अब तो बहुएँ भी उसकी नहीं सुनती, कैसा जमाना बदल गया। उसने ता उन्हें बडे चाव से रखा जब भी वे कुछ दिनों के लिये उसके पास आती और उस तो अब मजबूरी मे उनके पास रहना पडता है। जब भी सावित्री थोडी कडक हो जाती तो बहुएँ उस समय डर जरूर जाती थीं चाहे पीछे से अपने पति को सावित्री के विरुद्ध कुछ भी कहे। सास तो सास ही होती है।

समय बीतता गया। मोहन का लडका सूर्य बडा हो इजीनियर बन गया हनुमान के दोना लडके सूरज व चाँद ने भी इजीनियरिंग पास कर ली और किशन का लडका कन्हैया भी इजीनियर बन गया। उन दिनों इजीनियर सब बनना चाहते थे। चारों लडके

नौकरी नहीं करना चाहते थे और उन्हाने स्वय अपने अपने क्षेत्र म खुद का धन्धा शुरू कर दिया। सावित्री के जिन्दा रहते हुए ही उसके चारा पोतो की शादियाँ अच्छे घरानो मे हो गई। उसके थोडे दिनो बाद ही सावित्री चल बसी।

सूर्य की पत्नी लक्ष्मी एक सेठ की लडकी थी और भाग्य ने साथ दिया तो सूर्य ने भी अच्छी कमाई की। मोहन की पत्नी चन्द्रकला ने अपना सास का रूप दिखाना शुरू कर दिया। वह तो हमेशा ही अपने को सही और दूसरे को गलत मानती रही थी जब चाहे तब बहू को जोर से बोल देती थी। सूर्य के पास बहुत पैसा हो गया था, लक्ष्मी भी अमीर घराने की थी और चन्द्रकला को उसी पैसे से तो आराम व शान-शौकत मिली हुई थी। उसका पति मोहन तो रिटायर हो चुका था।

लक्ष्मी के एक छोटा लडका था जिसे ब्बलू कहते थे जो स्कूल गया हुआ था। लक्ष्मी अपनी सास को कहने लगी कि हम दोनो जा रहे हैं, बबलू व उसका दोस्त चिन्नी आयेगे, नौकर देख लेगे, पर आप थोडा ख्याल रखना, मैं आकर उसके दोस्त को उसके घर छोड आऊँगी। झट सास चन्द्रकला ने मना कर दिया। कहने लगी कि मैं दूसरे के बच्चा को नहीं देखूँगी, तुम बाद म चली जाना। बेचारी लक्ष्मी मन मार कर रह गई। कर भी क्या सकती थी। पर बाद म उसने अपने पति सूर्य को पूरा किस्सा सुनाया तो उसने अपनी माँ से फिर कहा। चन्द्रकला कहने लगी कि मैं ऐसे क्यो ख्यालू रखूँ, लक्ष्मी क्या मेरी सुनती है, वह तो जीन्स पहनती है बहुत सी बार हालाकि यह बात अच्छी नहीं लगती। आगे कहने लगी कि वह तो विधवा की तरह हाथ मे चूडियाँ भी बहुत सी बार नहीं पहनती, वह ता अपशुगनी है। सूर्य कहने लगा कि माँ आजकल तो सब लडकियाँ ही ऐसे ही रहती हैं, व्यवहार म उसके कोई कमी हो तो तुम बताओ, तुमने मना किया तो वह गई तो नहीं। वेशभूषा को छोडो, व्यवहार सही होना चाहिये और ऐसे तो सभी मे कोई न कोई कमी होती है। साधारणत लक्ष्मी सलवार सूट ही पहनती है। फिर जाकर चन्द्रकला चुप हुई। सूय बोला कि माँ तुम जमाने को नहीं देखती, आजकल ता सास बहू से डरती है, न कि बहू सास से।

हनुमान के दोनो लडको सूरज व चाँद की बहुएँ किरण व चाँदनी बडी भली लडकियाँ थी। सूरज बडा भला लडका था जबकि चाँद तेज मिजाज व सनकी किस्म का। चाँद अपने तक सीमित रहता, केवल अपने सास-ससुर की ओर ज्यादा झुकाव रखता था। चाँद दूसरे शहर मे रहता था जबकि सूरज अपने माता-पिता के साथ रहता था। नई बहू चाहती है कि उसका भी अपना घर हो, वह भी अपनी पसन्द का कुछ बनाकर अपने पति व घर वालों को खिलाये।

सूरज व उसकी पत्नी किरण पिता हनुमान के साथ ही रहते थे इसलिये बहू किरण ने उसे अपना ही घर समझ लिया। पर जब भी वह खाना बनाती और अपनी मर्जी का कुछ बनाना चाहती तो सास नम्रता उसे टोक देती कि नहीं ऐसे बनाओ। किरण को खीझ

होती पर करे क्या। एक समय उसे खाना बनाना ही था। कभी-कभी बिना कहे, बिना पूछे अपनी मर्जी से कुछ बना लेती तो उसे सास से सुनना पडता। ससुर हनुमान तो बडे अच्छे थे। कहते बहू खाना बडा अच्छा बनाया है, मजा आ गया। पर वे कमजोर किस्म के थे जबकि उनकी पत्नी नम्रता कडक इसलिये नम्रता ही उन पर हावी रहती थी।

किरण ने एक पेंटिंग बना ड्राइगरूम में टाँग दी पर अगले दिन उसे वहाँ नहीं मिली बल्कि वहाँ उसकी सास की पटिंग टगी मिली। उसे बडा दु ख हुआ पर करे तो क्या। अपने पति को कहती तो वह भी चिढ जाता था। किरण धीरे-धीरे घुटने लगी। सूरज का भी अपनी माँ की तरफ झुकाव था। नम्रता न सोचा कि इसका क्यो नहीं फायदा उठाया जाय, चालाक जो ठहरी। सूरज से कहने लगी कि देखो किरण के अभी तक बच्चा भी नहीं हुआ न गर्भधारण किया, कोई कमी जरूर होगी। आगे बोली कि वह मेरी सुनती भी नहीं है, करती तो अपनी मर्जी की है, बिना मुझसे पूछे ड्राइग रूम में पेंटिंग बदल दी, ऐसी क्या बहू। सूरज को नम्रता रोज भरती रही और उसे डाइवोर्स के लिये तैयार कर लिया। किरण बडी दु खी हुई। किरण ने अपने पापा को फोन किया। वे यहाँ आये और उन्होने बहुत समझाया कि किरण की कोई गलती हो तो माफ कर दो पर नम्रता अपनी जिद् पर अडी रही। फिर वे कहने लगे कि अच्छा कुछ दिनो में उसे अपने घर ले जाता हूँ। किरण फिर कुछ दिनो अपने पापा के पास रही। किरण के पापा ने हनुमान के बडे भाई मोहन को भी सारी बात बताकर समझाया। मोहन भले थे। उन्होने किरण को अपने यहाँ बुलाया, डॉक्टर को भी दिखाया, सब सही था। फिर मोहन ने हनुमान को समझाया और कहा कि देख नम्रता तो अपना भला भी नहीं सोचती किस बात पर डाइवोर्स दे रहे हो, लडकी वाले दहेज का आरोप लगाकर फौजदारी मुकदमा चला जेल भिजवा देंगे। तब कहीं समझ म आया हनुमान-नम्रता के और किरण फिर वापिस अपने ससुराल आ गई।

तब तक सूरज की कम्पनी का व्यापार भी बहुत बढ गया था और उसने अच्छा पैसा कमा लिया था। सूरज किरण को चाहता तो था ही पर माँ के बहकावे म आकर डाइवोर्स तक की बात करने लगा था। किरण सुन्दर थी और भली भी। किराये का मकान छोड शहर म दूसरी जगह दूर डॉ हनुमान ने अपना खुद का मकान बना लिया और वहाँ शिफ्ट करने का निर्णय लिया तो एक बार तो सूरज व किरण उनके साथ चले गये पर कुछ महीने बाद ही सूरज ने कम्पनी के दफ्तर व फैक्ट्री से दूर होने का बहाना किया और फिर वह घर छोड एक किराये का मकान अपने दफ्तर के पास ले रहने लगा। किरण को बडा शकून मिला। उसने अपने इस घर जो किराये का ही था को जमाने लगी अपने पति के शौक व स्वय की इच्छा के अनुसार। बगीचा भी अच्छी घास व फूलो से सबको मोहित कर देता था उसे जो भी सूरज से कारोबार के सिलसिले में या उसके दोस्त मिलने आते थे। सूरज बडा खुश रहने लगा और पत्नी को और भी प्यार करने लगा। पैसा तो था ही उसने अलग गाडी भी किरण के लिये खरीद ली। अब तक उनके एक लडकी हो गई थी

जिसकी देखभाल करने के लिये एक नौकरानी रख ली जो बच्ची की बडे प्यार से देखभाल करती थी। किरण तो झट गाडी उठा सैर-सपाटे मे निकल जाती अपनी सहेलियों से मिलने के लिये।

इस बीच चाँद को व्यापार में घाटा होने लगा तो वह बार-बार अपने पिता के पास आकर पैसे माँगने लगा। वह तेज मिजाज का तो था ही, अपने बाप को भी खरी खोटी सुना पैसे ऐंठ वापिस चला जाता था। हनुमान व नम्रता को बडा बुरा लगता। चाँद अपने चाचा, ताऊ व अन्य किसी रिश्तेदार से मिलना ही नहीं चाहता था। वह तो धन का लोभी था और अपने बाप का पैसा ऐठना चाहता था। सूरज ने चाँद को कई बार कहा कि उसके साथ व्यापार मे आ जाये पर चाँद तो अकड घमण्डी किस्म का था और वह अपने बडे भाई को ही डाँट देता था।

नम्रता अब धीर-धीरे रामायण, भागवत पढने लगी थी और उसमे थोडी समझ आ गई थी। वह अब चाँद और चाँदनी से दूर हट सूरज व किरण की ओर झुकने लगी थी हालाकि उसने पहले इन दोनो के डाइवोर्स तक की योजना बना ली थी। अब तक डॉ० हनुमान भी सेवानिवृत्त हो गया था। हनुमान और नम्रता सूरज के घर भी आ जाते थे। किरण भी अपनी बच्ची को ले उसको दादा-दादी से मिलाने के बहाने आ जाती थी। धीरे-धीरे नम्रता और किरण मे आपस मे प्रेम बढने लगा। किरण अपने सास ससुर को पूरा आदर देती थी। पर आजकल के जमाने के अनुसार वह भी बहुत सी बार जीन्स-शर्ट पहनती थी, क्योकि उसका पति भी यही चाहता था कि वह मार्डन लडकी की तरह रहे और उस दिन वह हाथों मे कुछ भी नहीं पहनती थी। ऐसे ही अपनी सास से मिलने चली जाती थी गाडी लेकर। किरण ने अपने बाल भी बॉयकट करा लिये थे। पर नम्रता अब इन सबका बुरा नहीं मानती थी और धार्मिक पुस्तके पढने के कारण भी नम्रता अब कुछ नरम हो गई थी। उसने भी तो अपन जमाने मे सलवार सूट पहिने थे जबकि उस समय औरत साडियाँ ही पहना करती थी तो अब नये जमाने मे बहुएँ जीन्स-शर्ट पहने तो क्या। फिर नम्रता ने बिछुवे पहनना तो अपनी सास के सामने ही छोड दिया था तो अब बहुएँ बिछुवे नहीं पहने, नगे हाथ रहे और जीन्स टॉप्स पहने तो क्या। यह सब तो आधुनिकता है। नम्रता अब सोचती थी कि बहू का तो व्यवहार अच्छा होना चाहिये।

जब किरण नम्रता के साथ रहती थी हनुमान के घर मे तब बहू किरण जरा सी देर से उठती तो नम्रता को बुरा लगता और उसे कुछ कह ही देती थी सास जो ठहरी। बेचारी किरण कुछ नहीं कह पाती हालाकि रात मे पति के साथ देर तक जगने के कारण वह देर से उठी हो। और अब किरण अपने घर जब मर्जी हो उठे। एक बार हनुमान व नम्रता सुबह-सुबह सूरज के घर आ गये। दो-तीन बार घण्टी बजाई जब जाकर दरवाजा खुला। नम्रता अपनी बहू किरण से कहने लगी कि हम इधर पास मे आये थे सो आ गये, तुम डिस्टर्ब तो नहीं हुई। किरण बोली कि नहीं मम्मीजी बडा अच्छा हुआ आप लोग आ

गये, यह तो हमारा सौभाग्य है। सूरज व किरण तभी घण्टी से उठे थे। किरण झट थोडी तैयारी कर नाश्ता बनाने लगी जब तक सूरज अपने माँ बाप से बाते करने लगा। सबने हँसी खुशी बेठकर नाश्ता किया। किरण भी आखिर मे डाइनिग टेबल पर आ गई। नम्रता तो अपनी छोटी पोती के साथ खेलती रही। सब खूब हँसी मजाक कर रहे थे। समय कैसे रिश्ता मे बदलाव ला देता है।

किशन के लडके कन्हैया की शादी केन्द्र में बडे अफसर की लडकी चित्रा से हुई थी। वे भी मालदार आसामी थे। चित्रा बडी सुन्दर लडकी है। शादी के कुछ दिनों बाद ही वह अपने पति के साथ बगलौर चली गई थी जहाँ कन्हैया की खुद की आई टी कम्पनी है। कन्हैया अमरीका म भी पढाई करके आया था और यहाँ आकर उसने खुद की कम्पनी लगा ली थी। कन्हैया होशियार तो था ही, कम्पनी में झट उन्नति हो गई। उसे काम से फिर अमरीका भी जाना पडा था। उस समय अपनी पत्नी चित्रा को वह अपने माता-पिता के पास छोड जाता था। किशन का बीकानेर मे स्वय का छोटा सा मकान था जहाँ उसने वर्षों सरकारी सेवा की थीं। वहाँ जान पहचान थी। सुन्दरी भी वहीं अध्यापक हो गई थी और अब तो दोनो कई वर्ष पूर्व सेवानिवृत्त हो गये थे। दोनों बच्चो की शादी कर ही दी थी। वहीं किशन-सुन्दरी का मन लगता था, यार दोस्तों के साथ। कन्हैया अपने पास बगलौर ले जाने की उनसे बहुत जिद करता था पर वे थोडे दिनो के लिये ही वहाँ जाते और फिर वापिस बीकानेर आ जाते।

शादी के बाद कन्हैया व चित्रा जब पहली बार बीकानेर आये बगलौर कुछ महीने रहने के बाद तो किशन-सुन्दरी बडे खुश हुए। सुन्दरी अपनी बहू के लिये तरह-तरह के पकवान बनाती थी और अपने लडके के लिये उसके शौक के अनुसार। चित्रा बडी खुश थी। कन्हैया व चित्रा अपने कमरे में देर तक वातें करते और सुबह देर से उठते। किशन ने शुरू में तो एक बार सुन्दरी से कहा कि यह क्या वे इतनी देर से उठते हैं, तुम अपनी बहू को क्यो नहीं कहती, लडका तो बेचारा आराम करने के लिये अपने माँ-बाप के पास आता है। सुन्दरी झट बोली कि यह क्या बात तुम अपने बेटे को तो कहते नहीं बल्कि बहू को कहते हो, वह भी तो आराम करने आई है। तुम्हारी लडकी आती है तो वह भी तो सोती रहती है फिर बहू क्यो नहीं सो सकती। किशन झट चुप हो जाता। बेटे-बहू उठते तो सुन्दरी उनके लिये चाय बना लाती। नौकर तो उसके पास पार्ट-टाइम था। फिर सब बैठे बाते करते रहते।

कुछ दिनो क लिय ही तो कन्हैया-चित्रा वहाँ बीकानेर आये थे। नहा-धोकर फिर कार ले घूमने निकल जाते। चित्रा ने अपने वाल बॉयकट करा रखे थे। वह तैयार हो जीन्स-टॉप्स पहनकर, हाथ में बिना कुछ पहने अपनी सास सुन्दरी से आकर कहती कि मम्मीजी क्यों ठीक है, मैं ऐस ही कन्हैया के साथ घूमने चली जाऊँ (आजकल पत्नी अपने पति को नाम से ही पकारती हैं बराबरी का दर्जा जो ठहरा जबकि पराने जमाने में

पत्नी अपने पति का नाम नहीं लेती थी)। सुन्दरी कहती कि हाँ ठीक है चित्रा तुम जाओ, बडी सुन्दर लग रही हो कहीं तुम्हे नजर न लग जाये। आगे कहती कि अरे तुम मौज करो, किसी से क्या डरना, जैसा अच्छा लगे वैसा करो। फिर कन्हैया और चित्रा एक-दूसरे के कन्धे पर हाथ रखे बाहर निकलते और कार ले चले जाते। कभी-कभी तो चित्रा के कहने पर सुन्दरी भी साथ चली जाती और तीना बडे मजे से साथ-साथ घूमते। कन्हैया तो बाहर जाना कम पसन्द करता था और वैसे भी सोचता था कि उसके सामने कहीं बहू कोई सकोच नहीं करे। पर्दा तो कभी का उड चुका था। शादी के समय भी चित्रा नगे सिर ही आई थी।

सुन्दरी को चित्रा बडी अच्छी लगती थी वह चाहे जैसे भी रहे। सुन्दरी ने भी तो अपने बाल पहले कटवा लिये थी जबकि उसकी सास जिन्दा थी। वह अध्यापिका थी और बाहर के वातावरण का असर उस पर भी हुआ था। किशन तो सीधा था, सुन्दरी से कहता कि जैसे चाहो करो, बस केवल व्यवहार अच्छा रखो। सुन्दरी भी बिछुवे नहीं पहनती थी और बहुत सी बार नगे हाथो ही बाहर चली जाती थी। बस साडी जरूर पहनती थी और शौक से। इसलिये चित्रा जीन्स-टॉप्स पहने आर नगे हाथो बॉयकट बालो मे बाहर जाये तो उसे बडा अच्छा लगता था। उसे तो केवल व्यवहार ही अच्छा चाहिये था जिसे, चित्रा बखूबी निभाती थी। कन्हैया अमरीका जाता आर चित्रा को सास-ससुर के पास छोड जाता तब भी वह सुबह तो देर से उठती पर शाम को या दोपहर बाद नई-नई चीजे बनाकर सास-ससुर को खिलाती ओर मीठा बोलती थी।

चित्रा के एक भाई था जिसकी भी शादी हो गई थी पर भाभी से उसकी पटरी नहीं बैठती थी क्योकि उसकी माँ उसकी भाभी की कोई बात सुनने को तैयार नहीं थी चाहे गलती उसकी भाभी की हो। चित्रा को यह बडा बुरा लगता था। वह यह सब बाते अपनी सास से टेलीफोन पर बेहिचक करती थी। सुन्दरी चित्रा को समझाती कि तुम फिक्र मत करो हम तो तुम्हारे साथ हैं। पर आगे सलाह भी दे देती कि ऐसी बात नहीं, तुम्हारी माँ कुछ समय के बाद समझ जायेगी और वैसे भी माँ तो माँ होती है, उसका कहा बुरा क्या मानती हो। सास-बहू सुन्दरी और चित्रा के ऐसे मधुर सम्बन्ध थे जो पुराने जमाने मे मुश्किल थे। तब तो सास सास होती थी ओर बहू बहू और वह हमेशा सास से डरती रहती और उसका खौफ उसके मन पर गहीरे लकीरे बना देता था साधारणत । पर आजकल पढी-लिखी बहुत सी सासो ने अपने को ऐसा ढाल लिया कि बहू को पूरा आराम और सम्मान देती है और उन्हे काम करने के लिये कहने क बजाय खुद ही उन्हे खाना बना खिलाने मे सन्तुष्टि प्राप्त होती है। इसका लाभ उन्हे बहू के द्वारा उन्हे आदर सत्कार देने का मिलता है। नई सास को कुछ नहीं कि बहू ने यह पहना या यह किया या यह खाया पिया, उन्ह तो उससे केवल उसका अच्छा व्यवहार चाहिये। बहू को लडकी तो नहीं बना सकते पर लडकी जैसी सुख सुविधा दोगे तो वह भी सास को माँ जैसा प्यार

और सत्कार देगी और उसके सामने अपना मन खोलकर रख देगी। पर यह सब सास के सोच का प्रश्न हे जो अपने अनुभव को काम म ले बहू को अपने परिवार और उसके तौर-तरीकों मे अपना ले बहू के परिवार के तौर तरीको से सामजस्य बैठाकर। सुन्दरी ने ऐसा ही किया अपनी बहू चित्रा के साथ और उसे अपना बना लिया। सास बहू के पुराने जमाने के उलझते रिश्तो को उसने नया रूप द दिया जिससे उलझने के बजाय ये रिश्ते सुलझ गये और इनकी नींव पक्की होती गई जिस पर नये रिश्तों की इमारत खडी हुई।

13. पछतावा

हरी प्रकाश शर्मा अपने पिता की इकलौती सन्तान थी। वह पढने लिखने में ठीक था पर अधिक होशियार नहीं। पिता चन्द्रप्रकाश ने बहुत कोशिश की उसको पढाने मे। चन्द्रप्रकाश खुद तो थोडा पढा लिखा था और अपने पैतृक गाँव मे ही किराने की खानदानी दुकान चलाता था पर अपने लडके को नाजिम बनाना चाहता था। हरी प्रकाश नाजिम तो नहीं बन सका पर तहसीलदार सेवा मे आ गया ओर जोधपुर जिले म तहसीलदार लग गया। वहीं पर उसने हाउसिग बोर्ड का मकान ले लिया कुछ वर्षों बाद। उसके दो लडके विमल और निर्मल थे और एक लडकी शुभ्रा।

हरी प्रकाश ने अपने तीनो बच्चो को अच्छी शिक्षा देनी चाही जिससे कि वे बाप से आगे निकल सकें। यही हर एक बाप की इच्छा होती है। लडकी शुभ्रा की शादी तो उसके बी ए पास करने के बाद ही एक अच्छे घराने मे कर दी। उसके बसन्त की कागज बनाने की फैक्ट्री थी जो खूब अच्छी चल निकली।

बडा लडका विमल पढाई मे साधारण था। बी ए करते समय ही उसका एक लडकी मुद्रा से प्यार हो गया। दोना साथ-साथ घूमते चहलकदमी करते। दोनो एक ही कक्षा मे पढते थे इसलिये पढाई करने के बहाने लाइब्रेरी जाने की बात कह अपने घरो से निकल जाते थे। मुद्रा पढाई मे होशियार थी और चहलकदमी करने के बावजूद बी ए मे द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुई जबकि विमल बडी मुश्किल से तृतीय श्रेणी मे पास हो सका। मुद्रा को झट एक बैंक मे नौकरी मिल गई जबकि विमल को नौकरी के लिये बडे चक्कर काटने पडे। बडी मुश्किल से हाथ जोडकर हरी प्रकाश की कोशिशो से एल डी सी की नौकरी नगर विकास न्यास जोधपुर मे मिल गई। मुद्रा भी ब्राह्मण परिवार की थी। फिर भी बडी मुश्किल से दोनों की शादी हो पाई क्योकि हरी प्रकाश सोचते थे कि उनके लडके को अच्छा दहेज मिलेगा क्याकि वह यू आई टी मे एल डी सी है जहाँ ऊपर की अच्छी कमाई है और प्यार के कारण शादी होने से मुद्रा के पिता साधारण शादी करना चाहते थे। अन्तत दोनो की शादी हो गई।

हरी प्रकाश के साथ ही मकान मे विमल व मुद्रा भी साथ-साथ रहने लगे। उनके एक लडकी प्रतिभा हुई जो बडी सुन्दर व होशियार थी। मुद्रा को सास-ससुर के साथ रहना अच्छा नहीं लगता था क्योकि वह स्वतन्त्र मिजाज की थी जबकि उसे ससुर के सामने घूँघट निकालना पडता था। हालाकि अपने बैंक जाती तो नगे सिर ही रहती थी। थोडे दिनो में हरी प्रकाश का तबादला जोधपुर से बाहर हो गया तब उसे राहत की साँस मिली।

हरी प्रकाश का छोटा लडका विमल दसवीं तक ही पढा। उसने तीन बार मे दसवीं की परीक्षा पास की इसलिये आगे पढाने का कोई लाभ नहीं था और न वह पढना चाहता था। हरी प्रकाश न उस बैंक से ऋण ले एक ट्रक खरीदवा दिया। उसका ट्रासपार्ट का काम हो गया ओर फिर निर्मल की शादी एक गाँव की लडकी जिस तहसील म हरी प्रकाश अब तहसीलदार था, स कर दी। बडा दहेज मिला। निर्मल व उसकी पत्नी चन्द्रिका भी उसी जोधपुर के मकान म रहते रहे। वहीं सब सामान दहज का पहुँच गया।

समय बीतता गया। निर्मल के दा लडकियाँ हुई। परिवार नियोजन का युग आ चुका था। चन्द्रिका ने भी दसवीं पास की हुई थी और आगे बच्चा करना नहीं चाहती थी। फिर भी निमल जो बडा असभ्य भी हो जाता था ने बहुत जिद्द की। एक बच्चा और हुआ जो सयोग से लडका हुआ। दादा हरि प्रकाश बडे खुश हुए उनके पहला पोता जो हुआ था।

समय बीतता गया। विमल की लडकी प्रतिभा बडी हो गई थी और ग्यारहवीं कक्षा म पढ रही थी। वह आगे चलकर डॉक्टर बनना चाहती थी। पढाई म होशियार भी थी। बच्चा में आपस म कहा सुनी हो जाती थी। देवरानी जेठानी भी लड लेती थी। हरी प्रकाश दूर छोटे कस्बे म था और भाईया के झगडे से परशान हा गया था क्याकि व मकान के बारे मे भी झगडते थे। मकान तो अन्तत दानो लडका का ही होना था। इसलिये हरी प्रकाश ने दोनो बेटा को मकान में हिस्सा बता दिया कि इसमे रहो और खुद के लिए एक बडा कमरा रख लिया जिससे वह सेवानिवृत्ति के बाद उसम रह सके।

शुरू-शुरू मे तो निर्मल का ट्रका का काम अच्छा चला तो उसन दा ट्रक और खरीद लिये। निर्मल शराब पीने का भी आदी होने लगा था क्योकि वह कभी ट्रक के साथ दूर दराज एरिया म चला जाता व ड्राइवर मेकेनिक क साथ बैठा रहता। बाहर देसी शराब खूब चलती थी। उसकी बडी लडकी मजू समझदार थी पर वह क्या कर सकती थी। हरी प्रकाश ने अपने लडके निर्मल से बडा बुरा-भला कहा तो एक बार तो उसने शराब छोड दी। पर फिर वापिस शुरू कर दी ओर कभी खूब शराब पी गली म पड जाता था। पर कोई करे तो क्या। हरी प्रकाश को पछतावा हुआ कि कहीं उसकी देखभाल मे कोई कमी रह गई या उसने कभी तहसीलदार होत हुए मूल्यवान गिफ्ट्स ली उसका फल तो उसे नहीं मिला जो उसका लडका शराबी हो गया।

थोडे महीनो बाद हरी प्रकाश सेवानिवृत्त हो गया और वहीं अपने मकान में आकर जोधपुर रहने लगा। छोटा लडका कमजोर था, आमदनी जो कम थी और शराबी भी इसलिय उसन उसी क साथ रसोई रखना ठाक समझा ताकि उसकी सहायता भी कर सके आर उसकी शराब की आदत भी दूर कर सके। हरी प्रकाश ने निर्मल को एक सस्था म दाखिला करा दिया जो शराब छुडाती थी और निर्मल का कारोबार हरी प्रकाश निमल की बडी लडकी मजू के साथ मिलकर सँभालने लगा। 6 माह बाद निर्मल शराब की आदत छोडकर वापिस आ गया ओर अपना धन्धा सँभालने लगा। तब कहा जाकर हरी पकाश का शाति मिली।

बडे लडके विमल की लडकी प्रतिभा ने जिद की कि उसे जोधपुर से बाहर जयपुर भेजकर कोचिग दिलाआ जिसस वह डॉक्टरी म प्रवश पा सक। विमल और उसकी पत्नी

मुद्रा दोनो कमाते थे पर बहुत ज्यादा तो पैसा नहीं था। उसके एक ही लडकी थी सो सोचा कि चलो उस पर अपनी बचाई पूँजी खर्च कर देव। उन्होने उसे कोचिग के लिये जयपुर भेज दिया जिस पर एक लाख रुपया खर्चा हुआ। शायद वहाँ मुद्रा ने पढाई पर पूरा ध्यान नहीं दिया क्यांकि उसके बाद जब उसने पी एम टी की परीक्षा दी तो उसमे उसका नम्बर मेरिट म नहीं आया और उसे मेडीकल मे प्रवेश नहीं मिल सका। वह इससे वडी खफा हुई और उसका मिजाज बिगडने लगा। वह जिद करके तो कोचिग पर जयपुर गई थी। उसने फिर जोधपुर मे बी एस सी जोइन कर ली पर पढाई मे उसकी रुचि कम हो गई। जिस दूर के कॉलेज म वह दाखिला चाहती थी उसी मे विमल-मुद्रा ने उसे दाखिला कराया हालाकि उसकी फीस भी ज्यादा थी और कॉलेज बस से जाने म करीब पौन घण्टा लग जाता था। पर फिर भी प्रतिभा ने दुबारा मेडीकल प्रवेश की परीक्षा देने से मना कर दिया हालाकि उसके माँ बाप ने उसकी इस हेतु कोचिग पर पिछले वर्ष ही इतना पैसा खर्चा किया था। मुद्रा ने अपनी लडकी को बहुत समझाया पर वह इससे टस से मस नहीं हुई। मुद्रा और प्रतिभा की आपस मे रोज तू-तू मैं-मैं होती थी।

उस समय तक भाग्य से मुद्रा के 15 वर्ष बाद दूसरा बच्चा हो गया था और वह लडका था। मुद्रा को उसे भी देखना पडता था। प्रतिभा अपनी तुलना उस बच्चे बिन्टू से करती थी। कहती इसे तो आप बढिया बढिया चीजे बनाकर खिलाती हो, मेवा देती हो, बहुत दुलार करती हो पर मुझे तो ऐसा कुछ कभी दिया नहीं और न ऐसा दुलार किया। मुद्रा कहती कि देख मैं तुम्हे हमेशा प्यार करती हूँ पर तू तो कोई काम नहीं करती जबकि तेरे कपडे भी कभी-कभी मैं ही धोती हूँ। प्रतिभा कहने लगी कि तुम कपडे धोने के लिये किसी को रख लो और वैसे तो तुम तो बिन्टू के कपडे रोज जेसे धाती हो वैसे ही मेरे थोडे ही धोती हो केवल कभी-कभी जबकि मैं जल्दी मे छोड जाती हूँ। तुम इन्हे मत धोया करो, मैं आकर धो लूँगी। मुद्रा को कुछ अच्छा नहीं लगा। कहने लगी कि प्रतिभा तुम एसा क्या सोचती व कहती हो, हमने तो तुझे डॉक्टरी की परीक्षा के लिए कोचिग दिलाई जिस पर एक लाख रुपये खर्च किये जबकि इतना खर्चा करना हमारी हैसियत म थोडा ही था और तू तो अब डॉक्टरी की प्रवेश परीक्षा ही नहीं दे रही। प्रतिभा चुप हो वहाँ से चली गई।

मुद्रा को भी ऑफिस जाने की जल्दी रहती थी और वह पूरा नाश्ता भी कई बार नहीं बनाती थी जिससे प्रतिभा, जो अब बडी हो गई थी, को खुद का नाश्ता बनाना पडता था और इससे भी दोनो मे मन-मुटाव बढने लगा। मुद्रा के मन में यह भी था कि उसने अपनी लडकी की कोचिग पर इतना रुपया व्यर्थ मे खर्च कर दिया अन्यथा वह आगे उसकी शादी मे या लडके बिन्टू की पढाई मे काम आता। असल मे मुद्रा अध्यापिका की तरह अपनी लडकी प्रतिभा से व्यवहार करती थी जो उसे ना गँवारा था और इस कारण वह घर का काम नहीं करती थी। वैसे जब मुद्रा कुछ दिनो के लिये पीहर जाती थी तो प्रतिभा बडे शौक से अपन छोटे भाई को स्कूल बस मे नाश्ता करा व कुछ खाने का लगा साथ में दे भेजती थी और अपने पिता का भी नाश्ता बनाती और दोना समय के खाने की अच्छी व्यवस्था करती थी। परन्तु जब मुद्रा यहाँ होती तो वह चिढ के कारण घर का कुछ

काम नहीं करती क्योंकि मुद्रा उसे टोकती रहती थी। पडोसिन ने भी मुद्रा को बहुत समझाया कि वह अपनी लडकी से मास्टरनी का व्यवहार न करे। वह उसे यह भी कहती कि देख प्रतिभा तो बहुत अच्छी है और जब तू बाहर जाती है पीहर तो वह सब काम करती है इसलिये तुम उसे समझो और कुछ मत कहो, अपने बराबर मत समझो, वह तो तुम्हारे लडकी है उससे प्यार से बाल तब वह अपने आप तुम्हे आदर देगी और घर का काम भी करगी। पडोसिन ने प्रतिभा को भी अच्छी सीख दी। प्रतिभा तो कुछ सुधर गई आर उसने अपनी माँ को उल्टा जवाब देना बन्द कर दिया पर माँ मुद्रा ने अपनी लडकी के साथ मास्टरनी का व्यवहार नहीं छोडा।

एक दिन प्रतिभा कॉलेज से वापिस नहीं आई। विमल व मुद्रा बडे असमजस मे पड गये। हरी प्रकाश अपने बच्चो के मामले मे दखल नहीं देते थे। उनकी पत्नी का देहान्त उनकी सेवानिवृत्ति के थोडे समय बाद ही हो गया था और वे छोटे लडके निर्मल के साथ ही रहते थे। फिर भी उस दिन उन्होने विमल के साथ मिलकर कॉलेज जाकर प्रतिभा के बारे मे पता किया। होस्टल के एक लडके न बताया कि उसके दोस्त कमलेश के साथ प्रतिभा कमलेश के गाँव अलवर चली गई है और वहीं दोना शादी करने वाले हैं। कमलेश और प्रतिभा एक ही कक्षा मे पढते थे।

घर वाले सब हक्के-बक्के रह गये। विमल भी सोचने लगा कि उसने अपनी बेटी प्रतिभा पर इतना नियत्रण क्या किया उसे घर से किसी को फोन भी नहीं करने देता था आर किसी का फोन आता तो वह शक की निगाह से उसे देखा करता था। मुद्रा भी अब सोचने लगी कि लडकी बडी हो गई थी तो उसने क्या नहीं उसका ध्यान रखा। वह यह भी सोचने लगी कि उसने खुदने भी तो अपने एक साथी से ही शादी की थी।

हरी प्रकाश और विमल कमलेश के घर अलवर गये। उस समय तक उन दोनो की शादी हो चुकी थी। कमलेश राजपूत था जबकि प्रतिभा ब्राह्मण थी। दोनो परिवारों के खानपान म बडा अन्तर था। प्रतिभा वापिस नहीं आना चाहती थी। वह वयस्क भी थी। दोना बाप-बेटे निराश होकर लोट आये। पुलिस म भी मामला करने से कोई लाभ नहीं था।

प्रतिभा कुछ दिना तो ससुराल में ठीक रही। पर जब माँस खाने के लिये उसने बिल्कुल मना कर दिया तो कमलेश के घर वाले बडी दु खी हुये। कमलेश के घर वाले शराब पीकर हँसी-मजाक करते और किसी को कुछ भी कह देते। प्रतिभा को गाली-गलाच का भी सामना करना पडा। कमलेश भी कुछ दिना म उससे नाराज हो गया। वह देर रात को शराब पीकर आता और बहकी-बहकी बात करता। उसके बाप का ठिकाना था आर इसी का उसे घमण्ड था।

प्रतिभा को पछतावा हुआ और वह एक रात चुपचाप कमलेश को बिना कुछ कह घर छोड वापिस अपने बाप के यहाँ आ गई। विमल और मुद्रा खुश भी हुए और दु खी भी। पर हरी प्रकाश को बडा सकून मिला। उसने पुलिस अधिकारी से बात कर पता कर लिया था। उसके अनुसार कमलेश का चाल-चलन अच्छा नहीं था और उस ठिकाने वाल ला रखल रखा करते थे। प्रतिभा के अलवर छोडने पर कमलेश के घरवाला को कोई

अफसोस नहीं हुआ बल्कि कमलेश के घरवालों ने तो सोचा कि चलो कमलेश की शादी करेगे तो बडा अच्छा दहेज मिलेगा और शादी किसी राजपूत ठिकाने मे ही करेगे।

मुद्रा को भी पछतावा हुआ और बेटी प्रतिभा से कहने लगी कि अब मैं तुमसे कुछ नहीं कहूँगी तू जैसी मर्जी हो कर। आगे बोली कि हमने तो तेरी लव मैरिज को भी मान लिया था पर लडका कमलेश आवारा था ऐसा पुलिस वालो से मालूम हुआ था सो अच्छा हुआ तू वापिस आ गई और अब तू बता कि तू क्या चाहती है हमसे। प्रतिभा बोली कि माँ मैं अब वापिस वहाँ नहीं जाऊँगी, डाइवोर्स ले लूँगी, दुबारा मेहनत करूँगी और डॉक्टरी मे आ गई तो डॉक्टर बनूँगी नहीं तो और कुछ करूँगी पर तुम्हारी तरह अपने पैरो पर खडी होऊँगी।

माँ-बेटी, मुद्रा और प्रतिभा के रिश्ते सुधरते गये, मनमुटाव दूर हो गया। फिर प्रतिभा ने मेहनत की। अगले वर्ष की डॉक्टरी परीक्षा म मैरिट म आ गई और फिर उसने डॉक्टरी पास कर ली। उसने शादी नहीं की, न ही शादी की सोची और अपने पेशे म ही आगे बढते रहने पर अडिग रही। आज वह एक प्रमुख प्रोफेसर कार्डियोलोजी है और सारे भारत मे ही नहीं विश्व मे भी उसका नाम है।

यदि मुद्रा पहले समझ जाती और प्रतिभा से अध्यापिका का व्यवहार नहीं करती बल्कि एक माँ का फर्ज निभाती तो प्रतिभा समय पर ही डॉक्टर बन अपना खुद का परिवार जमा उसमे क्या और खुश रहती, यह तो सोच का विषय है। पर मुद्रा को अब पछतावा जरूर है पर फिर भी सन्तोष है कि प्रतिभा एक बडी अच्छी डॉक्टर बन गई। उसे अफसोस जरूर है कि प्रतिभा ने शादी नहीं की। मुद्रा इसके लिये स्वय को ही दोषी मान पश्चाताप करती है।

प्रतिभा तो अब दिल्ली मे है और सेवानिवृत्ति के बाद विमल और मुद्रा कई बार वहाँ गये भी और प्रतिभा ने अपने प्रोफेशन मे व्यस्त रहने के बावजूद माँ बाप की स्वय पूरी सेवा की हालाकि उसके नौकर चाकर बहुत हैं। उसने स्वय ही बनाकर माँ बाप को खाना खिलाया। प्रतिभा भी कभी-कभी जोधपुर आकर अपने माँ-बाप के पास रहती है। उसका अपना तो अलग से और कोई परिवार है नहीं। पता नहीं उसके मन मे क्या कोई टीस है या पछतावा है जैसा मुद्रा के मन मे है।

❑❑❑

14. जीवन-लीला (सत्य कथा)

मेरे दादा रामस्वरूप जी बडे ही सज्जन पुरुष थे। वे सदैव गरीब की सहायता करने म तत्पर रहते थे। सन् 1915 के आसपास युवावस्था मे ही अपने पैतृक ग्राम मण्डावर (जिला बिजनौर, उत्तरप्रदेश) से सादुलपुर (राजगढ), जिला चूरू, राजस्थान म आकर बस गये थे और यहाँ अपनी वकालत शुरू कर दी। वे जो कमाकर लाते उसमे से कई बार तो घर आने से पहले ही रास्ते म किसी जरूरतमन्द को उसकी आवश्यकता देख जरूर कुछ दे आते थे। वे स्वतन्त्रता-सेनानी थे और उन्हाने छोटे-छोटे कविता-सग्रह जैसे 'आजादी की लहर', 'मजदूर-किसान', 'ब्राह्मण जाति के नाम सन्देश' आदि लिखी और खुद ही छपवाकर प्रसारित भी की। वे स्वतन्त्रता आन्दोलन मे भाग लेते हुए जेल भी गये थे। वे समाज सुधारक भी थे और सबका हित चाहते थे। इसी उद्देश्य से उन्होने वहाँ राजगढ मे सर्वहितकारिणी सभा की स्थापना सन् 1926 मे की थी।

वे अपने सिद्धान्ता को अपने व्यवहार मे भी उतारते थे। मेरे पिता उनके सबसे बडे लडके थे। उनके छोटे भाई की शादी भी बहुत पहले हो गई थी जब मैं छोटा बच्चा था। उसके बाद जब मेरे दो चाचाओ की शादी हुई तो वह मुझे याद है। इनमे से बडे चाचा की शादी हुई तो केवल एक रुपया और नारियल लिया और शादी के समय लडकी के पिता की ओर से दिया गया सामान लेने से इन्कार कर दिया तो लडकी के पिता बेहोश हो गये। उस समय भी दहेज का प्रचलन था और मेरे दादा इसके सख्त खिलाफ थे। खैर लडकी के पिता को फिर होश आ गया और लडकी को दिये गहने और उससे सम्बन्धित कुछ सामान को लेकर शान्ति हो गई। जब दूसरे छोटे वाले हरी चाचा की शादी हुई तो बारात मे फिर केवल नौ बाराती ही लेकर दादा गये और केवल एक रुपया व नारियल लिया। हम चार भाई हैं उनमे से केवल दो का नम्बर आया बारात मे शामिल होने के लिये।

सन् 1949-50 की बात है। मेरे सबसे छोटे चाचा की शादी होनी बाकी थी। मेरी दादी चाहती थी कि वह तो यह आखिरी शादी अपनी मर्जी से कर ले पर मेर दादा अडिग थे। वे सिद्धान्तवादी थे। दादी चाहती थी कि पूरे बाराती जावे हम माँग तो नहीं करेंगे पर लडकी वाले, यदि अपनी लडकी को देते हैं तो उसे हम मना क्यो करग। इसी उलझन मे मेरी दादी मेरे पिता के पास बीकानेर आ गई। मेरे पिता वहाँ वकालत करते थे। उन्हीं के पास उनके सब भाई पढे थे। मेरे पिता विष्णुदत्त जी ने कलकत्ता में कानून की पढाई कर बी एल की डिग्री हासिल की थी। पर उसके बाद वे एक साल्ट फैक्ट्री मे जो रावलपिण्डी के पास गाँव डण्डोत मे थी (जो अब पाकिस्तान मे है) मैनेजर हो गये थ।

पर 1940 के आसपास फिर हमारे दादा के कहने पर कि और भाईयों को भी तो पढना है वे बीकानेर आ गये थे और उन्हाने वहाँ वकालत शुरू कर दी। बीकानेर रियासत का बीकानेर ही मुख्यालय था और चूरू व गगानगर इसी रियासत के भाग थे।

मेरे दादा मरे सबसे बड चाचा चन्द्रप्रकाश जी, जो कॉलेज मे प्राध्यापक थे, के पास रतनगढ मे रुक गये। मेरे पिता फिर सुलह कराने के लिये मरे दादा से बात करने के लिये रतनगढ गये। उस समय हमारे यहाँ बीकानेर मे मेरे हरी चाचा, उनकी पत्नी व उनकी एक छोटी बच्ची भी थी। असल म हरी चाचा अपनी कलकत्ता की नौकरी छोडकर वहाँ वकालत पढ रहे थे। वे बडे होशियार थे और दसवीं और बी ए मे फर्स्ट-क्लास-फर्स्ट आये थे। फिर कलकत्ता में पखों की फैक्ट्री में नौकरी करने लगे थे। परिवार की सिद्धान्तवादी धारा उन पर भी चढी हुई थी और इस कारण मनमुटाव होने पर नौकरी छोड बीकानेर कानून पढने आ गये थे। हमारे परिवार मे ईश्वर कृपा से पढाई मे सभी अव्वल रहे हैं। हमारे हरी चाचा एल एल बी पार्ट-1 म भी प्रथम श्रेणी प्रथम आये थे। दूसरे पार्ट का एक ही पेपर हुआ था जिस दिन मरे पिता रतनगढ मेरे दादा से बात करने गये थे।

मेरे पिता अगले दिन रात को ही 9-10 बजे रेल से वापिस आ गये हालाकि उससे अगले दिन भी उनका कोर्ट म केस नहीं था और एक दिन बाद आने के लिये कहकर गये थे। आने पर उन्होने मेरे दादा से जो बाते हुई वह अपनी माँ (मेरी दादी, जिसे हम सब भी माँ ही कहते थे) को बताई। माँ ने बात सुनी और फिर तभी रात को शौच के लिये गई और वापिस आने पर उनके हाथ धोते हुए ठण्डे हो गये और वे अपने पलग पर झट आ गईं। उनक मुँह से जोर की चीख निकली और जोर से हिचकी आई और उनके प्राण पखेरू उड गये। उनकी मौत से हाहाकर मच गया और रातभर सब जागते रहे। हमारे दादा, चाचाआ, बुआ और अन्य परिवार वालों व रिश्तेदारो को भी सूचित किया।

सुबह हुई तो हमारे हरी चाचा भी वहीं बैठे रहे हालांकि उनका एल एल बी फाइनल का पेपर था। फिर हमारे पिताजी उन्हे एक तरफ उठाकर ले गये और कहने लगे कि हरी क्या बात है तू पेपर देने नहीं जा रहा। वे रो पडे और कहने लगे कि माँ तो मरी पडी है तो मैं पेपर देने कैसे जा सकता हूँ। पिताजी एक बार तो चुप हुए और फिर बोले कि हरी देख, माँ तो मर गई और अब वापिस नहीं आ सकती, जिन्दा नहीं हो सकती और अगर तू पेपर देने नहीं जायेगा तो तेरा यह वर्ष चला जायेगा और वह भी वापिस नहीं आयेगा, इसलिये तू पेपर देने जा, माँ की अर्थी तेरे लौटने पर ही उठेगी। फिर हरी उठकर पेपर देने गये और उनके लौटने पर ही माँ (मेरी दादी) की अर्थी उठी और दाह सस्कार हुआ। उन्होने अगले पेपर भी फिर दिये और उस वर्ष भी प्रथम श्रेणी मे आये पर मैरिट मे दूसरा नम्बर रहा।

ऐसे विवेकी थे मेरे पिता श्री विष्णुदत्त जो विपरीत परिस्थिति मे भी सहज बने रहकर सही निर्णय कर लेते थे। कुछ दिनो बाद मेरी माता ने उनसे पूछा कि वे उसी दिन रात को क्यो आ गये जबकि एक दिन बाद में आने के लिये कहकर गये थे तो वे कहने लगे कि तुमने पूछा तो बताता हूँ कि मुझे मेरे दोस्त कृष्णकान्त वैद्य, जो ज्योतिषी भी हैं, ने कहा था कि अमुक दिन तुम्हारी माता क लिये भारी है और यह मुझे वहाँ जाकर याद

14. जीवन-लीला (सत्य कथा)

मेरे दादा रामस्वरूप जी बडे ही सज्जन पुरुष थे। वे सदैव गरीब की सहायता करने म तत्पर रहते थे। सन् 1915 के आसपास युवावस्था में ही अपने पैतृक ग्राम मण्डावर (*जिला बिजनौर, उत्तरप्रदेश*) से सादुलपुर (*राजगढ*), *जिला चूरू*, राजस्थान म आकर बस गये थे और यहाँ अपनी वकालत शुरू कर दी। वे जो कमाकर लाते उसमे से कई बार तो घर आने से पहले ही रास्ते मे किसी जरूरतमन्द को उसकी आवश्यकता देख जरूर कुछ दे आते थे। वे स्वतन्त्रता-सेनानी थे और उन्होने छोटे-छोटे कविता-सग्रह जैसे 'आजादी की लहर', 'मजदूर-किसान', 'ब्राह्मण जाति के नाम सन्देश' आदि लिखी और खुद ही छपवाकर प्रसारित भी की। वे स्वतन्त्रता आन्दोलन म भाग लेते हुए जेल भी गये थे। वे समाज सुधारक भी थे और सबका हित चाहते थे। इसी उद्देश्य से उन्हाने वहाँ राजगढ मे सर्वहितकारिणी सभा की स्थापना सन् 1926 म की थी।

वे अपने सिद्धान्तो को अपने व्यवहार मे भी उतारते थे। मरे पिता उनके सबसे बडे लडके थे। उनके छोटे भाई की शादी भी बहुत पहले हो गई थी जब मैं छोटा बच्चा था। उसके बाद जब मेरे दो चाचाओ की शादी हुई तो वह मुझे याद है। इनमे से बडे चाचा की शादी हुई तो केवल एक रुपया और नारियल लिया और शादी के समय लडकी के पिता की ओर से दिया गया सामान लेने से इन्कार कर दिया तो लडकी के पिता बेहोश हो गये। उस समय भी दहेज का प्रचलन था और मेरे दादा इसके सख्त खिलाफ थे। खैर लडकी के पिता को फिर होश आ गया और लडकी को दिये गहने और उससे सम्बन्धित कुछ सामान को लेकर शान्ति हो गई। जब दूसरे छोटे वाले हरी चाचा की शादी हुई तो बारात मे फिर केवल नौ बाराती ही लेकर दादा गये और केवल एक रुपया व नारियल लिया। हम चार भाई हैं उनमे से केवल दो का नम्बर आया बारात मे शामिल होन के लिये।

सन् 1949-50 की बात है। मेरे सबसे छोटे चाचा की शादी होनी बाकी थी। मेरी दादी चाहती थी कि वह तो यह आखिरी शादी अपनी मर्जी से कर ले पर मेरे दादा अडिग थे। वे सिद्धान्तवादी थे। दादी चाहती थी कि पूरे बाराती जावे, हम माँग तो नहीं करेगे पर लडकी वाले, यदि अपनी लडकी को देते हैं तो उसे हम मना क्यों करेगे। इसी उलझन मे मेरी दादी मरे पिता के पास बीकानेर आ गई। मेरे पिता वहाँ वकालत करते थे। उन्हीं के पास उनके सब भाई पढे थे। मेरे पिता विष्णुदत्त जी ने कलकत्ता में कानून की पढाई कर बी.एल की डिग्री हासिल की थी। पर उसके बाद वे एक साल्ट फैक्ट्री म जो रावलपिण्डी के पास गाँव डण्डोत मे थी (जो अब पाकिस्तान मे है) मैनेजर हो गये थे।

पर 1940 के आसपास फिर हमारे दादा के कहने पर कि और भाईयों को भी तो पढना है वे बीकानेर आ गये थे और उन्होने वहाँ वकालत शुरू कर दी। बीकानेर रियासत का बीकानेर ही मुख्यालय था और चूरू व गगानगर इसी रियासत के भाग थे।

मरे दादा मेरे सबसे बडे चाचा चन्द्रप्रकाश जी, जो कॉलेज मे प्राध्यापक थे, के पास रतनगढ मे रुक गये। मेरे पिता फिर सुलह कराने के लिये मरे दादा से बात करने के लिये रतनगढ गये। उस समय हमारे यहाँ बीकानेर में मेरे हरी चाचा, उनकी पत्नी व उनकी एक छोटी बच्ची भी थी। असल म हरी चाचा अपनी कलकत्ता की नौकरी छोडकर वहाँ वकालत पढ रहे थे। वे बडे होशियार थे और दसवीं और बी ए मे फर्स्ट-क्लास-फर्स्ट आये थे। फिर कलकत्ता म पखों की फैक्ट्री में नौकरी करने लगे थे। परिवार की सिद्धान्तवादी धारा उन पर भी चढी हुई थी और इस कारण मनमुटाव होने पर नौकरी छोड बीकानेर कानून पढने आ गये थे। हमारे परिवार मे ईश्वर कृपा से पढाई मे सभी अव्वल रहे हैं। हमारे हरी चाचा एल एल बी पार्ट-1 मे भी प्रथम श्रेणी प्रथम आये थे। दूसरे पार्ट का एक ही पेपर हुआ था जिस दिन मेरे पिता रतनगढ मेरे दादा से बात करने गये थे।

मेरे पिता अगले दिन रात को ही 9-10 बजे रेल से वापिस आ गये हालाकि उससे अगले दिन भी उनका कोर्ट म केस नहीं था और एक दिन बाद आने के लिये कहकर गये थे। आने पर उन्हाने मेरे दादा से जो बाते हुई वह अपनी माँ (मेरी दादी, जिसे हम सब भी माँ ही कहते थे) को बताई। माँ ने बाते सुनी और फिर तभी रात को शौच के लिये गई और वापिस आने पर उनक हाथ धोते हुए ठण्डे हो गये और वे अपने पलग पर झट आ गईं। उनके मुँह से जोर की चीख निकली और जोर से हिचकी आई ओर उनके प्राण पखेरू उड गये। उनकी मौत से हाहाकर मच गया और रातभर सब जागते रहे। हमारे दादा, चाचाआ, बुआ और अन्य परिवार वालो व रिश्तेदारों को भी सूचित किया।

सुबह हुई तो हमारे हरी चाचा भी वहीं बैठे रहे हालाकि उनका एल एल बी फाइनल का पेपर था। फिर हमारे पिताजी उन्हे एक तरफ उठाकर ले गये और कहने लगे कि हरी क्या बात है तू पेपर देने नहीं जा रहा। वे रो पडे और कहने लगे कि माँ तो मरी पडी है तो मैं पेपर देने कैसे जा सकता हूँ। पिताजी एक बार तो चुप हुए और फिर बोले कि हरी देख, माँ तो मर गई और अब वापिस नहीं आ सकती, जिन्दा नहीं हो सकती और अगर तू पेपर देने नहीं जायेगा तो तेरा यह वर्ष चला जायेगा और वह भी वापिस नहीं आयेगा, इसलिये तू पेपर देने जा, माँ की अर्थी तेरे लौटने पर ही उठेगी। फिर हरी उठकर पेपर देने गये और उनके लौटने पर ही माँ (मेरी दादी) की अर्थी उठी और दाह सस्कार हुआ। उन्होने अगले पेपर भी फिर दिये और उस वर्ष भी प्रथम श्रेणी मे आये पर मैरिट मे दूसरा नम्बर रहा।

ऐसे विवेकी थे मेरे पिता श्री विष्णुदत्त जो विपरीत परिस्थिति मे भी सहज बने रहकर सही निर्णय कर लेते थे। कुछ दिना बाद मेरी माता ने उनसे पूछा कि वे उसी दिन रात को क्या आ गये जबकि एक दिन बाद में आने के लिये कहकर गये थे तो वे कहने लगे कि तुमने पूछा तो बताता हूँ कि मुझे मेरे दोस्त कृष्णकान्त वैद्य, जो ज्योतिषी भी हैं, ने कहा था कि अमुक दिन तुम्हारी माता के लिये भारी है और यह मुझे वहाँ जाकर याद

आया तो मैं उस दिन रात को आ गया। आगे कहने लगे कि देखो ईश्वर का विधान कि उस ज्योतिषी की बात सही निकल गई और माँ चल बसी पर मुझे सन्तोष है कि जाने से पहले तो उसको पता चल गया कि उसकी बात मान ली गई काफी हद तक।

मानव वही सच्चा, सही और विवेकी जो विपरीत परिस्थिति मे भी नहीं डिगे और समाधान खोज ले, सही रास्ता निकाल ले।

× × ×

वर्ष बीतते गये। हम सब भाई भी बड हो गये और हमारी शादियाँ हा गईं। हम अच्छे पदो पर अपने-अपने स्थानो पर कार्यरत थे। बहिन शारदा की भी शादी अच्छे घराने मे हो गई थी। केवल छोटी बहन शोभा अभी पढ रही थी। पिताजी को सन् 1955-56 से ही ब्लड प्रेशर की बीमारी हो गई थी और मेरे बडे भाई के मित्र डॉक्टर ही देख इलाज कर देते थे। सन् 1972 के अन्त म अचानक पिताजी काफी बीमार हो गये, उनकी बेहोशी की सी ही हालत रहने लगी। मेरे से बडे भाई डॉक्टर महावीर और मैं दोना जयपुर में ही थे। डॉक्टर महावीर बीकानेर गये और उन्होने वहाँ डॉक्टरो से बात की तो डॉक्टरों ने गुर्दे के फेल होने की बात बताई। वे फिर वापस जयपुर आ गये। फिर हम दोनो दिसम्बर, 1972 के अन्तिम सप्ताह म बीकानेर गये अवकाश लेकर। पिताजी बेहाशी की सी हालत म थे। अचानक डॉ० महावीर के दिमाग मे आया कि पिताजी को कहीं सोडियम-पोटेशियम इम्बैलेंस नहीं हो गया हो, ब्लड प्रेशर की दवाइयो के कारण। उन्होंने इसका टेस्ट कराने की सोची। बीकानेर के बडे अस्पताल मे यह टेस्ट नहीं होता था यह पता लगने पर वे सोच मे पड गये। उन्होने सोचा कि नया वैटरनरी कॉलेज बीकानेर मे है क्यों नहीं वहाँ भी प्रयत्न किया जाय। वहाँ के मुखिया डॉ० मोहनसिह से हमारे परिवार का अच्छा खास रिश्ता था। वहाँ वह टैस्ट हो गया और वही बात निकली कि सोडियम-पोटिशियम इम्बैलेंस है। डॉ० महावीर ने झट घर पर ही पिताजी को ड्रिप लगा दी और उसमे पोटेशियम भी डाल दिया। यह दिसम्बर 1972 के अन्तिम दिनों की बात है या वष 1973 की 1-2 जनवरी की। उसी दिन पिताजी के करीबी मित्र वैद्य व ज्योतिषी कृष्णकान्त जी हमारे घर पर आये। उन्हाने पिताजी को देखा, वे तो बेहोश ही थे। बाहर आकर मेरी माता से बोले कि मदन की माँ सब ठीक हो जायेगा पर मकर सक्राति का पहला दिन सुबह 12 बजे तक भारी है। अगर वह समय निकल गया तो इन्हें झमले से पटक देना कुछ भी नहीं होगा। उन्होने इस समस्या के निदान के लिये टोटका भी बताया जिससे कष्ट दूर हो सके। उन्होने बताया कि उस दिन सुबह अमुक-अमुक सामान एक महा ब्राह्मण को दे देना और उससे कहना वह सीधा चला जाये और वापिस पीछे मुड कर न देखे। यह कहकर वे वापिस चले गये। मकर सक्राति हमेशा 14 जनवरी को आती है और इस प्रकार 13 जनवरी का पूर्वाह्न पिताजी के लिये भारी था। मेरी माताजी ने झट अगले दिन टोटके का सामान मँगा लिया और डकौत को भी तय कर लिया।

प० कृष्णकान्त जी मारकेस की दशा को पहचानने के लिये जाने जाते थे। मरे दिमाग मे मेरी दादी की 20-22 वर्ष पूर्व की मौत की घटना दौड गई जब इन्हीं पण्डित जी ने उनको वह दिन भारी बताया था।

हमारा छोटा भाई गोपाल तो जनवरी के शुरू मे ही आ गया था, मेरे बडे चाचाजी श्री चन्द्रप्रकाश जी सीकर से आ गये थे पर मेरे बडे भाई मदनमोहन दिल्ली से नहीं आये थे। उनके घुटने मे भी कुछ समस्या चल रही थी। दो तीन दिन तक ड्रिप देने पर पिताजी को होश आ गया था पर फिर भी मैंने बडे भई मदनमोहन से कहा कि भाई साहब प० कृष्णकात जी का मौत के बारे मे कहा सच हो जाता है इसलिये एक बार अवश्य आ जाओ। फिर वे 7-8 जनवरी को बीकानेर आ गये। पिताजी को तब तक अच्छी तरह से होश आ गया था। हम सबने राहत की साँस ली। में और डॉ० महावीर 14 जनवरी तक छुट्टी लेकर आये ही थे।

पिताजी एक-दो दिन म ही भले चगे नजर आने लगे। निवृत्त होने बाहर टायलेट मे जाते और अपने आप नहाते। सुबह नाश्ता जल्दी कर थोडा आराम जरूर करते व फिर दिन में भी आराम करते। पर बैठक मे भी बैठकर बाते कर लेते थे।

12 जनवरी, 1973 की रात को खूब हँसी मजाक हो रहा था। उससे पहले हमने हमारी बहन शारदा व पिताजी के भाई बहनो को तार दे दिया था कि पिताजी अब भले चगे हैं और बीमारी के कारण आने की जरूरत नहीं है। हम भाई भी वापिस जाने की तैयारी मे थे।

पिताजी भले चगे थे फिर भी मेरी माताजी उस रात को टोटके का सामान सुव्यवस्थित कर रही थी जिसका कोई मजाक सा भी कर रहा था। हम सब आपस मे तो हसी मजाक कर ही रहे थे। रात को फिर सोने मे देर हो गई। देर से सोने के कारण मैं सुबह करीब आठ साढे आठ बजे उठा। पिताजी उसी कमरे मे सोते थे। मैंने उठकर पिताजी से पूछा कि आप कैसे लेटे हुए हैं। वे बोले कि मैंने तो नाश्ता कर लिया और अब थोडा आराम कर रहा हूँ। फिर उन्होने कहा कि देख महावीर कहाँ है। मैंने कहा कि अभी देखता हूँ। मैं कमरे से चौक मे गया और देखा कि मेरी माताजी रसोई मे नाश्ता-खाना बना रही है। स्नानघर में कोई था तो पता लगा कि मेरे चाचाजी चन्द्रप्रकाश जी नहा रहे हैं। महावीर भाई साहब नहीं मिले तो पूछने पर मुझे बताया गया कि वे बाहर टायलेट मे गये हुए हैं। मैंने वापिस आकर पिताजी को कहा कि महावीर भाई साहब तो निवृत्त होने गये हुए हैं, क्या कोई परेशानी है। वे कहने लगे कि ऐसा तो कुछ नहीं है पर मुझे उल्टी सी आ रही थी। इतना कहने पर झट उनकी गर्दन एक तरफ हो गई। मैं अवाक् रह गया। झट दौडा और मेरी माताजी व अन्य सबको कहा कि पिताजी को कुछ हो गया है। बाहर जाकर मैंने महावीर भाई साहब से कहा कि पिताजी को कुछ हो गया है आप झट आओ। वे झट बाहर आये और अन्दर दौडे। पिताजी के तो प्राण पखरू उड चुके थे। डॉ० महावीर ने झट अपने ब्रीफ केस से इन्जेक्शन—शायद कोरामिन का—निकाला और लगाया। उनके हाथ तो उस समय काँप रहे थे। कोई कुछ नहीं कर सका। टाटके का सामान ऐसे ही पडा रह गया। प० कृष्णकात का कहना सत्य हआ और पिताजी उसी दिन

13 जनवरी, 1973 को प्रात चल बसे। ऐसी सहज मौत बिना दर्द के बिरलों को ही मिलती है और उन्हीं को जो सच्चे व धार्मिक इन्सान होते हैं मेरे पिताजी की तरह।

राजाना की भाँति चलते वातावरण में सब ओर हाहाकर मच गया। कोई सोच भी नहीं पाया, न कुछ कर सका जबकि थोडी देर पहले सब सामान्य था यहाँ तक कि मेरी माताजी खाना बनाने मे लगी थी। पर अब तो सब और रोने की आवाजे आने लगीं। पिताजी का—उनके निर्जीव शरीर का—फिर दाह सस्कार कर दिया गया और हरिद्वार मे उनकी अस्थियाँ विसर्जित कर दी गईं। पिताजी की अस्थियाँ लेकर मेरे सबसे बडे भाई मदन गये थे। उन्होने हरिद्वार मे हमारे परिवार के पडे की तलाश की। बीकानेर शहर के नाम से व अग्रवाल परिवार के नाम से तो पडा नहीं मिला। पर जब हमारा पैतृक गाँव मण्डावर, जिला बिजनौर, उत्तरप्रदेश व राजवशी परिवार बताया तो अन्तत पडा हनुमान घाट पर मिला। पडा साढे पाँच भाईयो वाला कहलाता था और हमारा परिवार राजाशाही परिवार। हम असल में राजवशी परिवार के हैं जो अग्रवाल ही हैं और राजस्थान में आने पर यहाँ के हिसाब से अग्रवाल लिखने लग गये थे। पडे के पास हमारे पितरो का पूरा लेखा-जोखा मिल गया। हमारे भाई पिताजी की अस्थियाँ हरिद्वार में विधिपूर्वक विसर्जित कर फिर वापिस बीकानेर लौट आये।

तेरहवीं के बाद सब लोग अपनी-अपनी जगह चले गये। उस घर मे रह गये तो मेरी माता, छोटी बहन शोभा और मैं। मैंने अपनी छुट्टी बढा ली थी और मैंने ही सारे कागज़, किताबो आदि को देख-देखकर एक-एक का निबटारा किया। किसी भाई को तो वहाँ रहकर यह काम करना ही था। मुझे आज भी तेंतीस वर्ष बाद भी वह सब कुछ याद है और में आज भी—अभी लिखते हुए—उसको याद कर रो पडता हूँ। यह सब जीवन लीला है। मेरी छोटी बहन शोभा व मेरी माता फिर जयपुर मे मेरे छोटे भाई गोपाल के पास, फिर कभी मेरे पास व मेरे अन्य भाईयो के पास आ जाती थी। शोभा की शादी फिर हो गई। बीस वर्ष तक मेरी माता फिर हम भाईया के पास, कभी यहाँ कभी वहाँ, रहती रही। मेरे पास काफी रही और 1993 मे उनकी जीवन लीला भी समाप्त हो गई जब वे जयपुर मे ही थी।

जो जन्मा है उसकी मृत्यु तो निश्चित है। जीवन अल्प है, उसका जो सदुपयोग कर ले वही सच्चा इन्सान है। सन्तोषी बनो पर आगे बढो, धन भी कमाओ पर दिल भी रखो। धनी हो तो परिवार वालो की ही नहीं दूसरे की भी, विशेषकर कमजोर वर्ग की उनकी आवश्यकता को ध्यान मे रखते हुए, यथासम्भव सहायता करो जैसे मेरे पिताजी व दादाजी कम धन होने पर भी करते थे, वे दिल के धनी जो ठहरे। ऐसे ही उच्च आदर्श रखो, आगे बढो नहीं तो जीवन लीला ऐसे ही समाप्त हो जायेगी। धन होने पर परिवार के अन्य सदस्यो की सहायता नहीं करोगे तो अगली पीढी म तो परिवार मे ही धनी और गरीब के वर्ग चन जायगे। धन तो जरूरतमन्द को देने से ही फलता है, दूसरों की पढाई पर भी खर्च करे। ईश्वर सबको सद्बुद्धि देवे।

रिसते-रिश्ते

साठोत्तर वर्षो म जीवन म आये परिवर्तन की तीव्रता ने मानव-सम्बन्धा को नय पैमाने से नापने ओर सँवारने-नकारने के लिए प्ररित ही नहीं विवश भी कर दिया है। आज हम जिस सामाजिक परिवेश म रह रहे हें या रहने के लिए अभिशप्त हें, वह हम मूल्यहानता आर सवदन-शून्यता की ओर ले जा रहा है। करुणा, सहृदयता, आत्मीयता और परहितचितना जेसे मूल्यो का स्थान घृणा, विद्वष, स्वार्थ, धनलालुपता और सकीर्णता ने ले लिया हे। परिणामत मानवीय सम्बन्धा की ऊप्मा समाप्त होती जा रही ह। चारा तरफ आपाधापी आर अवसरवादिता का माहोल हे। कोई सहृदय चितक इस स्थिति को उपेक्षित करके कैसे साँस ले सकता है ? श्री प्रेमचद अग्रवाल ने इसी परिवेश का देखा-अनुभवा आर आस-पास फैले, बनते-बिगडते और 'रिसते हुए रिश्ता' की प्रामाणिक और यथार्थ पहचान कराने वाली ये कहानियाँ प्रस्तुत की हैं। आशा है इन कहानियो से यानित होकर आप चौकग जरूर, पर आनन्दित भी होगे।